तरुण छत्तीसगढ़

आम आदमी का अपना दैनिक अखबार

E-mail:
tarunpressraipur@gmail.com
tarun_press@yahoo.co.in

Web:
www.tarunchhattisgarh.in
facebook.TarunChhattisgarh
phone: 0771-2543112

■ रायपुर,मंगलवार 25 अगस्त 2026 ■ श्रावण शुक्ल पक्ष-13 ■ वर्ष -42 ■ अंक-146 ■ पृष्ठ 8 ■ डाक संस्करण 26 अगस्त 2026 ■ मूल्य-2.00 रुपये

राम रहीम फिर जेल से बाहर

नई दिल्ली,25 अगस्त। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को 21 दिन की फरलो मिली है। फरलो के दौरान वह सिरसा स्थित डेरा मुख्यालय में रहेंगे। यह 17वीं बार है जब राम रहीम जेल से बाहर आएंगे। फिलहाल वह रोहतक की सुनारिया जेल में बंद हैं। राम रहीम को अगस्त 2017 में दुष्कर्म के मामले में दोषी ठहराया गया था और 20 साल की जेल की सजा सुनाई गई थी। इससे पहले मई में उन्हें 30 दिन और जनवरी में 40 दिन की पैरोल मिली थी।

'हिजाब इस्लामिक आस्था का जरूरी हिस्सा नहीं': हाईकोर्ट

इलाहाबाद,25 अगस्त। हाईकोर्ट ने स्कूल में यूनिफार्म के साथ हिजाब (हेड स्कार्फ) पहनकर प्रवेश की अनुमति मांगने वाली याचिका खारिज कर दी है। कोर्ट ने कहा कि विभिन्न उच्च न्यायालयों की भी यही राय रही है कि हिजाब पहनना इस्लामिक आस्था का अनिवार्य हिस्सा नहीं है, जिसके बिना वह अपने धर्म से बाहर हो जाएं। हाईकोर्ट ने कहा कि जब तक किसी शैक्षणिक संस्थान की यूनिफार्म नीति निष्पक्ष, गैर-भेदभावपूर्ण और अनुशासन बनाए रखने के लिए लागू की गई है, तब तक संस्थान के ड्रेस कोड का पालन करना अनिवार्य है। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर व न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की खंडपीठ ने एक छात्रा की याचिका पर दिया है।

ट्रक से 2 करोड़ का गांजा जब्त

गरियाबंद,25 अगस्त। गरियाबंद के खुटगांव अंतरराज्यीय चेक पोस्ट पर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए ट्रक से 400 किलो गांजा बरामद किया है। इसकी कीमत करीब 2 करोड़ रुपए बताई जा रही है। गांजा ट्रक की छत पर काले तिरपाल के नीचे छिपाकर ओडिशा से महाराष्ट्र ले जाया जा रहा था। जांच के दौरान पुलिस को पैकेट दिखाई दिए और तलाशी में पूरा खेल सामने आ गया। पुलिस ने ट्रक में सवार दो आरोपियों के साथ पायलटिंग कर रही बाइक पर सवार दो लोगों को पकड़ा। पूछताछ के बाद ओडिशा से गांजा सप्लाई करने वाले एक आरोपी को भी गिरफ्तार किया गया। कुल 5 आरोपी पुलिस की गिरफ्त में आए हैं। कार्रवाई में गांजे के अलावा करीब 20 लाख रुपए का आयशर वाहन, बाइक, 3 मोबाइल और 6.50 लाख रुपए नकद भी जब्त किए गए हैं। सभी के खिलाफ NDPS एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

सायोनी घोष, यूसुफ पठान समेत सारे बागियों को सुको का नोटिस

नई दिल्ली,25 अगस्त। बंगाल में टीएमसी की करारी हार के बाद पार्टी छोड़कर एनसीपीआई का दामन थामने वाले सांसदों को सुप्रीम कोर्ट ने नोटिस जारी किया है। अभिषेक बनर्जी ने सुप्रीम कोर्ट का रुख करते हुए मांग की थी कि लोकसभा अध्यक्ष को 20 बागी सांसदों को अयोग्य ठहराने को लेकर जल्द फैसला करने का अनुरोध किया था। सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी मोहना की बेंच ने बागी सांसदों से अपना जवाब देने को कहा है।

डीआरडीओ की मिसाइल तकनीक भारतीय कंपनियों को मिलेगी, राजनाथ सिंह ने दी मंजूरी

नई दिल्ली, 25 अगस्त। रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति देने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने डीआरडीओ द्वारा विकसित सभी पारंपरिक मिसाइल प्रणालियों की तकनीक भारतीय रक्षा कंपनियों को हस्तांतरित करने की मंजूरी दे दी है। इससे इन मिसाइल प्रणालियों का देश में ही बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव होगा और रक्षा क्षेत्र में घरेलू विनिर्माण क्षमता मजबूत होगी। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, तकनीक हस्तांतरण के बाद पात्र भारतीय कंपनियां डीआरडीओ द्वारा विकसित पारंपरिक मिसाइल प्रणालियों का उत्पादन कर सकेंगी। इसके लिए कंपनियों को निर्धारित योग्यता, प्रमाणन और नियामकीय आवश्यकताओं को पूरा करना होगा। मंत्रालय ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य मिसाइल प्रणालियों को विकास चरण से औद्योगिक स्तर के उत्पादन तक तेजी से पहुंचाना है। इससे आयात पर निर्भरता कम होगी और घरेलू रक्षा औद्योगिक आधार मजबूत होगा। साथ ही रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में भारतीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों तथा अन्य तकनीकी भागीदारों की भागीदारी बढ़ेगी।

मंत्रालय के मुताबिक तकनीक हस्तांतरण से देश में रक्षा उपकरणों के उत्पादन में स्थानीय मूल्यवर्धन बढ़ेगा। इससे भारतीय रक्षा विनिर्माण क्षेत्र को गति मिलने के साथ महत्वपूर्ण हथियार प्रणालियों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह फैसला ऐसे समय लिया गया है, जब आधुनिक सैन्य अभियानों में मिसाइल प्रणालियों के साथ निगरानी, संचार और सटीक हमले की क्षमताओं का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। मंत्रालय का मानना है कि घरेलू उत्पादन क्षमता बढ़ने से भारत अपनी रणनीतिक जरूरतों के लिए विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम कर सकेगा। रक्षा मंत्रालय ने इसे आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताते हुए कहा कि इससे घरेलू रक्षा उद्योग, तकनीकी साझेदारों और एमएसएमई के लिए नए अवसर पैदा होंगे।

थानों के सीसीटीवी फुटेज को लेकर हाईकोर्ट सख्त

18 महीने की रिकॉर्डिंग सुरक्षित रखने का आदेश; लापरवाही पर तय होगी जवाबदेही

बिलासपुर,25 अगस्त। हाईकोर्ट ने थानों में सीसीटीवी व्यवस्था की नियमित मॉनिटरिंग, पर्याप्त स्टोरेज और पावर बैकअप सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार और पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। कोर्ट ने कहा कि किसी भी प्रशासनिक या तकनीकी लापरवाही के कारण इलेक्ट्रॉनिक सबूत नष्ट नहीं होना चाहिए। ऐसा होने पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय कर कार्रवाई की जाए।

बता दें कि सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के अनुसार कम से कम 18 महीने तक फुटेज सुरक्षित रखना जरूरी है। जिले सहित प्रदेश के थानों में यह व्यवस्था सही करने के लिए हाईकोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन का शत-प्रतिशत पालन सुनिश्चित करने को कहा है। जीपीएम के गौरेला थाने में नशे के कारोबार के मामले में आरोपी बनवारी लाल गुप्ता समेत चार आरोपियों ने हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। आरोपियों का दावा था कि घटना से एक दिन पहले ही पुलिस ने उन्हें थाने में बिठा लिया था। अपने दावे की पुष्टि के लिए उन्होंने 13 से 15 सितंबर 2024 के बीच की थाने की सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल सीडीआर और टावर लोकेशन उपलब्ध कराने की मांग की। ट्रायल कोर्ट में पुलिस ने बताया कि 18 महीने की स्टोरेज अवधि पूरी होने के कारण संबंधित सीसीटीवी फुटेज सिस्टम से ऑटोमेटिक डिलीट हो चुके हैं।आरोपियों की याचिका पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि पुलिस थानों में सीसीटीवी कैमरे लगाने का उद्देश्य व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करना है। साथ ही, इससे नागरिकों के अधिकारों की भी रक्षा होती है। रिकॉर्ड देखने के बाद हाईकोर्ट ने कहा कि फुटेज उपलब्ध ही नहीं हैं, तो उन्हें प्रस्तुत करने का आदेश नहीं दिया जा सकता। इसके साथ ही कोर्ट ने आरोपियों की याचिका खारिज कर दी। राज्य सरकार की ओर से कोर्ट को बताया गया कि प्रदेश के 550 थानों में सीसीटीवी इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए 102.10 करोड़ रुपये की परियोजना पर काम चल रहा है। जिला स्तरीय निगरानी समितियां हर महीने थानों के सीसीटीवी सिस्टम की जांच करेंगी।

देवपहरी जलप्रपात के टापू में 3 दोस्त फंसे

कोरबा,25 अगस्त। छत्तीसगढ़ में सक्रिय मानसून के चलते कई इलाकों में बारिश का दौर जारी है और नदियां उफान पर हैं. इस बीच जलप्रपातों की खूबसूरती लोगों को अपनी ओर आकर्षित

कर रही है, लेकिन चेतावनियों की अनदेखी जान पर भारी भी पड़ रही है. कोरबा के प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट देवपहरी जलप्रपात में आए तीन युवक अचानक जलस्तर बढ़ने से टापू में फंस गए.जानकारी के मुताबिक, लगातार हुई झमाझम बारिश के चलते हसदेव नदी उफान पर है. गुरमा श्यांग गांव के रहने वाले तीन युवक-धनेश्वर सारथी, घनश्याम महंत और सूरज सारथी सोमवार को घूमने के लिए देवपहरी पहुंचे थे. बताया जा रहा है कि फोटो खिंचाने के लिए वे नदी के बीच बने टापू तक गए थे. इसी दौरान हसदेव नदी का जलस्तर अचानक बढ़ गया और तीनों वहां फंस गए. युवकों ने टापू के बीच बनी छतरी में रातभर शरण ली. उन्होंने रेस्क्यू टीम से वीडियो कॉल के जरिए संपर्क किया और अपने परिजनों को भी घटना की जानकारी दी, जिसके बाद पुलिस को सूचना मिली. घटना की सूचना मिलते ही लेमरू थाना प्रभारी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे. SDRF की टीम ने ग्रामीणों के साथ मिलकर रातभर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया, लेकिन अंधेरा होने और लगातार बढ़ते जलस्तर के कारण रेस्क्यू में काफी परेशानी हुई. कोरबा एसपी सिद्धार्थ तिवारी ने बताया कि सूचना मिलते ही लेमरू थाना प्रभारी को मौके पर भेजा गया और SDRF की टीम को बुलाया गया. रातभर रेस्क्यू अभियान चलाया गया, लेकिन जलस्तर कम नहीं होने के कारण तीनों युवकों को अब तक सुरक्षित बाहर नहीं निकाला जा सका है. मंगलवार सुबह दोबारा रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया है. फिलहाल तीनों युवक टापू पर सुरक्षित बताए जा रहे हैं और पुलिस-एसडीआरएफ की टीम उन्हें बाहर निकालने के प्रयास में जुटी है.

तरुण तेजपाल को सुप्रीम कोर्ट से झटका

नई दिल्ली,25 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को 'तहलका' के पूर्व एडिटर तरुण तेजपाल की उस अर्ज़ी को खारिज कर दिया, जिसमें उन्होंने 2013 के यौन उत्पीड़न मामले में अपनी सज़ा और 10 साल की जेल की सज़ा के खिलाफ अपील पर सुनवाई होने तक सरेंडर करने से छूट मांगी थी।

कोर्ट ने उन्हें दो हफ़्ते के अंदर सरेंडर करने का आदेश दिया। जस्टिस आलोक अराधे ने तेजपाल की सरेंडर से छूट की अर्ज़ी खारिज कर दी और उन्हें सरेंडर सर्टिफिकेट जमा करने का निर्देश दिया।

जंगल में हथियारों का बड़ा जखीरा बरामद

कांकेर,25 अगस्त। छत्तीसगढ़ के कांकेर में नक्सल उन्मूलन अभियान के दौरान सुरक्षाबल के जवानों को बड़ी सफलता मिली है. मोरखण्ड़ी जंगल में जमीन के नीचे छिपाकर रखे हथियारों का जखीरा बरामद किया गया है. बीएसएफ, जिला बल और बीडीएस की संयुक्त टीम ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया है. कांकेर के नक्सल प्रभावित सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा बलों का संयुक्त सर्चिंग अभियान लगातार जारी है. इसी कड़ी में 24 अगस्त को छोटेबेठिया थाना क्षेत्र के ग्राम मोरखण्डी के जंगल-पहाड़ी इलाके में जवानों ने सर्चिंग के दौरान संदिग्ध स्थान की जांच की. इस दौरान सुरक्षा बलों को नक्सलियों का बड़ा डंप मिला. जवानों ने डंप की तलाशी ली तो उसमें हथियार समेत बड़ी मात्रा में नक्सली सामग्री बरामद हुई. सुरक्षा के मद्देनजर मौके पर बीडीएस (बम डिस्पोजल स्क्वॉड) की टीम भी मौजूद रही. सुरक्षा बलों ने नक्सली डंप बरामद करने को अभियान में महत्वपूर्ण सफलता बताया है. सर्चिंग अभियान के बाद सभी जवान सुरक्षित कैंप लौट गए. पुलिस ने बताया कि क्षेत्र में शांति और सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए सुरक्षा बलों का सघन सर्चिंग अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा.

सिर्फ संदेह के आधार पर किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता

बिलासपुर,25अगस्त। छत्तीसगढ़ बिलासपुर हाई कोर्ट ने हत्या के एक मामले में निचली अदालत द्वारा दी गई आजीवन कारावास की सजा को रद्द कर दिया है। कोर्ट ने आरोपी को बरी करते हुए कहा कि सिर्फ संदेह के आधार पर किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। कोर्ट ने माना कि इस मामले में अभियोजन पक्ष आरोपी के खिलाफ अपराध साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत पेश नहीं कर सका। छत्तीसगढ़ जांजगीर-चांपा जिले के खोखसा खार के 70 वर्षीय बंशी यादव और उसके बेटे देवप्रकाश यादव के खिलाफ पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज किया था। आरोप था कि सितंबर 2014 में दोनों ने मिलकर लकड़ी के डंडे से मुकेश यादव पर हमला किया था। हमले में मुकेश की मौत हो गई थी। इसके बाद शव को रेलवे लाइन के पास तालाब में फेंक दिया गया था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मुकेश की मौत का कारण सिर में चोट लगने से हुआ सदमा

और ज्यादा खून बहना बताया गया था। पुलिस की जांच और चार्जशीट के आधार पर जांजगीर-चांपा के तीसरे अपर सत्र न्यायाधीश के कोर्ट ने बंशी यादव को दोषमुक्त कर दिया, बेटे देवप्रकाश यादव को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। निचली अदालत के फैसले को चुनौती देते हुए देव प्रकाश ने अधिवक्ता प्रियंका शुक्ला के माध्यम से छत्तीसगढ़ बिलासपुर हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। हाई कोर्ट ने मामले में दोनों पक्षों की दलीलें सुनीं। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने पाया कि हत्या की घटना का कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं था। मृतक के परिजनों ने सिर्फ यह आशंका जताई थी कि मुकेश आरोपी के घर गया था और वहां से वापस नहीं लौटा। किसी भी गवाह ने आरोपी को हत्या करते हुए नहीं देखा था। हाई कोर्ट ने कहा कि सिर्फ अनुमान और आशंका के आधार पर किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जस्टिस संजय के. अग्रवाल और जस्टिस राधाकिशन अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने निचली अदालत के फैसले को रद्द करते हुए देवप्रकाश को धारा 302 और 201 के आरोपों से बरी कर दिया।

साधु के भेष में गांजा की तस्करी का भंडाफोड़

बिलासपुर,25 अगस्त। वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त सौरभ कुमार के निर्देशन में गठित विशेष टास्क टीम ने कटनी रेल मार्ग स्थित निगौरा रेलवे स्टेशन पर साधु का भेष धारण कर गांजा तस्करी कर रहे दो अंतरराज्यीय तस्करों को दबोच लिया। आरोपियों के कब्जे से करीब 7.77 लाख रुपये मूल्य का 15.540 किलोग्राम उच्च गुणवत्ता वाला गांजा बरामद किया गया है। घटना रात लगभग 1 बजे की है, जब सहायक उप निरीक्षक अमरेंद्र सिंह के नेतृत्व में आरपीएफ की टास्क टीम निगौरा स्टेशन के सर्कुलेटिंग एरिया में गश्त और संदिग्धों की जांच कर रही थी। इसी दौरान भगवा कपड़ों में साधु का भेष धरे दो व्यक्तियों की संदिग्ध गतिविधियों पर जवानों की नजर पड़ी। जब टीम ने उनसे

पूछताछ की और उनके पास रखी कपड़ों की पोटलियों की तलाशी ली, तो उसमें से भारी मात्रा में पैकेटबंद गांजा बरामद हुआ। आरपीएफ की पूछताछ में पकड़े गए आरोपियों की पहचान पंजाब के संगरूर जिले के रहने वाले हंसा नाथ (40 वर्ष) और मनता नाथ उर्फ लंबू (39 वर्ष) के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान हंसा नाथ की पोटली से 7.280 किलोग्राम और मनता नाथ के पास से 8.260 किलोग्राम गांजा जब्त किया गया। आरपीएफ ने दोनों तस्करों को बरामद माल सहित कानूनी कार्रवाई के लिए जैतहरी पुलिस स्टेशन को सौंप दिया है। पुलिस ने धारा 8/20(ख) के तहत अपराध दर्ज कर नेटवर्क की पड़ताल शुरू कर दी है।

जाति जनगणना को लेकर खड़गे-राहुल ने मोदी को लिखा पत्र

नई दिल्ली,25 अगस्त। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संयुक्त रूप से पत्र लिखकर जाति जनगणना की मौजूदा प्रक्रिया पर गंभीर चिंता जताई है। उन्होंने मांग की है कि मौजूदा ओपन-एंडेड प्रश्नावली (जिसमें कोई तय विकल्प नहीं होते) की जगह एक ऐसी प्रश्नावली का इस्तेमाल किया जाए जो सत्यापित जाति सूची पर आधारित हो, जैसा कि बिहार और तेलंगाना में अपनाए गए मॉडल में किया गया था। खड़गे ने 'X' पर एक पोस्ट में तर्क दिया कि ओपन-एंडेड सवालों से जातियों की सटीक गिनती नहीं हो पाएगी और इससे एक ही जाति को अलग-अलग नामों और उप-जातियों के तहत दर्ज किए जाने का जोखिम रहेगा। खड़गे ने लिखा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और मैंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को एक संयुक्त पत्र लिखकर जाति जनगणना की मौजूदा प्रक्रिया पर गंभीर चिंता जताई है।

NSUI की नई कार्यकारिणी पर हाईकमान ने लगाई रोक

बिलासपुर,25 अगस्त. आलाकमान द्वारा प्रदेश स्तर पर नई कार्यकारिणी के गठन और हाल ही में की गई तमाम नई नियुक्तियों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी गई है। इसके साथ ही प्रशासनिक लचरता और निष्क्रियता का हवाला देते हुए बिलासपुर के एनएसयूआई जिलाध्यक्ष रंजीत सिंह और उनके कई करीबी साथियों को एक ही झटके में पदमुक्त कर बेदखल कर दिया गया है। अचानक हुई इस बड़ी कार्रवाई के बाद से ही पूरी पार्टी के भीतर सुगबुगाहट और कयासबाज़ी का दौर चरम पर पहुंच गया है।

राजनीतिक गलियारों के सूत्रों की मानें तो इस पूरे बवंडर की असली वजह पाटन विधानसभा क्षेत्र में की गई हालिया विवादित नियुक्तियां थीं। आरोप है कि प्रदेश एनएसयूआई अध्यक्ष नीरज पांडेय ने पाटन की नियुक्तियों को ढाल बनाकर कई महत्वपूर्ण और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली जिलों के प्रमुखों पर ताबड़तोड़ कार्रवाई की और उन्हें पद से हटा दिया। संगठन के अंदरूनी लोगों द्वारा यह गंभीर आरोप लगाया जा रहा है कि इन सांगठनिक फेरबदल और बदलावों के पीछे का असली मकसद आगामी यूथ कांग्रेस चुनाव में पार्टी के एक खास ताकतवर गुट को सीधा और अनुचित राजनीतिक लाभ पहुंचाना था। हालांकि, इस तरह के जोड़-तोड़ और गुटीय समीकरण साधने के दावों की अब तक कोई आधिकारिक या स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है। लेकिन कार्यकारिणी को अचानक भंग किए जाने से पूरी चुनाव प्रक्रिया की पारदर्शिता और भावी रणनीति को लेकर तीखे सवाल खड़े होने लगे हैं।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस के दो दिग्गज नेताओं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और प्रखर युवा नेता विधायक देवेंद्र यादव के खेमों के बीच चल रही कथित राजनीतिक खींचतान को भी इस पूरे घटनाक्रम की मुख्य वजह माना जा रहा है। यूथ कांग्रेस के चुनावी दंगल पर अपना वर्चस्व कायम करने के लिए दोनों ही दिग्गजों के समर्थक जी-तोड़ आजमाइश कर रहे हैं। ऐसे में एनएसयूआई की नियुक्तियों पर अचानक रोक लगना और जिलाध्यक्षों की छुट्टी होना, सीधा इस अंतरकलह से जोड़कर देखा जा रहा है। दोनों गुटों के बीच सत्ता और प्रभाव की इस शह-मात के खेल में युवा नेताओं की बलि दिए जाने की चर्चा जोर पकड़ चुकी है, जिससे आम कार्यकर्ताओं का मनोबल भी डगमगाने लगा है। संगठन के भीतर उपज रहे इस भारी असंतोष, अफवाहों और गुटीय खींचतान के बीच पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने आगे आकर स्थिति को संभालने का प्रयास किया है। पूरे घटनाक्रम पर संगठन का पक्ष रखते हुए प्रदेश एनएसयूआई के उपाध्यक्ष शशांक मिश्रा ने मीडिया को दिए अपने बयान में कहा कि इसे पार्टी की किसी भी तरह की अंदरूनी कलह या राजनीतिक उठापटक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। शशांक मिश्रा ने स्पष्ट किया कि यूथ कांग्रेस के आगामी निष्पक्ष और पारदर्शी चुनावों को दृष्टिगत रखते हुए ही फिलहाल नई कार्यकारिणी की नियुक्तियों पर अस्थायी रूप से रोक लगाई गई है। उन्होंने पूरी उम्मीद जताते हुए कहा कि यूथ कांग्रेस के चुनाव संपन्न होते ही जल्द ही संगठन में नई नियुक्तियों का रास्ता साफ हो जाएगा, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से एक नया, ऊर्जावान और समर्पित युवा नेतृत्व पार्टी के सामने आएगा। उन्होंने भरोसा दिलाया कि आने वाले समय में योग्य और संघर्षशील युवा साथियों को संगठन में नई व महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी जाएंगी।

फर्जी आईपीएस बनकर किया डिजिटल अरेस्ट, 35 लाख ठगने की थी तैयारी

बिलासपुर,25 अगस्त. डिजिटल अरेस्ट के नाम पर 68 वर्षीय रिटायर कर्मचारी से 35 लाख रुपए ठगने की कोशिश को पुलिस ने समय रहते नाकाम कर दिया है। फ्रॉड ने खुद को आईपीएस अधिकारी सुनील कुमार गौतम बताते हुए रिटायर कर्मचारी कोा मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में फंसने का डर दिखाया और बुजुर्ग को डिजिटल अरेस्ट कर लिया। इसके बाद अलग-अलग बैंक खातों में जमा रकम को एक खाते में ट्रांसफर करा लिया। फ्रॉड वीडियो मीटिंग के जरिए पूरी रकम निकालने की तैयारी कर रहे थे। इसी दौरान रिटायर कर्मचारी के मित्र ने एसएसपी रजनेश सिंह को सूचना दी। एसएसपी के निर्देश पर सरकंडा टीआई प्रदीप आर्य व उनकी टीम तत्काल मौके पर पहुंची और रिटायर कर्मचारी को ठगी से बचा लिया। जांच में कॉल करने वाला मोबाइल नंबर फ्रॉड गतिविधियों से जुड़ा मिला। करीब 35 लाख रुपए खाते में सुरक्षित हैं। मामले की रिपोर्ट एनसीसीआरपी पोर्टल पर दर्ज कर तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर जांच की जा रही है।

फसल के तीन दुश्मनः बंदर, बरहा और बेसहारा मवेशी; तारघेरा और रखवाली के फेर में बेहाल अन्नदाता

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

उतई, 25 अगस्त। तेजी से हो रहे भौतिक विकास और कंक्रीट के विस्तार के बीच कृषि भूमि का रकबा लगातार घट रहा है। एक तरफ बढ़ती आबादी के लिए अनाज का संकट गहराने की आशंका है, वहीं दूसरी तरफ जो किसान खेतों में पसीना बहा रहे हैं, उनके सामने फसल बचाना सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। छत्तीसगढ़ में शासन द्वारा धान का समर्थन मूल्य ? 3100 प्रति क्विंटल दिए जाने से किसानों को आर्थिक संबल तो मिला है, लेकिन ज़मीनी स्तर पर बंदर, बरहा (जंगली सूअर) और घूमन्तु मवेशी किसानों की मेहनत पर पानी फेर रहे हैं।

घुमन्तू मवेशी और कांजी हाउस का अभाव

दुर्ग जिले सहित पाटन ब्लाक के आसपास के ग्रामीण अंचलों में बेसहारा पशुओं का आतंक चरम पर है। सैकड़ों की संख्या में घूमने वाले ये मवेशी पलक झपकते ही पूरी फसल चट कर जाते हैं। किसान दिन में रखवाली करता है तो रात में फसल चौपट हो जाती है। गौठान व्यवस्था शुरु होने के बाद भी एक गांव से दुसरे गाँव रात में गाडियो मे भरकर घुमन्तु मवेशियों को छोड़ने से और क्षमता से अधिक जानव गौठान मे होने से गांवों में गौठान व्यवस्था भी बदहाल है।पशुओं के प्रति पशु पालको में लगाव कम होने से और पुरानी कांजी हाउस जैसी ग्रामीण व्यवस्थाओं के बंद होने से यह समस्या विकराल हो गई है।

ग्राम सभाओं के घटते अधिकार से बिगड़ी व्यवस्था

पूर्व में ग्राम सभाओं के पास कड़े फैसले लेने और पशु नियंत्रण के अधिकार थे, जिससे सामाजिक अनुशासन बना रहता था। अब ग्राम सभा के अधिकारों में कमी आने से स्थानीय स्तर पर कड़े निर्णय नहीं हो पा रहे हैं, जिसका सीधा असर ग्रामीण प्रबंधन पर पड़ा है।

सड़कों पर मवेशियों का डेरा, जानलेवा हादसे

खेतों में चरने के बाद मवेशी रात के समय मक्खी-मच्छरों से बचने के लिए डामर की सड़कों पर बैठ जाते हैं। इसके चलते राहगीरों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। रात के अंधेरे में इन मवेशियों से टकराकर आए दिन गंभीर सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं, जिसमें लोग अपनी जान तक गंवा रहे हैं।

बंदर और बरहा की दोहरी मार

जंगलों और पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से बंदरों ने बस्तियों का रुख कर लिया है। घर की बाड़ियों में लगी साग-सब्जियां बंदर और जंगली सूअर (बरहा) नष्ट कर रहे हैं। बंदरों की धमाचौकड़ी से घरों के खपरैल और शेड टूट रहे हैं, जिससे ग्रामीणों पर अतिरिक्त आर्थिक भार पड़ रहा है।

समाधान की दरकार

फसल को बचाने के लिए किसानों को हजारों रुपये खर्च करके खेतों में तारघेरा लगाना पड़ रहा है। यदि शासन स्तर पर गौठानों को किसानों की सहभागिता से दोबारा सक्रिय किया जाए, कांजी हाउस व्यवस्था बहाल हो और वन्यजीवों के प्रबंधन के ठोस कदम उठाए जाएं, तो किसानों की उपज सुरक्षित होगी और किसानों कि अनावश्यक आर्थिक बर्बादी रुकेगी।

महाकाल दर्शन कर लौटे शिवभक्तों का भखारा में आत्मीय स्वागत

अंवरी, 25 अगस्त। भगवान भोलेनाथ के प्रति आस्था और भक्ति से ओतप्रोत कांवरिया श्रद्धालुओं का धार्मिक यात्रा पूर्ण कर भखारा लौटने पर आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। शिवभक्तों ने महादेव घाट से जल लेकर देवबलोदा शंभू में जलाभिषेक किया। इसके पश्चात भोजपुर, भोपाल, सीहोर होते हुए उज्जैन स्थित बाबा महाकाल के दर्शन किए तथा ओंकारेश्वर महादेव के पावन धाम पहुंचकर भगवान शिव की पूजा-अर्चना की।

धार्मिक यात्रा पूर्ण कर भखारा पहुंचने के बाद समस्त कांवरिया श्रद्धालुओं द्वारा नीलकंठ महादेव मंदिर में पुनः जलाभिषेक एवं विधिवत पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान वातावरण भगवान भोलेनाथ के जयकारों से भक्तिमय हो उठा।

एक नजर

सवारी बैठाने पर 10 मालवाहक वाहनों का किया चालान

भिलाई, 25 अगस्त (तछसं.)। भिलाई यातायात पुलिस ने जिले में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने एवं आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में मालवाहक वाहनों में सवारी बैठाकर ले जाने वाले वाहन चालकों पर विशेष निगरानी रखते हुए चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है कुम्हारी और दुर्ग क्षेत्र में विशेष चेकिंग पॉइंट लगाकर मालवाहक वाहनों की जांच की गई। चेकिंग के दौरान माल परिवहन के लिए उपयोग किए जाने वाले वाहनों में सवारी बैठाकर ले जाने वाले वाहन चालकों को रोका गया तथा ऐसे कुल 10 मालवाहक वाहनों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की गई। मालवाहक वाहन सामान एवं सामग्री के परिवहन के लिए निर्धारित होते हैं इन में सवारी बैठाकर ले जाना सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत जोखिमपूर्ण है वाहन के अचानक ब्रेक लगाने, अनियंत्रित होने, पलटने अथवा सड़क दुर्घटना होने की स्थिति में मालवाहक वाहन में बैठे यात्रियों के गंभीर रूप से घायल होने की संभावना रहती है। इसी कारण यातायात पुलिस द्वारा ऐसे वाहनों पर विशेष रूप से कार्यवाही की जा रही है। चेकिंग के दौरान वाहन चालकों को मालवाहक वाहनों में सवारी नहीं बैठाने तथा यातायात नियमों का पालन करने की समझाइश दी गई ।

नहीं सुधरने पर बदमाश के खिलाफ कार्रवाई का आदेश

भिलाई, 25 अगस्त (तछसं.)। भिलाई उतई टीआई मोहन भारद्वाज ने बताया कि बनवाली अग्रवाल (50 साल) निवासी हथखोज पारा उतई के संबंध में सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत प्रतिवेदन में उल्लेख किया गया कि वह थाना उतई क्षेत्र का नामजद गुण्डा बदमाश है तथा वर्ष 2010 से लगातार आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त रहा है आदेश में उपलब्ध आपराधिक अभिलेखों के अनुसार उसके विरुद्ध मादक पदार्थों से संबंधित कुल 4 प्रकरण दर्ज होना उल्लेखित है इन प्रकरणों में अपराध का उल्लेख है। अभिलेख के अनुसार अपराध के प्रकरण में विशेष न्यायालय एनडीपीएस एक्ट दुर्ग ने 13 सितंबर 2017 को आरोपी को 03 वर्ष के सश्रम कारावास एवं 5,000 रुपये अर्थदंड से दंडित किए जाने का उल्लेख है। अपराध के संबंध में आदेश में आरोपी के दोषमुक्त होने का उल्लेख किया गया है अपराध में विशेष न्यायालय एनडीपीएस एक्ट दुर्ग द्वारा 10 अक्टूबर 2025 को निर्णय पारित किए जाने का भी उल्लेख है। सक्षम प्राधिकारी के आदेश में यह भी उल्लेखित है कि पूर्व में जेल से छूटने के बाद भी आरोपी के मादक पदार्थों की खरीद-बिक्री में संलिप्त रहने की जानकारी सामने आती रही तथा उसकी गतिविधियों में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। उपलब्ध प्रतिवेदन, दस्तावेजों एवं साक्षियों के कथनों के परीक्षण के बाद उसके विरुद्ध निरोधात्मक कार्रवाई आवश्यक पाए जाने पर आदेश पारित किया है।

जांच के दौरान 69 प्रकरण दर्ज

भिलाई, 25 अगस्त (तछसं.)। थाना एवं चौकी क्षेत्रों में पुलिस टीमों द्वारा सार्वजनिक स्थलों, बाजार क्षेत्रों, पार्कों, चौक-चौराहों तथा अन्य संवेदनशील स्थानों पर सघन निगरानी एवं चेकिंग की इस कार्रवाई में थाना पुलगांव 19, थाना कुम्हारी 11 प्रकरण, थाना पुरानी भिलाई 08, थाना नंदिनी नगर 08, थाना सुपेला 07, थाना खुर्सीपार 06, थाना जामुल 05, थाना पद्मनाभपुर 04, थाना पाटन 04, थाना नेवई 02, थाना भिलाई नगर 02, थाना धमधा 02, थाना मोहन नगर 02, थाना छावनी 01 व चौकी नगपुरा 01 प्रकरण दर्ज किया है ।

तरीघाट हाई स्कूल में शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने विद्यार्थियों से किया संवाद

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

पाटन,25 अगस्त। स्कूली शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव सोमवार को पाटन विकासखंड अंतर्गत ग्राम तरीघाट स्थित शासकीय हाई एवं हायर सेकेंडरी स्कूल पहुंचे। उन्होंने विद्यालय परिसर का निरीक्षण कर शिक्षकों और विद्यार्थियों से संवाद किया तथा शैक्षणिक गतिविधियों, विद्यार्थियों की उपस्थिति, पाठ्यक्रम की प्रगति और विद्यालय की आवश्यकताओं की जानकारी ली। मंत्री यादव ने विद्यार्थियों से उनकी पढ़ाई, पसंदीदा विषय, रुचियों और भविष्य के लक्ष्य को लेकर बातचीत की। उन्होंने बच्चों को नियमित रूप से स्कूल आने, अनुशासन का पालन करने और मन लगाकर पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि मजबूत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव है। विद्यालय निरीक्षण के

दौरान मंत्री ने शिक्षकों से बच्चों की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए गंभीरता और जिम्मेदारी से कार्य करने को कहा। उन्होंने विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने, पाठ्यक्रम समय पर पूरा करने और प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति पर निरंतर नजर रखने के निर्देश दिए। उन्होंने पढ़ाई के साथ खेलकूद, सांस्कृतिक और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ाने पर भी जोर दिया, ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। विद्यालय के विद्यार्थियों ने मंत्री से खुलकर संवाद करते हुए स्कूल से जुड़ी आवश्यकताओं और समस्याओं की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने प्रार्थना स्थल पर डोम शेड निर्माण और विज्ञान कक्षा के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने की मांग रखी। गजेन्द्र यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश सरकार शासकीय विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण और सर्वसुलभ शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रभावी कदम उठा रही है। इस अवसर पर प्रभारी प्राचार्य रमेश साहू, श्वेता, निशिकांत, मनीष, सोनाली, राखी, अनिता, हेमलता, ओम भारती, उर्वशी सहित विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

श्रावण मास के अंतिम सोमवार को सांसद विजय बघेल ने की भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 25 अगस्त । श्रावण मास के चतुर्थ एवं अंतिम सोमवार के पावन अवसर पर दुर्ग लोकसभा सांसद विजय बघेल ने अपनी धर्मपत्नी रंजनी बघेल एवं पुत्रवधू पल्लवी बघेल के साथ सेक्टर-5 भिलाई स्थित श्री भद्रेश्वर महाकाल शिव मंदिर पहुंचकर भगवान भोलेनाथ की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। मंदिर में पंडित विजय शंकर ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजन कराया। सांसद विजय बघेल एवं उनके परिवार ने भगवान भोलेनाथ का अभिषेक कर देश-प्रदेश की सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर सांसद विजय बघेल ने कहा कि श्रावण मास भगवान शिव की आराधना का पावन अवसर है। भगवान भोलेनाथ सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें और प्रत्येक परिवार में सुख, शांति एवं समृद्धि का वास हो।

रिसाली के तीन वार्डों में ग्रामीण विधायक ने किया 1.73 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का भूमिपूजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रिसाली, 25 अगस्त। नगर निगम रिसाली के श्रमिक बाहुल्य क्षेत्र शिवपारा, बीआरपी कॉलोनी और एचएससीएल कॉलोनी मरोदा में करीब 1 करोड़ 72 लाख 96 हजार रुपये की लागत से विभिन्न विकास कार्य कराए जाएंगे। रविवार को दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने इन विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। विधायक चंद्राकर सबसे पहले वार्ड क्रमांक 17 स्थित शिवपारा स्टेशन मरोदा पहुंचे। इसके बाद उन्होंने वार्ड क्रमांक 18 एचएससीएल स्टेशन मरोदा और बीआरपी कॉलोनी में विकास कार्यों का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि विकास कार्यों के लिए सरकार के पास पर्याप्त राशि है और नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि निगम क्षेत्र के अंतिम छोर पुरैना से लगातार भूमिपूजन कार्यक्रम किए जा रहे हैं। क्षेत्रीय पार्षदों के प्रयास और नागरिकों की प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए विकास कार्यों को स्वीकृति दी जा रही है। उन्होंने बताया कि कई अन्य विकास कार्यों की मंजूरी प्रक्रियाधीन है। स्वीकृति मिलने के बाद वे पुनः विभिन्न वार्डों का दौरा करेंगे। वार्ड क्रमांक 16, बीआरपी कॉलोनी- 25 लाख 55 हजार रुपये की लागत से नाली निर्माण, सड़क निर्माण एवं सौंदर्यीकरण के कार्य होंगे। वार्ड क्रमांक 17, शिवपारा स्टेशन मरोदा- 1 करोड़ 2 लाख 5 हजार रुपये से नाली एवं पुलिया निर्माण, सड़क संधारण और सामुदायिक भवन सहित अन्य विकास कार्य कराए जाएंगे। वार्ड क्रमांक 18, एचएससीएल शिवपारा- 45 लाख 36 हजार रुपये की लागत से विभिन्न विकास कार्य किए जाएंगे। कार्यक्रम में नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, पार्षद गजेन्द्री कोठारी, रेखा देवी, ममता सिन्हा, धर्मेन्द्र भगत, सारिका साहू, मंडल अध्यक्ष राजू जंघेल, अनुपम साहू सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

पुलिस फर्जीवाड़े की जांच कर रही

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 25 अगस्त। आनंद सहकारी गृह निर्माण मर्यादित समिति दुर्ग की शिकायत पर पद्मनाभपुर थाने पुलिस ने फर्जी हस्ताक्षर कर समिति की सदस्यता और भूखंड की एनओसी हासिल करने के आरोप में तीन लोगों के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मामले में अविनाश सिंह गुप्ता, डॉ. अपूर्वा गुप्ता और श्रीमती मोनिका गुप्ता को आरोपी बनाया गया है पुलिस ने अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है पद्मनाभपुर पुलिस ने बताया कि मामला आनंद नगर, दुर्ग स्थित आनंद सहकारी गृह निर्माण मर्यादित समिति के भूखंड क्रमांक 9 से जुड़ा है समिति के अध्यक्ष ने न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी दुर्ग की अदालत में धारा 175 (3) भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत आवेदन प्रस्तुत किया था। आवेदन और दस्तावेजों के अवलोकन के बाद न्यायालय ने 13 अगस्त को पुलिस को एफआईआर दर्ज कर निष्पक्ष जांच के निर्देश दिए थे परिवाद के अनुसार आरोपी अविनाश सिंह गुप्ता ने भूखंड क्रमांक 9 खरीदने के लिए 17 मार्च 2022 को सहमति पत्र, 28 मार्च 2022 को समिति की सदस्यता के लिए आवेदन और उसी दिन एनओसी के लिए आवेदन प्रस्तुत किया इन दस्तावेजों में डॉ. अपूर्वा गुप्ता के हस्ताक्षर किए गए थे सदस्यता संबंधी आवेदन में मोनिका गुप्ता ने बतौर साक्षी हस्ताक्षर किए थे समिति के संचालक मंडल की 16 सितंबर 2024 और 3 अक्टूबर 2024 की बैठक के प्रस्ताव पंजी तथा भूखंड के पंजीकृत बैनामे में डॉ. अपूर्वा गुप्ता के हस्ताक्षरों से इन आवेदनों के हस्ताक्षर अलग पाए जाने का दावा किया गया। इसके बाद समिति ने हस्ताक्षरों की जांच फोरेंसिक कंसल्टेंसी से कराई। फोरेंसिक विशेषज्ञ की रिपोर्ट में विवादित आवेदनों पर किए गए डॉ. अपूर्वा गुप्ता के हस्ताक्षरों को कूटरचित/फर्जी बताया गया समिति का आरोप है कि इसी आधार पर अविनाश सिंह गुप्ता ने मोनिका गुप्ता के सहयोग से षड्यंत्रपूर्वक समिति की सदस्यता और एनओसी हासिल की। न्यायालय के आदेश के पालन में पद्मनाभपुर पुलिस ने आरोपी अविनाश सिंह गुप्ता, डॉ. अपूर्वा गुप्ता और श्रीमती मोनिका गुप्ता के खिलाफ धारा 120 बी, 416, 420, 467 और 468 भारतीय दंड संहिता के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना में लिया है ।

राहगीरों को डराने वाला गिरफ्तार

भिलाई, 25 अगस्त। भिलाई थाना सुपेला पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि शराब भट्ठी लक्ष्मी नगर सुपेला के पास एक व्यक्ति अपने पास धारदार स्टील का हथियार रखकर आने-जाने वाले लोगों को डरा-धमका रहा है सूचना पर सुपेला थाने पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घेराबंदी कर संदिग्ध व्यक्ति को धारदार हथियार लहराते हुए लोगों को डराते-धमकाते पकड़ा पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम मेहताब कुरैशी (22 साल) निवासी निजामी चौक, फरीद नगर सुपेला बताया आरोपी के कब्जे से एक धारदार स्टील का हथियार जब्त कर कार्रवाई की है

गढ़वाल समाज के सावन मिलन समारोह में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां रहीं लोगों के आकर्षण का केंद्र

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 25 अगस्त । गढ़वाल समाज मंगल भवन, कोहका में अखिल भारतीय गढ़वाल समाज भिलाई मंडल की ओर से सावन मिलन समारोह एवं सावन झूला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सर्व कल्याण समाज के अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह छोटू विशेष रूप से शामिल हुए। उन्होंने समाजजनों से भेंट-मुलाकात की और कार्यक्रम में शामिल होकर समाज की गतिविधियों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में आपसी भाईचारा, प्रेम और एकजुटता को मजबूत करने के साथ नई पीढ़ी को अपनी जड़ों और संस्कृति से जोड़ने का काम करते हैं। इंद्रजीत सिंह छोटू ने कहा कि गढ़वाल समाज की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और लोक विरासत को संजोने की दिशा में यह आयोजन सराहनीय और प्रेरणादायक है। सावन मिलन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज की महिलाएं अपनी पारंपरिक संस्कृति को जीवंत रखने के साथ उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए महिला समिति एवं समाज के सभी पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों की निरंतरता समाज को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सावन की हरियाली, पारंपरिक संस्कृति और सामाजिक मेल-मिलाप से सराबोर इस आयोजन में समाज के लोगों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं की विशेष भागीदारी रही और मातृशक्ति द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहे। सावन मिलन समारोह के दौरान महिलाओं ने पारंपरिक गीत-संगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से उत्तराखंड की समृद्ध लोक संस्कृति की झलक प्रस्तुत की। सावन झूला कार्यक्रम ने आयोजन में उत्साह और उल्लास का माहौल बना दिया। समाज की महिलाओं ने एक-दूसरे को सावन पर्व की शुभकामनाएं दीं और पारंपरिक अंदाज में उत्सव का आनंद लिया। कार्यक्रम के दौरान समाजजनों ने आपसी मेल-मिलाप के साथ सावन पर्व का आनंद लिया और आयोजन को यादगार बनाया।

प्लेट मिल ने फिनिश्ड प्लेट्स के रोड डिस्पैच का नया दैनिक रिकॉर्ड बनाया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

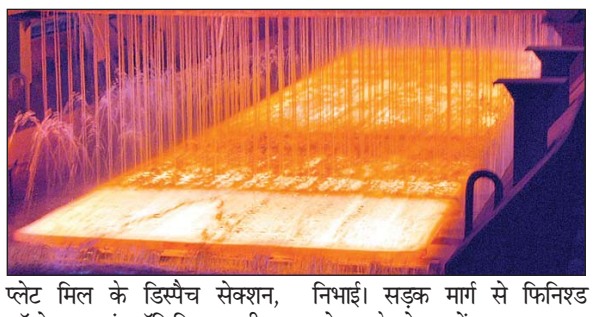

भिलाई, 25 अगस्त । भिलाई इस्पात संयंत्र के प्लेट मिल के डिस्पैच सेक्शन ने फिनिश्ड प्लेट्स के सड़क मार्ग से प्रेषण का नया दैनिक रिकॉर्ड कायम किया है। टीम ने एक दिन में 49 ट्रॉलियों के माध्यम से 1,526 टन फिनिश्ड प्लेट्स का रोड डिस्पैच कर यह उपलब्धि हासिल की। इससे पहले 16 अगस्त 2026 को 40 ट्रॉलियों के जरिए 1,246 टन फिनिश्ड प्लेट्स के डिस्पैच का रिकॉर्ड दर्ज किया गया था। नए रिकॉर्ड में पुराने रिकॉर्ड की तुलना में 9 अधिक ट्रॉलियों के माध्यम से 280 टन अधिक प्लेट्स का प्रेषण किया गया। यह उपलब्धि प्लेट मिल के डिस्पैच सेक्शन, ऑपरेशन एवं लॉजिस्टिक्स टीम, ट्रांसपोर्टर, क्रेन एवं हैंडलिंग टीम सहित संबंधित विभागों और हितधारकों के बीच बेहतर समन्वय, प्रभावी योजना और सामूहिक प्रयास का परिणाम है। सुचारू एवं तेज प्रेषण प्रक्रिया ने इस उपलब्धि को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सड़क मार्ग से फिनिश्ड प्लेट्स के प्रेषण में बना यह नया दैनिक रिकॉर्ड प्लेट मिल और सेल-बीएसपी के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह प्रेषण दक्षता में एक नया मानदंड स्थापित करने के साथ टीमवर्क, कार्यकुशलता और निरंतर बेहतर प्रदर्शन के प्रति टीम की प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

दिव्यांगों की सुविधा के लिए सर्वधर्म सेवा संस्था ने भेंट की व्हीलचेयर

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

भिलाई, 25 अगस्त । यात्रियों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सर्वधर्म सेवा संस्था ने जनसेवा की दिशा में पहल करते हुए दुर्ग रेलवे स्टेशन को एक व्हीलचेयर भेंट की। इसका उपयोग जरूरतमंद यात्री निःशुल्क कर सकेंगे। संस्था की सदस्या उषा कसेर ने संस्था की ओर से व्हीलचेयर रेलवे स्टेशन अधीक्षक प्रमोद शर्मा, स्टेशन प्रबंधक हिमांशु कुमार एवं राहुल प्रधान को सौंपी। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष प्रतीक भोई ने कहा कि दुर्ग रेलवे स्टेशन पर प्रतिदिन बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांगजन और ऐसे यात्री पहुंचते हैं, जिन्हें चलने-फिरने में कठिनाई होती है। ऐसे यात्रियों के लिए व्हीलचेयर की सुविधा काफी उपयोगी साबित होगी। रेलवे अधिकारियों ने संस्था की इस जनहितकारी पहल की सराहना की। कार्यक्रम में सर्वधर्म सेवा संस्था के पदाधिकारी राकेश रत्नाकर, घनश्याम पांडे, भेखराम साहू, नोहर सिंह, वसंत सलंकर, मनमोहन सिंह सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

हर खेत का हो डिजिटल सर्वे, हर किसान का हो पंजीयनःकलेक्टर

दुर्ग, 25 अगस्त । प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, सामान्य फसल अनुमान सर्वेक्षण योजना एवं अन्य कृषि सांख्यिकी योजनाओं के संबंध में वार्षिक प्रशिक्षण आज पीडब्ल्यूडी सभागार में सभी अनुविभागीय अधिकारी, उप संचालक कृषि, तहसीलदार एवं पटवारी के लिए आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान अपर कलेक्टर हरवंश सिंह मिरी भी उपस्थित थे। सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख द्वारा अधिकारियों को योजनाओं की प्रक्रिया एवं कार्यों की बारीकियों की विस्तार से जानकारी दी गई।प्रशिक्षण के दौरान कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह ने फसलों के डिजिटल फसल सर्वेक्षण, एग्रीस्टेक पोर्टल एवं लंबित बकेट क्लेम प्रकरणों की प्रगति की समीक्षा की।

निधन

डॉ. एस. ए. रिजवी

भिलाई, 25 अगस्त । सेक्टर-9 हॉस्पिटल के पूर्व सीएमओ एवं शहर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एस. ए. रिजवी का सोमवार, 24 अगस्त को इंतकाल हो गया। उनके निधन की खबर से परिवार, परिचितों, शुभचिंतकों और उन्हें जानने वालों में शोक की लहर है। परिजनों के अनुसार, मरहूम की मैय्यत नेहरू नगर स्थित उनके निवास से सोमवार को नमाज़-ए-मगरिब के बाद हैदरगंज कब्रिस्तान, कैंप-1 ले जाई गयी। वहीं बाद नमाज़-ए-मगरिब नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की

तुलसीदास ने श्रीराम के आदर्श को जन-जन तक पहुंचाया : इन्द्र साव

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सिमगा 25 अगस्त। ग्राम धोबनी में गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक इन्द्र साव शामिल हुए। अध्यक्षता सेवानिवृत्त शिक्षक लखन लाल साहू ने की। विशेष अतिथि के रूप में विधायक प्रतिनिधि शैली भाटिया एवं जिला पंचायत सदस्य शशि आनंद बंजारे उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्रीराम एवं संत तुलसीदास जी की प्रतिमा पर पूजा-अर्चना और आरती के साथ हुआ।

मुख्य अतिथि विधायक इन्द्र साव ने संत तुलसीदास जी के जीवन एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान श्रीराम

के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का महान कार्य किया। रामचरितमानस के जरिए उन्होंने सत्य, मर्यादा, त्याग, सेवा, करुणा, परोपकार और भाईचारे जैसे मानवीय मूल्यों को समाज के सामने रखा। उन्होंने कहा कि आज के बदलते सामाजिक परिवेश में भी तुलसीदास जी के विचार और श्रीराम के आदर्श बेहद प्रासंगिक हैं।

अध्यक्ष लखन लाल साहू ने बताया कि आसपास के लगभग 15 गांवों के लोग प्रतिवर्ष अलग-अलग गांवों में सामूहिक रूप से तुलसीदास जयंती मनाते हैं। इसका उद्देश्य संत तुलसीदास जी के विचारों और सामाजिक संदेशों को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है।

विधायक प्रतिनिधि शैली भाटिया ने कहा कि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के माध्यम से धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान को सरल भाषा में आमजन तक पहुंचाया। जिला पंचायत सदस्य शशि आनंद बंजारे ने भी तुलसीदास जी के बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सदस्यों का सम्मान किया गया। सरपंच संतोष साहू की मांग पर विधायक इन्द्र साव ने स्कूल में अतिरिक्त कक्ष एवं सीसी रोड निर्माण की घोषणा की। वहीं जिला पंचायत सदस्य ने ग्राम विकास के लिए पांच लाख रुपये देने की घोषणा की। कार्यक्रम में आसपास के 15 गांवों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

एक नजर

एआई+ स्मार्टफोन ने प्रोजेक्ट ओपन रिव्यू 2.0 में पेश किया नया नोवा 2 पॉवर

रायपुर, 25 अगस्त। एआई+ स्मार्टफोन ने अपनी नोवा 2 सीरीज में नया नोवा 2 पॉवर पेश किया है। प्रोजेक्ट ओपन रिव्यू 2.0 के तहत लॉन्च से पहले रिव्यूअर्स, क्रिएटर्स, जर्नलिस्ट्स, टेक्नोलॉजी प्रेमियों और एथिकल हैकर्स को फोन को खुद इस्तेमाल कर परखने का मौका दिया जा रहा है। नोवा 2 पॉवर गोल्डन ब्लू फ्यूजन और ब्लू फ्यूजन रंगों में आया है। फोन में 6एनएम प्रोसेस पर आधारित मीडियाटेक डाइमेंसिटी 7100 चिपसेट दिया गया है, जिसे बेहतर परफॉर्मेंस और पावर एफिशिएंसी के संतुलन के लिए डिजाइन किया गया है। कंपनी के अनुसार, प्रोजेक्ट ओपन रिव्यू 2.0 में प्रतिभागियों को बिना किसी तय स्क्रिप्ट के फोन के डिजाइन, स्पेसिफिकेशंस और यूजर एक्सपीरियंस को स्वतंत्र रूप से परखने का अवसर मिलेगा। पहले एडिशन में 700 से अधिक रजिस्ट्रेशन मिले थे, जबकि इस बार पहली बार एथिकल हैकर्स को भी शामिल किया गया है। फोन की कीमत और उपलब्धता की जानकारी लॉन्च के करीब साझा की जाएगी।

नवागांव से सोमनाथ धाम के लिए निकली कांवड़ यात्रा, हर-हर महादेव के जयकारों से गूंजा गांव

सिमगा 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। ग्राम पंचायत नवागांव में सावन के चौथे सोमवार को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्य कांवड़ यात्रा निकाली गई। ग्राम के तालाब स्थित शिव मंदिर के पास से श्रद्धालुओं ने पवित्र जल भरकर कंधे पर कांवड़ रखी और गाजे-बाजे व डीजे की धुन पर नाचते-गाते हुए सोमनाथ धाम लखना के लिए रवाना हुए। इस दौरान पूरा नवागांव हर-हर महादेव और बोल बम के जयकारों से गूंज उठा। कांवड़ यात्रा में सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। भक्तों ने भगवान शिव-शंभू का जयकारा लगाते हुए पैदल यात्रा शुरू की। श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बन रहा था। यात्रा के दौरान 'बोल बम का नारा है, बाबा एक सहारा है' और 'बाबा की नगरी दूर है, लेकिन जाना जरूर है' जैसे जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो गया। कांवड़ियों ने भगवान भोलेनाथ से अपने परिवार एवं ग्राम की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। जगह-जगह ग्रामीणों ने कांवड़ यात्रा का भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया। श्रद्धालु सोमनाथ धाम पहुंचकर भगवान महादेव का जलाभिषेक करेंगे। सावन के पहले सोमवार से ही सोमनाथ धाम जाने वाले भक्तों का सिलसिला जारी है।

साइबर जागृति अभियानः बैंक ग्राहकों को ऑनलाइन ठगी से बचाव की दी जानकारी

बलौदाबाजार 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। भारतीय स्टेट बैंक, किरंदुल, नकुलनार एवं भांसी के सहयोग से थाना किरंदुल, भांसी, कटेकल्याण कुआकोण्डा पुलिस द्वारा साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, बैंकफ्रॉड से बचाव संबंधी दी गई जानकारी। पुलिस अधीक्षक दंतेवाड़ा श्रीमान पुलिस अधीक्षक श्री चंद्रमोहन सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र कुमार खूँटे एवं सायबर नोडल अधिकारी श्री ठाकुर गौरव सिंह के निर्देशन में जिले में संचालित श्साइबर जागृति अभियान के अंतर्गत दिनांक 24/08/2026 को वित्तीय धोखाधडी और PI सुरक्षा पर बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थानो में अभियान। कार्यक्रम के दौरान बैंकिंग माध्यम से होने वाली धोखाधड़ी, फर्जी भुगतान अनुरोध, पिन/पासकोड के माध्यम से की जाने वाली ठगी तथा संदिग्ध लिंक के माध्यम से होने वाले साइबर अपराधों के संबंध में बैंक ग्राहकों को विस्तृत जानकारी एवं आवश्यक सावधानियों के बारे में समझाइश दी गई। बैंक ग्राहकों को विशेष रूप से अवगत कराया गया कि ओटीपी का उपयोग राशि भेजने अथवा भुगतान करने के लिए किया जाता है; राशि प्राप्त करने के लिए ओटीपी की आवश्यकता नहीं होती। किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर क्यूआर कोड स्कैन न करने तथा ओटीपी, एटीएम/डेबिट कार्ड विवरण, पिन, पासवर्ड एवं अन्य बैंकिंग संबंधी गोपनीय जानकारी किसी भी व्यक्ति के साथ साझा न करने की अपील की गई। दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा पुलिस आम नागरिकों से अपील करती है कि साइबर ठगी का शिकार होने पर घबराएं नहीं। तत्काल साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर शिकायत करें तथा संबंधित बैंक को भी सूचना दें।

फरार आरोपियों की गिरफ्तारी में मदद करने वाले संतोष यादव सम्मानित

बलौदाबाजार 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस द्वारा अपराधों की रोकथाम और अपराधियों की त्वरित धरपकड़ के लिए आम नागरिकों के सहयोग को सदैव प्रोत्साहित किया जाता रहा है। इसी कड़ी में आज दिनांक 24.08.2026 को जिला पुलिस कार्यालय बलौदाबाजार में एक सादे समारोह के दौरान पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय द्वारा संतोष यादव (निवासी सिविल लाइन, बलौदाबाजार) को प्रशस्ति पत्र देकर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

कुसुमकसा से दल्ली राजहरा तक कांवड़ यात्रा के दौरान गूंजा हर-हर महादेव

नन्हे कांवड़ियों की अटूट श्रद्धा, नंगे पांव 18 किमी चलकर किया महादेव का जलाभिषेक

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

दल्लीराजहरा 25 अगस्त। सावन मास का अंतिम सोमवार नजदीक है और उससे ठीक एक दिन पहले रविवार 23 अगस्त 2026 को कुसुमकसा से दल्ली राजहरा तक आस्था, भक्ति और श्रद्धा का ऐसा सैलाब उमड़ा कि देखने वाले भी हर-हर महादेव के जयकारे लगाने लगे। ग्राम कुसुमकसा एवं आसपास के ग्रामीणों द्वारा विगत 36 वर्षों से चली आ रही परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी विशाल कावड़ यात्रा निकाली गई। यह यात्रा कुसुमकसा से 9 किलोमीटर दूर दल्ली राजहरा के प्रसिद्ध झरन मैया कुंड के लिए निकाली जाती है, जहाँ से जल लेकर वापस कुसुमकसा स्थित भगवान शिव के मंदिर में जलाभिषेक किया जाता है। इस प्रकार आने-जाने की कुल दूरी लगभग 18 किलोमीटर होती है।

विशाल कावड़ यात्रा की शुरुआत रविवार सुबह 11 बजे ग्राम कुसुमकसा से हुई। कुसुमकसा के मंडल अध्यक्ष योगेंद्र सिन्हा ने बताया कि यह कावड़ यात्रा लगभग 36 वर्षों से अनवरत निकाली जा रही है। इसकी शुरुआत 1990 के दशक में स्वर्गीय बुटु सिंह जी बैस, नवल किशोर मिश्रा, सोहनमल डरसेना और डॉक्टर गोविंद मिश्रा के द्वारा की गई थी। उस समय यात्रा साधारण रूप से होती थी, लेकिन आज यह विशाल रूप ले चुकी है। वर्तमान में यह कावड़ यात्रा कुसुमकसा के दुर्गा मंदिर के पुजारी लखन गोस्वामी के नेतृत्व में निकाली जा रही है।

इस यात्रा में लगभग 450 से भी अधिक महिला, पुरुष शामिल हुए, लेकिन सबसे खास बात यह रही कि इसमें छोटे-छोटे स्कूली बच्चे भी बड़ी संख्या में शामिल थे।

इस यात्रा का सबसे भावुक और सबसे बड़ा आकर्षण नन्हे बालक-बालिकाएं रहे। महिलाएं और पुरुष तो थे ही, साथ ही छोटे-छोटे स्कूली बच्चे भी बिना चप्पल के नंगे पांव पैदल चलकर आए। आज के समय में घर से बाहर 100 मीटर भी बिना चप्पल के चलने में लोगों के पैर दुख जाते हैं, तपती सड़क पर पैर जलने लगते हैं। ऐसे में कुसुमकसा से दल्ली राजहरा आने और जाने की लगभग 18 किलोमीटर की दूरी इन नन्हे बालक और बालिकाओं द्वारा बिना चप्पल के नंगे पांव चलना बहुत ही बड़ी बात है। यह सिर्फ चलना नहीं है, यह उनकी अटूट श्रद्धा, भक्ति और देवाधिदेव महादेव के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक है। यह तभी संभव है जब स्वयं महादेव की कृपा इन नन्हे भक्तों पर बरस रही हो। नन्हे पांव थके नहीं, हौसला डिगा नहीं, बल्कि हर-हर महादेव के जयकारों के साथ वे लगातार चलते रहे।

कावड़ यात्रा दोपहर लगभग 2 बजे के करीब दल्ली राजहरा पहुंची। बाजार पहुंचने से पहले संगीता ट्रेडर्स के द्वारा सभी कांवड़ियों को केला वितरण कर स्वागत किया गया। कावड़ यात्रियों के बीच कई झांकियां आकर्षण का केंद्र रहीं। राजकुमार सिन्हा के द्वारा देवाधिदेव महादेव के रूप धारण किए हुए था, जिसके द्वारा शहर के मध्य गुप्ता चौक पर तांडव नृत्य किया गया। तांडव नृत्य को देखकर श्रद्धालु दर्शन कर मंत्रमुग्ध हो गए। वहीं एक अन्य कावड़ यात्री भी आकर्षण का केंद्र था, जिसने अपने कावड़ में 12 ज्योतिर्लिंग के साथ श्री बद्रीनाथ धाम, श्री रामेश्वरम मंदिर, श्री जगन्नाथ मंदिर और श्री द्वारकाधीश मंदिर को समाहित किया हुआ था। नन्हे बालक भी महादेव के रूप में सजे हुए नजर आए। छोटी उम्र में ही महादेव के प्रति उनका विश्वास देखकर हर कोई भावुक हो रहा था।

सभी कावड़िये दल्ली राजहरा के झरन माता मंदिर परिसर स्थित प्राकृतिक झरन कुंड पहुंचे। वहां से पवित्र जल लेकर फिर वापस 9 किलोमीटर पैदल चलकर संध्या 6:00 बजे कुसुमकसा पहुंचे और ग्राम पंचायत के समीप स्थित भगवान शिव के मंदिर में जलाभिषेक किया। जल अभिषेक उपरांत महा आरती संपन्न हुई तथा इस अवसर पर महा भंडारा का आयोजन किया गया था ।

इस मंदिर का इतिहास भी कम चमत्कारी नहीं है। मंदिर निर्माण के संबंध में पूर्व जनपद सदस्य संजय बैस और अनिल सुथार ने बताया कि सन 1960 के दशक में उत्तर प्रदेश से एक भागवताचार्य मणि प्रसाद मिश्रा कुसुमकसा आए थे। वे गांव-गांव घूम कर भगवान की कथा सुनाया करते थे और इसी दौरान उन्होंने दान-दक्षिणा के माध्यम से लगभग 3000 रुपये की राशि एकत्र की।

उन्होंने ग्रामीणों के समक्ष भगवान शिव का विशाल मंदिर बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसे ग्रामीणों ने सहर्ष स्वीकार किया। अपनी ओर से जैसा भी बन पड़ा, उन्होंने सहयोग किया और मंदिर का निर्माण प्रारंभ हुआ।

इसी बीच भागवताचार्य ने एक ऐसी बात कही जो सबके मन में रह गई। उन्होंने कहा था कि जिस दिन महादेव के मंदिर का निर्माण पूर्ण होगा और मंदिर में भगवान की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी, वह दिन मैं नहीं देख पाऊंगा। उससे पहले ही मैं इस संसार से विदा हो जाऊंगा।

ग्रामीणों ने अनमने मन से भी मंदिर का निर्माण निरंतर जारी रखा और अंततः मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ। पंडितों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की तारीख तय की गई और पंडित मणि प्रसाद जी द्वारा कही गई बात उस दिन सत्य हो गई, जब मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से ठीक पूर्व मंदिर में बैठे ही बैठे उनकी प्राण पखेरू उड़ गए। ग्रामीणों ने पहले पंडित जी का अंतिम संस्कार करने के पश्चात ही भगवान शिव की प्राण प्रतिष्ठा की। संजय बैस ने बताया कि उनकी मौत अप्रत्याशित थी लेकिन हमारे लिए यह घटना अलौकिक रह गई।

ग्रामीण बड़े हर्षोउल्लास के साथ इस कावड़ यात्रा को आज भी जारी रखे हुए हैं। पहले कावड़ यात्रा साधारणतः होती थी, लेकिन वर्तमान समय के हिसाब से डीजे और संगीत के साथ विशाल कावड़ यात्रा निकाली जाती है। जिसके लिए पिछले 4 साल से श्री राम जानकी सेवा समिति कुसुमकसा पूरा सहयोग कर रही है। इस यात्रा में आज संजय बैस, नितिन जैन, संतोष जैन मोतीलाल कोचरिया राजू सिन्हा, योगेंद्र सिन्हा अनिल सुथार देवेंद्र सिंहा पूनम चंदसिन्हा नीलकंठ साहू पुष्कर साहू खोर बाहरा धनकर शैलेश कोठारी कमलेश कोठारी विजय लक्ष्मीबाई गांगुली मैडम नंदकुमार पिस्दा का विशेष सहयोग रहा ।

साइबर जागृति अभियान में बढ़ी सहभागिता, लड्डू सोनी ने आमजन से जुड़ने की अपील की

बलौदाबाजार 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। साइबर अपराधों पर अंकुश लगाने और आम नागरिकों को ऑनलाइन ठगी एवं डिजिटल फ्रॉड के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा प्रदेशभर में 15 अगस्त से 02 अक्टूबर 2026 तक साइबर जागृति अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत आम जनता को डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए जागरूकता की एक सेल्फी पहल की शुरुआत की गई है। अध्यक्ष जिला तैराकी संघ बलौदाबाजार-भाटापारा ने की पहल:- आज दिनांक 24.08.2026 को अध्यक्ष जिला तैराकी संघ बलौदाबाजार-भाटापारा श्री लक्ष्मीनारायण (लड्डू) सोनी ने इस जन-जागरूकता अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उन्होंने आधिकारिक पोस्टर पर दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन कर अपनी #जागरूकता की सेल्फी ली और उसे अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अपलोड किया। ?सेल्फी अपलोड करते हुए श्री लक्ष्मीनारायण (लड्डू) सोनी ने आम जनता एवं युवाओं से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस अभियान से जुड़ें और 'साइबर अपराध मुक्त छत्तीसगढ़' के निर्माण में अपनी भागीदारी निभाएं।

पुरानी बस्ती में आपसी रंजिश के चलते चाकू से हमला करने के आरोप में युवक गिरफ्तार

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार 25 अगस्त। पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय के कुशल निर्देशन में बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस द्वारा जिले में हिंसा, गुंडागर्दी एवं धारदार हथियारों से अपराध कारित करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में थाना सिटी कोतवाली बलौदाबाजार पुलिस द्वारा चाय दुकान में पुरानी रंजिश को लेकर गाली-गलौज करते हुए जानलेवा हमला कर चाकूबाजी करने वाले आरोपी को त्वरित कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार किया गया है। मामले का विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि पुरानी अनदेखी व बातचीत न करने की बात पर गुस्सा होकर आरोपी राजीव वर्मा उर्फ बड्डे द्वारा गंदी-गंदी गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी दी गई तथा अपनी स्कूटी की डिक्की से धारदार चाकू निकालकर प्रार्थी पर हमला कर दिया, जिससे प्रार्थी के बाएं हाथ के कोहनी के पास चोट लगी। ?प्रार्थी की रिपोर्ट पर थाना सिटी कोतवाली में अपराध क्र. 684/2026, धारा 296, 115(2),351(2),318(1) बीएनएस एवं 25,27 आर्म्स एक्ट दर्ज कर विवेचना में लिया गया। पुलिस टीम द्वारा आरोपी को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ करने पर आरोपी द्वारा जुर्म स्वीकार किया गया। आरोपी के मेमोरेंडम कथन के आधार पर घटना में प्रयुक्त धारदार चाकू एवं स्कूटी क्रमांक छत्त 04 स 2423 विधिवत जप्त कर कब्जे में लिया गया है। प्रकरण में आरोपी को आज दिनांक 24.08.2026 को विधिवत गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की कार्यवाही की जा रही है।

दामाखेड़ा स्कूलों में बच्चों को युवा नेता हेमन्त साहू ने वितरित किए बैडमिंटन व फुटबॉल किट

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

सिमगा 25 अगस्त। हेमन्त साहू द्वारा शासकीय बालक प्राथमिक शाला एवं कन्या शाला दामाखेड़ा में बच्चों को खेल सामग्री का वितरण

विकास खण्ड सिमगा अंतर्गत ग्राम दामाखेड़ा में शासकीय बालक प्राथमिक विद्यालय एवं शासकीय कन्या विद्यालय के विद्यार्थियों की मांग पर बैडमिंटन एवं फुटबॉल किट का वितरण हेमन्त साहू युवा नेता ने विद्यालय परिवार को

समर्पित की गई। हेमन्त साहू ने बच्चों में खेल के प्रति बढ़ते उत्साह और रुचि को देखते हुए यह पहल की गई है। इस पहल का उद्देश्य ग्रामीण अंचल के बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में भी आगे बढ़ाने और उनकी प्रतिभा को निखारने हेतु प्रोत्साहित करना है। इस अवसर पर मुख्य रूप से विकास खण्ड सिमगा अधिकारी श्री संजय श्रीवास्तव जी उपस्थित रहे। साथ ही प्राथमिक शाला से श्री जागड़े सर, कन्या शाला से श्री देवांगन सर, प्राचार्य श्री घनश्याम देवांगन जी सहित दोनों विद्यालयों के समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं स्टाफगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अधिकारियों द्वारा बच्चों को नियमित खेलने, अनुशासन बनाए रखने और शिक्षा व खेल दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित किया गया। बच्चों में खेल सामग्री पाकर अत्यंत हर्ष का माहौल रहा।

तिल्दा-नेवरा की बेटी चाहत विरानी ने कंपनी सेक्रेटरी बनकर क्षेत्र का बढ़ाया गौरव

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा-नेवरा 25 अगस्त। नगर की होनहार बेटी चाहत विरानी, पिता श्री गोपीचंद विरानी, ने कंपनी सेक्रेटरी (ष्ट्स्) की परीक्षा उत्तीर्ण कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उनकी इस उपलब्धि से परिवार सहित तिल्दा-नेवरा क्षेत्र में खुशी और गर्व का माहौल है।

चाहत विरानी ने अपनी मेहनत, लगन और निरंतर अध्ययन के बल पर कंपनी सेक्रेटरी जैसी प्रतिष्ठित व्यावसायिक परीक्षा में सफलता प्राप्त की। उनकी इस उपलब्धि ने न केवल उनके परिवार का मान बढ़ाया है, बल्कि तिल्दा-नेवरा की बेटियों के लिए भी एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। चाहत की सफलता की खबर मिलते ही परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों एवं शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। लोगों का कहना है कि छोटे शहर से निकलकर कठिन और प्रतिष्ठित प्रोफेशनल परीक्षा में सफलता हासिल करना उनकी मेहनत और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। कंपनी सेक्रेटरी के रूप में चाहत विरानी ने अपने करियर की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उनकी सफलता से यह संदेश भी मिलता है कि यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत के साथ उसे हासिल करने का प्रयास किया जाए तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त की जा सकती है।

तिल्दा का गौरव बनीं चाहत

चाहत विरानी की इस उपलब्धि को क्षेत्रवासियों ने तिल्दा-नेवरा के लिए गौरव का क्षण बताया है। परिवारजनों ने उनकी सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि चाहत ने अपनी मेहनत से परिवार का नाम रोशन किया है। उनकी उपलब्धि युवा पीढ़ी, विशेषकर बेटियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।

अल्ट्राटेक बैकुंठ में रूद्रामहाभिषेक के बाद किया भंडारे का आयोजन

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

तिल्दा-नेवरा 25 अगस्त। अल्ट्राटेक बैकुंठ सीमेंट मे हनुमान मंदिर परिसर पर श्री शिव रूद्रामहाभिषेक एवं श्री शिव हवन पूजन किया गया। तत्पश्चात भोग भंडारे का भी आयोजन किया गया। यूनिट कुलकर्णी सपत्नीक विराजमान रहे। वही साथ ही एफ एच राजिव सिंघल सुनंदा बाशु , ए के सिन्हा के आलावा विवेक बघेल , अशोक मिश्रा , अभिषेक तेवतिया भी उपस्थित रहे। पुजा मे बारिश की रिमझिम फुहार के बाद भी यहां के अधिकारियों, कर्मचारियों, कालोनी वासियों व अंचलवासीयो की बडी श्रद्धा के साथ शामिल हुए हवन-पूजन के पश्चात श्रीबैकुंठेश्वर मंदिर समिति एवं शिवभक्तों के सौजन्य से भोगभंडारे का भी आयोजन किया गया। जिसमे सभी लोगो ने बडी श्रद्धाभाव से ग्रहण किये। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अशोक मिश्रा , गिरिराज शंकर मिश्रा , राजेन्द्र कुमार साहू, गुरूदयाल साहू, पं. कैलाश तिवारी का योगदान रहा। वही भोगभंडारे के वितरण मे जिन्होने योगदान दिया। उन्मे कामेश्वर प्रसाद, ईश्वर प्रसाद, ईश्वरराव, उत्तम सिंह, रामकुमार ध्रुव, के आलावा बहुत से लोगो का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग रहा।

लखना में पार्थिव शिवलिंग का अभिषेक

तिल्दा नेवरा 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। सावन माह के आखिरी सोमवार को ग्राम पंचायत लखना में गंगा मैया ग्राम संगठन समूह द्वारा गुड़ी चौक में पार्थिव शिवलिंग में रूद्र अभिषेक गांव की सुख शांति व संवृद्धि के लिए पंडित देवेंद्र पांडे सिमगा वाले द्वारा करवाया गया, जिसमें संगठन के समस्त समूह के कार्यकर्त्ता, मेमीन निषाद, मोगरा साहू ,खेमिन साहू,शिवकुमारी साहू,नीरा साहू पूनम साहू,विद्याभारती निषाद, लक्ष्मी साहू, हेमा साहू ,श्यामा साहू सरपंच प्रेमबाई यादव,पुष्पा साहू, प्रीतम साहू, रूपाली साहू,ईश्वरी साहू,संतोषी साहू,भूमिका सेन, माधुरी सेन,कल्याणी सेन रतनी सेन,सुमन साहू,राधा सेन, काजल साहू, नूतन निषाद, बलदाऊ साहू उपसरपंच,बलराम साहू,शंभू यादव,प्रेमलाल सेन,एवं समस्त ग्रामवासी सम्मिलित हो कर गांव हित के लिए यह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

गांधी परिवार ऐसा करने को कभी सोचता नहीं था

देश में गांधी परिवार का शासन कई दशकों तक रहा है, देश की राजनीति में उसका अपना रुतबा रहा है, उसका दबदबा रहा है। कभी कोई सोच नहीं पाता था कि इनके खिलाफ कोई एफआईआर करा सकता है,उसके सदस्यों को कभी कोर्ट में जाकर खड़े नहीं होना पड़ा, किसी मामले में कोर्ट में माफी मांगनी नहीं पड़ी थी, कभी कोई सोचना नहीं था कि गांधी परिवार तीन लोकसभा चुनाव हार सकता है,कभी कोई सोचता नहीं था कि परिवार के किसी सदस्य की सांसदी जा सकती है,कभी कोई सोचता नहीं था कि इस परिवार कोई सदस्य अमेठी से हार सकता है। कभी कोई सोचता नहीं था कि परिवार के किसी सदस्य को अपनी किसी मांग के लिए पीएम आवास के बाहर धरना देगा, पुलिस परिवार के किसी सदस्य को उठाकर वाहन में बिठाएगी, गिरफ्तारी होगी, कभी किसी ने सोचा नहीं था कि परिवार के किसी सदस्य को एक एफआईआर लिखाने के लिए कई घंटे थाने के सामने धरना देना होगा।कभी कोई सोचना नहीं था कि परिवार के सदस्य को किसी वर्ग का नेता बनने के लिए कई शहरों में कार्यक्रमो का आयोजन करना पड़ेगा।2014 के बाद गांधी परिवार को वह सब करना पड़ा है और करना पड़ रहा है जो 2014 के पहले कोई करने की सोच नहीं पाता था, बड़े से बड़ा काम उनके इशारे पर होते थे। उनके इशारे पर सीएम बदल जाते थे और वह जिसे चाहते थे, वह सीएम बन जाता था,राष्ट्रपति बन जाता था, सीजेआई बन जाता था। मुख्य चुनाव आयुक्त बन जाता था। गांधी परिवार में पैदा होने वाले को किसी वर्ग का नेता बनने के लिए कुछ नहीं करना पड़ता था क्योंकि वह स्वाभाविक रूप से पीएम पद का दावेदार होता था इसलिए वह हर वग का नेता मान लिया जाता था। इस परिवार में राहुल गांधी ही ऐसे सदस्य हैं जिन्हें हर वर्ग का नेता नहीं माना जाता है, राहुल गांधी इसके लिए हर वर्ग को प्रभावित करने कार्यक्रम का आयोजन करना पड़ रहा है, धरना देकर गिरफ्तारी देनी पड़ रही है ताकि उस वर्ग को लगे कि राहुल गांधी उनके लिए क्या कुछ नहीं कर रहे हैं। राहुल गांधी युवाओं के लिए पीएम आवास के बाहर धरना दिया, गिरफ्तारी दी, इसके बाद युवाओं के खिलाफ पुलिस ज्यादती के विरोध में वह संसद के अंदर व बाहर आवाज उठाते रहे हैं यही नहीं एक युवक को पैलेट गन के छर्रे लगने पर थाने में एफआईआर दर्ज नहीं करने पर वह खुद युवक को लेकर थाने गए और जब तक थाने में एफआईआर दर्ज नहीं की गई तब तक राहुल गांधी थाने के बाहर धरना में बैठे रहे। 2014 के पहले तक कहीं धरना देने के लिए जिले के नेता से लेकर राज्य के नेता हुआ करते थे, वही धरना प्रदर्शन किया करते थे, गांधी परिवार के किसी सदस्य को धरना नहीं देना पड़ता था,वह इसे अपने लायक काम नहीं समझते थे। गांधी परिवार के लोग राष्ट्रीय स्तर के बड़े कार्यक्रमों में ही जाया करते थे,शहरों के पांच दस हजार लोगों की उपस्थिति वाले कार्यक्रमों में नहीं जाते थे, इसे वह अपना अपमान समझते थे लेकिन राहुल गांधी शहरों में होने वाले गूंज कार्यक्रम में जाते हैं जहां मुश्किल से दस से पंद्रह हजार लोग रहते हैं। कांग्रेस गूंज कार्यक्रम का आयोजन शहर दर शहर करा रही है ताकि राहुल गांधी को जेनजी युवाओं का सबसे बड़ा नेता बनाया जा सके, दिखाया जा सके। जेनजी युवाओं का नेता बनना राहुल गांधी का सबसे महत्वाकांक्षी काम है, इस काम को वह बड़ी गंभीरता से कर रहे हैं। वह सोचते हैं कि कांग्रेस जो काम पिछले 12 साल में नहीं कर सकी है,मोदी को सत्ता से हटाने का काम,वह काम जेनजी कर सकता है, कई कांग्रेस नेता तो यह मानते हैं कि मोदी सरकार को झुकाने का,हराने का जो काम कांग्रेस नहीं कर सकी है, वह काम जेनजी ने किया है और आगे भी जो काम कांग्रेस नहीं कर सकती वह जेनजी ही कर सकता है। कांग्रेस और राहुल गांधी जेनजी को अलादीन का चिराग समझ रहे हैं,वह चाहेंगे कि जेनजी मोदी सरकार को सत्ता से हटा दे और जेनजी कांग्रेस के चाहने पर मोदी सरकार को सत्ता से हटा देगी। इसलिए जेन जी को प्रभावित करने के लिए राहुल गांधी वह सब काम करने को तैयार हैं जो काम उनके परिवार के किसी सदस्य ने करने के लिए नहीं सोचा। यह सच है कि जेनजी पिछले कुछ सालों में कई देशों में सत्ता से टक्कर ली है और सरकार को सत्ता से हटाने में अहम भूमिका निबाही है लेकिन यह भी सच है कि वह सब छोटे देश थे,कम जनसंख्या वाले देश थे, भारत जैसे 150 करोड़ की आबादी और कई देशों से बड़े राज्यों के कारण जेन जी बड़ी ताकत मानी तो जा रही है लेकिन इतनी बड़ी ताकत नहीं मानी जा रही है कि वह चुनाव में मोदी सरकार को हराने के लिए एकजुट होकर वोट देगी। भारत में हर राज्य की राजनीति अलग होती है, हर राज्य के मुद्दे अलग होते हैं, इसलिए जेनजी भी देश नहीं राज्य,जाति,भाषा,धर्म,विचारधारा,नेता,परिवार आदि के आधार पर बंटी रहती है और वह एकजुट होकर निर्णायक ताकत नहीं बन पाती है। राहुल गांधी सोचते हैं वह जेनजी को मोदी सरकार के खिलाफ एकजुट कर हराने में उनका उपयोग कर सकते हैं तो यह उनका वहम है।

सू- दोकू क्र.140

	3		7				2	1
2				9		4		
	7		1				5	
		1		5		2		7
	5				4			
		4		1		8		5
					1			
1		5		3		9		
	2		6		5		1	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.139 का हल

8	9	5	1	6	3	2	4	7
3	2	1	9	7	4	8	6	5
4	7	6	2	5	8	3	9	1
7	6	9	5	2	1	4	3	8
1	8	3	4	9	7	6	5	2
2	5	4	8	3	6	1	7	9
5	3	8	7	4	2	9	1	6
6	1	7	3	8	9	5	2	4
9	4	2	6	1	5	7	8	3

शब्द सामर्थ्य -140

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. तकलीफ, कष्ट, कठिनाई, परेशानी 3. सरल, सहज 6. ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा लेना 7. विवश, लाचार 8. अत्यधिक ठंडा, सुस्त 9. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 11. सूर्य, सूरज 13. वस्त्र आदि धारण कराना 15. अप्रसन्न, नाखुश 16. खिंचाव, आकर्षण 4. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 5. शक्ति (उ.) 18. एक रंग, आसमानी रंग 22. सेवा-सत्कार, आवभगत 23. सर्प, सांप, लकड़ी आदि की मूर्ति बनाना।

ऊपर से नीचे

1. हृदर, उर 2. शिष्टता, भद्रता, विवेक (उ.) 3. अंतत:, अंततोगत्वा आगमन, गमनागमन 7. पुरुष 8. घोड़े की तेज चाल, तेज गति की दौड़ 10. लूटपाट, डकैती 12. बवासीर, तबाही 14. नासिका, श्वसनइंद्रीय 17. आखेटक, अहेरी 19. योग्य, काबिल 20. कामदेव की पत्नी, प्रेम, आनंद 21. रात्रि, निशा।

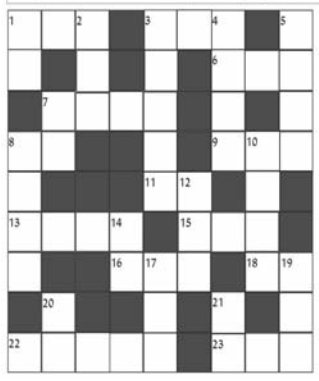

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 139का हल

चु	स्त		मु		सं	स्था	न	
ग		म	र्द्दा	न	गी		त	म
ली	प	ना			त	न		
	ना	ना					ज	
मा	ह		रा		सा	ज	न	
न		स	ह	दे	व		म	द
व		म		व	न	ज		ल
ता	क	त	व	र		मी		द
	ल	ल	क		क	र	त	ल

राजनीति

सहारनपुर में सपा-कांग्रेस की कलह खुली, 2027 से पहले बढ़ी वर्चस्व की जंग

अजय कुमार,वरिष्ठ पत्रकार,लखनऊ (उ. प्र.)

सहारनपुर की एक बैठक ने उत्तर प्रदेश के विपक्षी गठबंधन की उस तस्वीर को सामने ला दिया, जिसे अब तक बयानबाजी के बीच दबा हुआ माना जा रहा था। जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति यानी दिशा की बैठक में कांग्रेस सांसद इमरान मसूद और समाजवादी पार्टी के विधायक आशु मलिक आमने-सामने आ गए। मुद्दा जनता की समस्याओं का था, लेकिन बात सवाल पूछने की बारी से निकलकर राजनीतिक तेवरों तक पहुंच गई। अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के सामने हुई इस नोकझोंक का वीडियो सामने आया तो सहारनपुर की सियासत में हलचल मच गई।मंगलवार को विकास भवन सभागार में हुई बैठक में आशु मलिक अपनी विधानसभा से जुड़े मुद्दे उठा रहे थे। बेहड़ा संदल गांव में सड़क और अधूरे नाले का मामला सामने आया। विधायक का कहना था कि करीब चार साल पहले बनी सड़क के साथ नाला पूरा नहीं हुआ, जिससे पानी खेतों और कब्रिस्तान की तरफ जा रहा है। अधिकारी की ओर से जवाब आया कि नाला प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत नहीं आता। मलिक इससे संतुष्ट नहीं हुए और पुराने जवाब का हवाला देते हुए सवाल जारी रखा। यहीं से बैठक का माहौल गर्म होना शुरू हुआ। मलिक का तर्क सीधा था बैठक जनता के सवालों के लिए है और जनप्रतिनिधि सवाल नहीं पूछेंगे तो फिर कौन पूछेगा। वायरल वीडियो में वह जनता के मुद्दों को प्राथमिकता देने की बात कहते दिखे। दूसरी तरफ बैठक की अध्यक्षता कर रहे इमरान मसूद का कहना था कि सभी सदस्यों को बोलने का मौका मिलना चाहिए और प्रक्रिया के तहत बात रखी जानी चाहिए। मसूद ने मलिक को चेयर की अनुमति लेने की बात कही। मलिक ने इसका जवाब देते हुए बैठक को जनता के मुद्दों से जोड़ दिया। कुछ ही क्षणों में विकास की समीक्षा वाली बैठक राजनीतिक बहस में बदल गई।

इस टकराव की अहम बात यह है कि दोनों नेता एक-दूसरे के लिए नए नहीं हैं। इमरान मसूद और आशु मलिक के बीच लंबे समय से राजनीतिक खींचतान चली आ रही है। मई 2025 में यह विवाद खुलकर सामने आया था, जब मसूद ने सहारनपुर देहात सीट को लेकर कांग्रेस की सक्रियता के संकेत दिए थे। इसके बाद मलिक ने मसूद को खुली चुनौती दी थी। मसूद ने भी कांग्रेस को किसी की बैसाखी की जरूरत न होने की बात कही थी। उस समय सहारनपुर की सातों विधानसभा सीटों पर कांग्रेस को मजबूत करने की बात भी सामने आई थी। यहीं से आज की तस्वीर का असली मतलब समझ आता है। विवाद केवल यह नहीं है कि दिशा बैठक में कौन पहले बोला और किसने किसे रोका। असली सवाल सहारनपुर में राजनीतिक प्रभाव का है। इमरान मसूद 2024 में सहारनपुर लोकसभा सीट से कांग्रेस के टिकट पर जीतकर संसद पहुंचे। दूसरी तरफ आशु मलिक सहारनपुर देहात से सपा के विधायक हैं। दोनों अपने-अपने क्षेत्र में प्रभाव रखने वाले नेता हैं और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति में मुस्लिम वोट का महत्व किसी से छिपा नहीं है।यानी एक तरफ सांसद के रूप में मसूद की अपनी राजनीतिक जमीन है, तो दूसरी तरफ विधायक के रूप में मलिक की अपनी पकड़। दोनों दल गठबंधन में हैं, लेकिन स्थानीय राजनीति में दोनों नेताओं की प्राथमिकताएं हमेशा एक जैसी हों, यह जरूरी नहीं। 2027 का विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे करीब आएगा, यही स्थानीय समीकरण और ज्यादा महत्वपूर्ण होंगे। आशु मलिक की राजनीति भी साधारण नहीं रही है। वह समाजवादी पार्टी के भीतर लंबे समय से प्रभावशाली चेहरा रहे हैं और कभी शिवपाल यादव के करीबी माने जाते थे। बाद में अखिलेश यादव के साथ उनकी राजनीतिक नजदीकी बनी। 2017 में समाजवादी पार्टी के भीतर मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव के बीच चले संघर्ष के दौरान भी उनका नाम प्रमुखता से सामने आया था। ऐसे नेता के लिए अपने विधानसभा क्षेत्र की राजनीतिक जमीन छोड़ना आसान नहीं होगा। दूसरी तरफ इमरान मसूद की राजनीति भी कई पड़ावों से गुजरकर मौजूदा मुकाम तक पहुंची है। कांग्रेस से अलग होकर सपा और फिर बसपा में जाने के बाद वह 2023 में कांग्रेस में लौटे और 2024 में सहारनपुर से लोकसभा चुनाव जीत गए। ऐसे में सांसद बनने के बाद उनका राजनीतिक आत्मविश्वास बढ़ना स्वाभाविक

है। 2024 के चुनाव में सहारनपुर में कांग्रेस को करीब 44.6 फीसदी वोट मिले और मसूद ने भाजपा उम्मीदवार को लगभग 5.25 प्रतिशत के अंतर से हराया। यह जीत उन्हें स्थानीय राजनीति में मजबूत दावेदार बनाती है।यही वजह है कि 2027 की आहट के बीच सहारनपुर की यह खींचतान मामूली नहीं मानी जा सकती। गठबंधन में सीटों का तालमेल ऊपर से तय हो सकता है, लेकिन नीचे कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं के बीच तालमेल अलग कहानी कहता है। अगर दो सहयोगी दलों के प्रभावशाली नेता सार्वजनिक मंच पर एक-दूसरे की बात काटते दिखें तो उसका असर संगठन के कार्यकर्ताओं और संभावित चुनावी समीकरणों पर पड़ना तय है।हालांकि इमरान मसूद ने विवाद को बड़ा राजनीतिक टकराव मानने से इनकार किया है। उनका कहना है कि कोई झगड़ा नहीं हुआ था। बैठक की अध्यक्षता उनकी जिम्मेदारी थी और वह सिर्फ यह सुनिश्चित कर रहे थे कि सभी जनप्रतिनिधियों को बोलने का मौका मिले। उनके मुताबिक आशु मलिक ज्यादा समय ले रहे थे और वह दूसरे सदस्यों की बारी सुनिश्चित करना चाहते थे। बाद में उन्होंने संबंधित अधिकारी को मामले की पूरी जानकारी एक सप्ताह के भीतर बिंदुवार उपलब्ध कराने का निर्देश भी दिया।

यानी तस्वीर का दूसरा पहलू यह है कि जिस मुद्दे पर दोनों नेता भिड़े, वह वास्तव में जनता से जुड़ा था। सड़क, नाला, पानी, टैक्स और स्थानीय विकास जैसे सवाल किसी भी जनप्रतिनिधि के लिए राजनीतिक रूप से अहम हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब जनता के सवालों की लड़ाई नेताओं के आपसी वर्चस्व की लड़ाई जैसी दिखाई देने लगे।इस पूरे घटनाक्रम में इकरा हसन की मौजूदगी भी ध्यान खींचती है। सपा सांसद दोनों नेताओं के बीच हुई बहस के दौरान पास ही बैठी थीं। उन्होंने विवाद में हस्तक्षेप नहीं किया, लेकिन उनकी मौजूदगी ने तस्वीर को और बड़ा राजनीतिक अर्थ दे दिया। एक तरफ सपा का विधायक, दूसरी तरफ कांग्रेस का सांसद और बीच में गठबंधन की राजनीति सहारनपुर की बैठक ने विपक्षी एकता की जमीनी चुनौती दिखा दी।भाजपा को भी इस विवाद पर हमला करने का मौका मिल गया। पार्टी ने इसे सपा-कांग्रेस की अंदरूनी खींचतान और वर्चस्व की लड़ाई से जोड़ते हुए गठबंधन पर सवाल उठाए।लेकिन इस कहानी का सबसे बड़ा निष्कर्ष यही है कि सहारनपुर में लड़ाई सिर्फ आज की बैठक की नहीं है। यह आने वाले चुनाव की जमीन तैयार होने का संकेत है। जब एक सांसद और विधायक विकास बैठक में सवालों की बारी को लेकर भिड़ते हैं, तो उसके पीछे स्थानीय राजनीति, संगठनात्मक पकड़ और भविष्य की चुनावी दावेदारी की परतें भी होती हैं।सपा और कांग्रेस के लिए चुनौती यही है कि ऊपर के नेताओं की दोस्ती को नीचे के नेताओं की प्रतिद्वंद्विता में बदलने से कैसे रोका जाए। क्योंकि चुनावी गठबंधन सिर्फ सीटों के जोड़ से नहीं चलता। उसके लिए जमीन पर भरोसा, कार्यकर्ताओं में तालमेल और स्थानीय नेताओं के बीच न्यूनतम समन्वय जरूरी होता है।सहारनपुर की दिशा बैठक ने फिलहाल यही सवाल खड़ा किया है अगर 2027 से पहले ही गठबंधन के दो मजबूत चेहरे आमने-सामने आ गए हैं, तो चुनावी मैदान में सीटों और नेतृत्व की बारी आने पर क्या होगा? यही वह सवाल है, जिसका जवाब आने वाले महीनों में सहारनपुर की राजनीति तय करेगी।

मायावती भी चुनावी मूड में, भतीजे को कमान, सतीश मिश्रा को नई जिम्मेदारी

संजय सक्सेना,लखनऊ,वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 में अब छह माह का समय बचा है, इसको देखते हुए बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती ने अभी से जमीन तैयार करनी शुरू कर दी है। पार्टी के भीतर बीते कुछ हफ्तों में जो संगठनात्मक फेरबदल हुए हैं, उनसे साफ संकेत मिलता है कि बसपा इस बार कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। एक तरफ मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को संगठन और चुनाव प्रचार की अगुवाई सौंपी है, तो दूसरी तरफ पार्टी के भरोसेमंद ब्राह्मण चेहरे सतीश चंद्र मिश्रा का कद और बढ़ा दिया गया है। यह दोहरी रणनीति बसपा के सामाजिक समीकरण और पारिवारिक उत्तराधिकार, दोनों मोर्चों को साधने की कोशिश मानी जा रही है।बसपा में उत्तराधिकार को लेकर पिछले कुछ वर्षों में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है। एक समय मायावती ने आकाश आनंद को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, फिर विवादों के चलते उन्हें पार्टी पदों से हटाया भी गया। लेकिन विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही पार्टी ने उन्हें फिर से सक्रिय भूमिका में ला खड़ा किया है। अब आकाश आनंद राष्ट्रीय संयोजक के तौर पर सक्रिय हैं और उन्हें प्रत्याशियों के चयन की अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनकी अगुवाई में होने वाले कार्यकर्ता सम्मेलनों में संभावित उम्मीदवारों के नामों पर मुहर लगाई जाएगी। इस नई भूमिका के तहत आकाश आनंद ने 10 अगस्त को हाथरस के सादाबाद से अपने अभियान की शुरुआत की। इसके बाद 25 अगस्त को गौतमबुद्ध नगर के जेवर में भी उनकी अध्यक्षता में कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित होना तय है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, लखनऊ में हुई तीन दिवसीय बैठक के बाद यह फैसला लिया गया कि आकाश आनंद को अब यूपी और उत्तराखंड की राजनीति में सक्रिय भूमिका दी जाए, जबकि पहले उन्हें इन राज्यों की राजनीति से जानबूझकर दूर रखा गया था। पार्टी पदाधिकारियों का मानना है कि प्रचार अभियान की कमान संभालने से आकाश आनंद का सियासी कद और मजबूत होगा। हालांकि मायावती ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि टिकट बंटवारे का अंतिम और सर्वोच्च फैसला सिर्फ वही लेंगी। इसमें आकाश आनंद की कोई निर्णायक भूमिका नहीं होगी। राजनीतिक हलकों में इस बयान को शक्ति-संतुलन बनाए रखने की एक सोची-समझी कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। मतलब साफ है कि प्रचार और संगठन की जिम्मेदारी भतीजे को, लेकिन असली सत्ता की डोर अभी भी मायावती के हाथ में ही रहेगी। इसी बीच बसपा ने एक और अहम संगठनात्मक फैसला लिया है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा की जिम्मेदारियां और बढ़ा दी गई हैं। अब वे कानूनी और मीडिया से जुड़े कामकाज के

साथ-साथ चुनाव आयोग से संबंधित महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी संभालेंगे। मायावती ने खुद सोशल मीडिया पर लिखा कि यूपी विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारियों के तहत पार्टी का जनाधार सभी वर्गों में मजबूत किया जा रहा है, साथ ही प्रत्याशियों के चयन और उनकी घोषणा की प्रक्रिया भी विधानसभा-स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलनों के जरिए चल रही है। उन्होंने दावा किया कि बसपा की इन तैयारियों से विरोधी दलों में बेचैनी बढ़ गई है। सतीश चंद्र मिश्रा को दी गई यह नई जिम्मेदारी अचानक नहीं आई है। बसपा के लिए ब्राह्मण वोट बैंक हमेशा से एक अहम सामाजिक समीकरण रहा है, और मिश्रा दशकों से इस समीकरण के केंद्र में रहे हैं। लेकिन हाल के वर्षों में पार्टी के कई कद्दावर ब्राह्मण नेता एक-एक कर साथ छोड़ते गए हैं। पूर्व मंत्री नकुल दुबे 2022 में कांग्रेस में चले गए, पूर्व मंत्री रामवीर उपाध्याय, रंगनाथ मिश्रा और विनय शंकर तिवारी जैसे नेता भी पार्टी से दूर हो चुके हैं। हाल ही में बसपा के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री अनंत कुमार मिश्रा उर्फ अंटू मिश्रा को भी पार्टी-विरोधी गतिविधियों के आरोप में निष्कासित किया गया। दिलचस्प बात यह है कि अंटू मिश्रा को सतीश चंद्र मिश्रा का करीबी माना जाता रहा है, और चर्चा यह भी थी कि वे चुनाव से पहले किसी दूसरे दल का रुख कर सकते हैं। इन घटनाक्रमों के बीच बसपा की सियासी नर्सरी से ब्राह्मण नेताओं का लगातार खिसकना पार्टी के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे में मायावती का सतीश मिश्रा पर भरोसा जताना और उनकी जिम्मेदारियां बढ़ाना, इस बिखराव को थामने और बचे-खुचे ब्राह्मण जनाधार को एकजुट रखने की रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है। पार्टी अब पूरी तरह से मिश्रा के चेहरे और उनके संगठनात्मक अनुभव पर दांव लगाना चाहती है, ताकि सर्व समाज के जनाधार वाली अपनी पुरानी छवि को दोबारा मजबूत किया जा सके।

दोहरी रणनीति के मायने-मायावती की यह दोहरी रणनीति एक तरफ पारिवारिक उत्तराधिकार को संस्थागत रूप देना, दूसरी तरफ सामाजिक समीकरणों को संभालने के लिए अनुभवी चेहरों को आगे रखना और बसपा के भविष्य की दिशा तय करने वाली मानी जा रही है। आकाश आनंद के जरिए पार्टी युवा और सक्रिय नेतृत्व का संदेश देना चाहती है, जबकि सतीश मिश्रा के जरिए पार्टी अपने परंपरागत सामाजिक आधार और अनुभव को बरकरार रखने की कोशिश कर रही है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बसपा के लिए 2027 का चुनाव सिर्फ सत्ता की लड़ाई नहीं, बल्कि पार्टी के अस्तित्व से जुड़ा सवाल भी है। बीते कुछ चुनावों में लगातार कमजोर होते प्रदर्शन के बाद पार्टी को अपने कोर वोट बैंक के साथ-साथ नए सामाजिक समीकरण बनाने की जरूरत है। ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि आकाश आनंद की सक्रियता और सतीश चंद्र मिश्रा की नई भूमिका मिलकर बसपा के जनाधार को कितना विस्तार दे पाती है, और क्या पार्टी विरोधी दलों की उस बेचैनी को हकीकत में बदल पाती है, जिसका दावा मायावती खुद कर रही हैं।

राशिफल

मेष राशि-आज किस्मत आपके साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगी। कामकाज में शानदार सफलता मिलने के संकेत हैं और आपकी पुरानी मेहनत का असर अब साफ नजर आएगा। कोर्ट-कचहरी से जुड़े मामलों में भी राहत या जीत की खबर मिल सकती है। आपकी पहचान, प्रभाव और रुतबा बढ़ेगा। कारोबार में लंबे समय से चली आ रही परेशानियां अब धीरे-धीरे खत्म होंगी। परिवार के साथ बिताया समय मन को सुकून देगा और रिश्तों में भी गर्माहट बनी रहेगी।

वृषभ राशि-आज आपका मान-सम्मान बढ़ेगा और लोग आपकी कार्यशैली की तारीफ करेंगे। किसी खास सामाजिक कार्यक्रम में आपकी मौजूदगी आपको दूसरों से अलग पहचान दिला सकती है। जीवनसाथी के साथ रिश्तों में मिठास बढ़ेगी और पुरानी दूरियां भी कम होंगी। दिन कुल मिलाकर सुखद रहेगा, लेकिन सेहत के मामले में थोड़ी सावधानी जरूरी है। बाहर का तला-भुना या ज्यादा मसालेदार खाना खाने से बचें।

मिथुन राशि-आज का दिन थोड़ा उतार-चढ़ाव वाला रह सकता है। काम में छोटी सी लापरवाही भी परेशानी बढ़ा सकती है, इसलिए अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान रखें। किसी की नकारात्मक बातों को दिल पर न लें और अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखें। दोस्त आपका साथ देंगे, हालांकि कोई करीबी व्यक्ति आपको परेशान करने की कोशिश कर सकता है। लंबे समय से मन में दबी कोई इच्छा आज पूरी होने के संकेत हैं, जिससे मन काफी खुश होगा।

कर्क राशि-आज का दिन खुशियों और मनोरंजन से भरपूर रहेगा। दोस्तों या परिवार के साथ मस्ती करने और मन हल्का करने के कई मौके मिल सकते हैं। प्रॉपर्टी से जुड़ा कोई मामला थोड़ी चिंता दे सकता है, लेकिन भाई-बहनों का सहयोग आपको राहत दिलाएगा। मां के साथ किसी बात को लेकर गलतफहमी हो सकती है। इसे बहस का रूप देने के बजाय प्यार और बातचीत से सुलझाना बेहतर रहेगा।

सिंह राशि-आज आप अधूरे कामों को पूरा करने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे और अच्छे परिणाम भी हासिल करेंगे। कारोबार में किसी नए व्यक्ति के साथ साझेदारी की शुरुआत हो सकती है। संतान की सफलता से आपका मन गर्व और खुशी से भर जाएगा। हालांकि, किसी बड़े जोखिम में पैसा लगाने से बचें। अविवाहित लोगों की किसी खास व्यक्ति से मुलाकात हो सकती है। घर या वाहन खरीदने की योजना भी आगे बढ़ सकती है।

कन्या राशि-आज आपका आत्मविश्वास और साहस दोनों मजबूत रहेंगे। कुछ नया करने की इच्छा आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी और कारोबार में बदलाव या विस्तार की योजना बन सकती है। विद्यार्थियों के लिए दिन अच्छा रहेगा और परीक्षा के परिणाम उम्मीद के मुताबिक आ सकते हैं। मौसम बदलने का असर सेहत पर पड़ सकता है, इसलिए लापरवाही न करें। आपकी मेहनत का उचित फल मिलने के संकेत हैं।

तुला राशि-आज सुख-सुविधाओं और खुशियों से भरा दिन रह सकता है। घर के बड़े-बुजुर्गों का सहयोग मिलेगा और उनके मार्गदर्शन से महत्वपूर्ण फैसले लेना आसान होगा। अचानक यात्रा करनी पड़ सकती है, इसलिए अपने सामान और जरूरी दस्तावेजों का ध्यान रखें। लंबे समय से दिया हुआ उधार वापस मिलने की संभावना है। निवेश करते समय जल्दबाजी न करें। आय के किसी अतिरिक्त स्रोत से भी आर्थिक स्थिति बेहतर हो सकती है।

वृश्चिक राशि-आज किसी भी महत्वपूर्ण फैसले में जल्दबाजी करने के बजाय पूरी सोच-विचार से आगे बढ़ें। आपकी समझदारी ही आपको सही दिशा दिखाएगी। परिवार की जिम्मेदारियों को नजरअंदाज न करें। वैवाहिक जीवन में छोटी-मोटी खटास आ सकती है, लेकिन बातचीत और धैर्य से इसे संभाला जा सकता है। परिवार में किसी खुशी या शुभ समाचार से माहौल बेहतर होगा। भाई-बहनों का सहयोग आपके लिए काफी मददगार साबित होगा।

धनु राशि-आज कुछ उलझनें आपको परेशान कर सकती हैं। गुस्से में आकर कोई फैसला लेने से बचें, क्योंकि बाद में पछताना पड़ सकता है। विरोधी सक्रिय रह सकते हैं, इसलिए अपनी योजनाएं हर किसी के सामने साझा न करें। नया घर खरीदने की योजना है तो कागजात और कानूनी प्रक्रिया अच्छी तरह जांच लें। शेयर बाजार से जुड़े लोगों को लाभ मिल सकता है, लेकिन जोखिम का स्तर समझकर ही कदम बढ़ाएं। दोस्तों के साथ समय बिताने से मन हल्का होगा।

मकर राशि-आज का दिन थोड़ा मिला-जुला रहेगा। कामकाज में तकनीकी समस्या या किसी छोटी अड़चन के कारण रफ्तार धीमी पड़ सकती है। किसी भी काम को जल्दबाजी में न निपटाएं। जिम्मेदारियां बढ़ने से तनाव महसूस हो सकता है, इसलिए खुद के लिए भी थोड़ा समय निकालें। आराम और मानसिक शांति पर ध्यान देना जरूरी होगा। जीवनसाथी से किया हुआ कोई वादा पूरा करना न भूलें, इससे रिश्ते में भरोसा बना रहेगा।

कुंभ राशि-आज लंबे समय से अटके काम पूरे होने की संभावना है। आय बढ़ाने के नए रास्ते खुल सकते हैं और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पैतृक संपत्ति से लाभ मिलने के संकेत हैं। कोई पुराना कानूनी मामला भी आपके पक्ष में जा सकता है। कार्यक्षेत्र में अच्छी खबर मिलने से उत्साह बढ़ेगा। किसी दोस्त को आपकी जरूरत पड़ सकती है और आप उसकी मदद के लिए आगे आएंगे। आपकी यह मदद रिश्ते को और मजबूत करेगी।

मीन राशि-आज का दिन आपके लिए अनुकूल रहेगा। कामकाज में सुधार होने से मन हल्का और आत्मविश्वास मजबूत रहेगा। किसी पुराने मित्र से अचानक मुलाकात हो सकती है, जो आपके चेहरे पर मुस्कान ला देगी। जीवनसाथी से खुलकर बातचीत करने से मन का बोझ कम होगा। संतान के करियर को लेकर थोड़ी भागदौड़ करनी पड़ सकती है।

एक नजर

नौ दिन बाद नदी किनारे मिला लापता महिला का शव

जगदलपुर, 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। 15 अगस्त से लापता महिला की लगातार तलाश की जा रही थी जिसका शव आज इंद्रावती नदी के किनारे मिला है। जगदलपुर में इंद्रावती नदी में एक महिला का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। कोहकापाल इलाके में शव देखकर आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मृतका की उम्र करीब 55 से 60 साल बताई जा रही है और वह नयामुंडा की रहने वाली थी। महिला 15 अगस्त से लापता थी, जिसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट 16 अगस्त को बोधघाट थाने में दर्ज कराई गई थी। जांच में महिला के मिर्गी की मरीज होने की जानकारी भी सामने आई है। फिलहाल शव को कोतवाली थाना क्षेत्र से बरामद किया गया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

कलेक्टर जनदर्शन में सरोना के दिव्यांग को मिली त्वरित राहत

कांकेर 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कलेक्टर जनदर्शन में आवेदन लेकर पहुंचे नरहरपुर विकासखण्ड के सरोना निवासी दिव्यांग आवेदक श्री संजय कुमार मरकाम ने यह सोचा नहीं था कि अर्जी देते ही उसकी मांग तत्काल पूरी होगी। जनदर्शन के दौरान कलेक्टर श्री कुंदन कुमार को दिव्यांग श्री मरकाम ने बैटरी चलित ट्रायसिकल के लिए आवेदन दिया, जिस पर उन्होंने त्वरित संज्ञान लेते हुए उप संचालक समाज कल्याण को मौके पर बैटरी चलित ट्रायसिकल प्रदाय करने के निर्देश दिए। फलस्वरूप कलेक्टर ने आवेदक को मौके पर ही निःशुल्क ट्रायसिकल प्रदाय की। इस त्वरित कार्यवाही पर आवेदक ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय तथा जिला प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया। कलेक्टर ने स्पष्ट तौर पर निर्देशित किया है कि दिव्यांगों आवेदकों के प्रति संवेदनशीलता एवं प्रतिबद्धता दिखाते हुए उनकी मांगों को फैरी तौर पर संज्ञान में लिया जाए।

कलेक्टर श्री कुंदन कुमार ने सुनीं आम जनता की समस्याएं

कांकेर 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कलेक्टर श्री कुंदन कुमार ने आज आयोजित कलेक्टर जनदर्शन में जिले के दूरदराज इलाकों से आए ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं तथा उचित निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने आवेदकों के बीच जाकर न सिर्फ व्यक्तिगत रूप से बातचीत की, बल्कि उनकी समस्याओं व मांगों को गंभीरता से सुना। इसके पश्चात प्रत्येक आवेदन की समीक्षा करते हुए जिला स्तर के अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण निराकरण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर जनदर्शन में आज कुल 34 आवेदन प्राप्त हुए। जनदर्शन में प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि ग्रामीणों की समस्याओं व मांगों का त्वरित एवं स्पष्ट निराकरण किया जाए। साथ ही आवेदकों को यह भी साफ तौर पर बताएं कि वे पात्र हैं अथवा अपात्र। उन्होंने सभी अधिकारियों को ग्राम स्तर पर लगातार दौरा कर ग्रामीणों की समस्याओं के निराकरण में गंभीरता दिखाने की बात कही। साथ ही कार्यों में ईमानदारी और पारदर्शिता लाते हुए अंतिम छोर पर मौजूद लोगों तक शासन की योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया। इस दौरान कलेक्टर श्री कुंदन कुमार ने कहा कि कांकेर जिले का सर्वांगीण विकास उनकी पहली प्राथमिकता है, किंतु विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा तथा राजस्व प्रकरणों के निराकरण में फोकस रहेगा। कोयलीबेड़ा, आमाबेड़ा, अंतागढ़, दुर्गूकोंदल जैसे अंदरूनी क्षेत्रों का अब तक अपेक्षित विकास नहीं हुआ है, जहां खास तौर पर ध्यान देना होगा। इन गांवों में कैम्प लगाकर प्रत्येक ग्रामीण का आधार तथा जन्म प्रमाण पत्र बनाया जाना बेहद जरूरी है। कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि माह के प्रत्येक शुक्रवार को दूरस्थ ब्लॉक मुख्यालयों में स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी हकीकत से अवगत होने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी तथा जिला कार्यक्रम प्रबंधक दौरा करेंगें।

रावघाट माइन्स प्रभावित ग्रामों के ग्रामीणों ने कलेक्टर से भेंट कर रखीं समस्याएं

कांकेर 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। कलेक्टर श्री कुंदन कुमार से रावघाट माइन्स श्रमिक विकास समिति के सदस्यों ने आज सौजन्य भेंट की तथा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं व बहुप्रतीक्षित मांगों को लेकर आवेदन सौंपा। इस पर कलेक्टर ने कहा कि वे जल्द ही माइन्स प्रभावित ग्रामों का दौरा कर वहां के ग्रामीणों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुनेंगे व जिला प्रशासन द्वारा हरसंभव सहयोग किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सुदूर अंचल में निवासरत ग्रामीणों की समस्याओं का निराकरण उनकी पहली प्राथमिकता है। अंतागढ़ विकासखण्ड के रावघाट परियोजना क्षेत्र की 08 ग्राम पंचायतों के ग्रामीणों ने आज शाम को कलेक्टर श्री कुमार से सौजन्य भेंट की। माइन्स श्रमिक विकास समिति के श्री बंशीलाल दुग्गा, प्यारेलाल उसेण्डी, बीरसिंह गावड़े, हेमराज देहारी तथा संतोष सुखदेवे ने बताया कि अंतागढ़ से नारायणपुर मार्ग अत्यंत जर्जर हो गया है, जिसकी मरम्मत का कार्य वर्तमान में जारी है जिसके कारण उक्त मार्ग पर वाहनों का संचालन नहीं हो रहा है तथा ग्रामीणों आवाजाही बंद है।

शिक्षक रुद्र प्रसाद साहू की 25 वर्षों की सेवा, नवाचार और सामाजिक सरोकारों की मिसाल

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

कोंडागांव 25 अगस्त। शासकीय शिक्षा व्यवस्था में समर्पण, नवाचार और सामाजिक सरोकारों के साथ सेवाएं देने वाले शिक्षक रुद्र प्रसाद साहू

ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। 30 जनवरी 1999 को शिक्षक पद पर नियुक्त हुए रुद्र प्रसाद साहू वर्तमान में कन्या माध्यमिक विद्यालय, मूंगबाड़ी, विकासखंड केशकाल, जिला कोंडागांव में पदस्थ हैं।

अपने सेवा कार्यकाल में उन्होंने विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ-साथ उनके सामाजिक, मानसिक, नैतिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक विकास के लिए निरंतर प्रयास किए। विद्यालय में सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने, शाला विकास प्रबंधन समिति के सहयोग से विद्यालय की

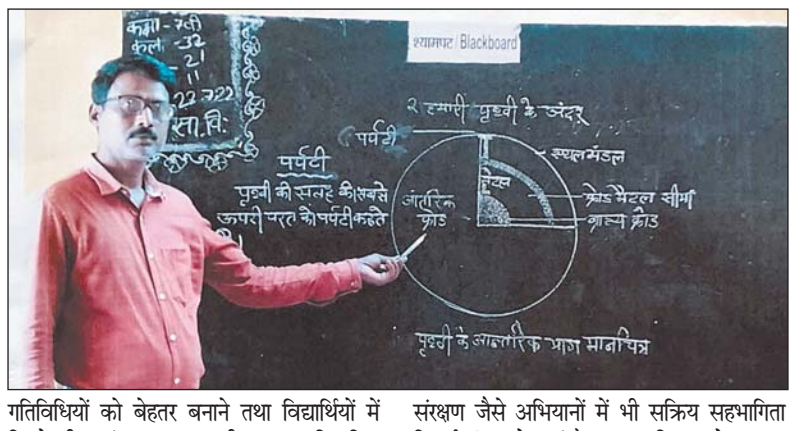

गतिविधियों को बेहतर बनाने तथा विद्यार्थियों में जिम्मेदारी एवं अनुशासन की भावना विकसित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ने हरित क्रांति, वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण जैसे अभियानों में भी सक्रिय सहभागिता निभाई। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से जुड़कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने में योगदान दिया। साथ ही स्थानीय भाषाओं के उपयोग के माध्यम से विद्यालयीन शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास किया। उनके सेवा कार्यों में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी , एफएलएन, निष्ठा प्रशिक्षण, कोविड-19 के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं, शिक्षक प्रशिक्षण तथा एनसीईआरटी से जुड़े विभिन्न प्रशिक्षणों में सहभागिता शामिल है। उन्होंने विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता बढ़ाने के लिए नई शिक्षण पद्धतियों को अपनाने पर भी जोर दिया। ने शिक्षा के साथ सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए पंचायत, विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में निर्वाचन संबंधी दायित्व, मतदाता जागरूकता, जनगणना कार्य तथा अन्य शासकीय कार्यक्रमों में भी जिम्मेदारीपूर्वक योगदान दिया। भारत जनगणना 2011 में प्रगणक के रूप में कार्य करने के साथ-साथ आगामी जनगणना संबंधी कार्यों के प्रशिक्षण में भी सहभागिता दर्ज की।

उनकी उपलब्धियों में विभिन्न शासकीय एवं प्रशिक्षण संस्थाओं से प्राप्त प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र एवं प्रशस्ति-पत्र भी शामिल हैं। कोविड महामारी के दौरान बच्चों की पढ़ाई निरंतर जारी रखने के लिए ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन में उनकी भूमिका रही। शिक्षा के क्षेत्र में बदलते समय के साथ स्वयं को अपडेट करते हुए उन्होंने नई शिक्षा नीति NEP 2020 के अनुरूप विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया।

का मानना है कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनाना भी शिक्षक का दायित्व है। उनका लक्ष्य विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगारोन्मुखी कौशल और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है।

उनकी सेवा यात्रा यह संदेश देती है कि एक समर्पित शिक्षक विद्यालय के साथ-साथ पूरे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

लाल आतंक से निकले आदिवासी, अब 'व्यवस्था के दानवों' ने लूटा आवास का सपना

46 लोगों का 18 लाख की राशि निकालकर कर डकार गए सचिव

राजकुमार कोण्डागुरला

बीजापुर 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी योजना प्रधानमंत्री आवास को इन दिनों जिले में पलीता लगाने का प्रयास किया जा रहा है। इंद्रावती नदी के पार कभी नक्सलियों की बंदूक के साए में रहकर खौफ का जीवन जीने वाले आदिवासियो को एक सचिव ने गुमराह कर आशियाने को छीनने का प्रयास किया है।

मिली जानकारी के मुताबिक भैरमगढ़ विकासखंड के ईतामपार पंचायत अंतर्गत बोड़गा गांव से सामने आए गंभीर आरोपों ने व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। ग्रामीणों का आरोप है कि जिस प्रधानमंत्री आवास योजना से उन्हें पक्की छत मिलने की उम्मीद थी, उसी योजना की पहली किश्त की राशि उनके खातों से निकलवा ली गई। आरोप है कि पंचायत सचिव द्वारा 46 हितग्राहियों को बैंक ले जाकर 18 लाख 25 हजार रुपये निकलवाए गए और उनके हाथ में महज 500-500 रुपये थमा दिए गए।

अब सवाल सिर्फ राशि का नहीं है, बल्कि उन गरीब आदिवासियों के सपनों का है, जिन्होंने कभी नक्सलियों के डर में जिंदगी बिताई और आज कथित तौर पर व्यवस्था के भीतर बैठे लोगों से अपने हक का हिसाब मांग रहे

बैंक ले गए, हाथ में थमा दिए सिर्फ500 रुपये: ग्रामीणों के अनुसार पंचायत सचिव कोमल देव निषाद उन्हें बैंक लेकर गए और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत खातों में आई प्रथम किस्त की राशि निकलवाई गई। ग्रामीणों का आरोप है कि कई हितग्राहियों के खातों से 40-40 हजार रुपये निकालने के बाद उन्हें केवल 500 रुपये दिए गए।

ग्रामीणों का दावा है कि इस तरह करीब 16.25 लाख रुपये की राशि हितग्राहियों के खातों से निकाली गई, लेकिन गांव में आवास निर्माण की स्थिति देखकर ग्रामीण खुद सवाल उठा रहे हैं। मामले से आक्रोशित ग्रामीण अब विधायक और जिला कलेक्टर से शिकायत कर पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच कराने की बात कह रहे हैं।

खुदाई तक सीमित निर्माण, पक्का मकान आज भी सपना: ग्रामीणों का कहना है कि कुछ स्थानों पर आवास निर्माण के नाम पर केवल जेसीबी से गड्ढे खुदवाए गए। इसके बाद निर्माण कार्य आगे नहीं बढ़ा। कई हितग्राहियों का आरोप है कि आठ माह बीतने के बावजूद उनके पक्के मकान का सपना कागजों और गड्ढों से आगे नहीं बढ़ पाया।

सरपंच के बयान ने बढ़ाई मुश्किलें: मामले में पंचायत की सरपंच बोटी कुंजाम के कथित बयान ने भी पूरे प्रकरण को और गंभीर बना दिया है। ग्रामीणों के

अनुसार सरपंच ने कहा कि पंचायत की ओर से कोई मकान निर्माण नहीं कराया जा रहा है और यह मामला सचिव एवं संबंधित लोगों के बीच का है। अब यदि पंचायत की ओर से मकान निर्माण नहीं कराया जा रहा था, तो फिर हितग्राहियों के खातों से निकाली गई राशि किसके पास गई और निर्माण कार्य क्यों नहीं हुआ? पंचायत सचिव किन नियमों के तहत ठेकेदारी करने के लिए स्वयं मकान बनवाने के लिए राशि निकलवाया।

लाल आतंक गया, लेकिन व्यवस्था की कथित लूट से कब मिलेगी आजादी: ईतामपार पंचायत और आसपास का क्षेत्र लंबे समय तक नक्सली प्रभाव और भय के साए में रहा है। इंद्रावती नदी के उस पार बसे इन गांवों में वर्षों तक विकास कार्यों को नक्सल समस्या के नाम पर बाधित बताया जाता रहा। ग्रामीणों को उम्मीद थी कि बदले हालात के साथ अब सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी बुनियादी सुविधाएं तेजी से पहुंचेंगी। मगर बोड़गा से सामने आए आरोपों ने ग्रामीणों को फिर निराश कर दिया है। ग्रामीणों का दर्द है कि पहले वे नक्सलियों के डर से परेशान थे, अब यदि सरकारी योजनाओं की राशि में ही कथित गड़बड़ी होगी तो गरीब आदिवासी आखिर किसके पास न्याय मांगने जाएं?

झिल्ली गांव में भी आवास का खेल: प्रधानमंत्री आवास योजना से जुड़े निर्माण कार्यों को लेकर झिल्ली गांव का मामला भी पहले सामने आ चुका है। वहां ग्रामीणों के आवास निर्माण के लिए इंद्रावती नदी से कथित रूप से अवैध रेत निकासी का मामला सामने आया था, जो खनिज विभाग के संज्ञान में है। ग्रामीणों का कहना है कि झिल्ली गांव में भी कई आवासों का निर्माण अब तक पूर्ण नहीं हुआ है। लगातार सामने आ रहे ऐसे मामलों ने पंचायतों में संचालित विकास कार्यों की निगरानी और जांच व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

यह मामला केवल कुछ रुपये की कथित वित्तीय अनियमितता का नहीं है। यह उन गरीब आदिवासी परिवारों के सपनों का सवाल है, जिन्होंने वर्षों तक कच्चे मकानों और असुरक्षित परिस्थितियों में जीवन बिताया है। अब बोड़गा के ग्रामीण पक्के मकान का सपना नहीं, बल्कि अपने ही खातों से निकाले गए 40 हजार रुपये का हिसाब मांग रहे हैं।

अब जिला प्रशासन की परीक्षा: मामले के सामने आने के बाद निगाहें अब जिला प्रशासन पर टिक गई हैं। क्या हितग्राहियों के बैंक खातों की जांच होगी? क्या निर्माण कार्यों का भौतिक सत्यापन कराया जाएगा? क्या जिम्मेदारों से जवाब मांगा जाएगा? या फिर गरीब आदिवासियों के हक का यह मामला भी जांच की फाइलों में दबकर रह जाएगा? लाल आतंक से निकले इन आदिवासियों का सवाल बेहद सीधा है–

हमें नक्सलियों से तो आजादी मिल गई, लेकिन हमारे हक और हमारे सपनों को लूटने वालों से आजादी कब मिलेगी? मामले में संबंधित पंचायत सचिव एवं अन्य जिम्मेदार पक्ष का बयान लेने की कोशिश की गई लेकिन खबर लिखे जाने तक पक्ष प्राप्त नहीं हुआ है। बयान मिलते ही उसे भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

बड़ा सवाल—जांच होगी या मामला फिर फाइलों में दब जाएगा

बोड़गा के आदिवासी हितग्राहियों की मांग साफहै। उनके बैंक खातों की जांच हो, निकाली गई राशि का पूरा हिसाब लिया जाए और प्रत्येक आवास स्थल का भौतिक सत्यापन कराया जाए।

- किस-किस हितग्राही के खाते से कितनी राशि निकाली गई?
- राशि किसके माध्यम से और किस उद्देश्य से निकाली गई?
- हितग्राहियों को वास्तव में कितनी राशि दी गई?
- आठ माह बाद भी निर्माण कार्य क्यों अधूरा है?
- योजना की निगरानी करने वाले जिम्मेदार अधिकारियों ने अब तक क्या कार्रवाई की?

मांझीपारा नाले के पास मिला अज्ञात महिला का शव, 3-4 दिन पुराना होने की आशंका

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बचेली 25 अगस्त। बड़े बचेली के मांझीपारा क्षेत्र में रविवार को नाले के पास करीब 30 से 35 वर्ष की अज्ञात महिला का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। प्रारंभिक तौर पर शव करीब 3 से 4 दिन पुराना होने की आशंका जताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, एक ग्रामीण रविवार दोपहर करीब 3 बजे बकरी चराने के लिए जंगल की ओर गया था। इसी दौरान उसकी नजर नाले के पास पड़े महिला के शव पर पड़ी। ग्रामीण ने तत्काल आसपास के लोगों और सरपंच को इसकी जानकारी दी। इसके बाद करीब 4:40 बजे पुलिस को सूचना दी गई।

सूचना मिलते ही पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए टीम को मौके पर भेजा। लगातार बारिश के कारण जंगल का रास्ता कीचड़ से भरा हुआ था। खेतों की मेड़ और फिसलन भरे रास्ते से होते हुए पुलिस और ग्रामीणों को शव तक पहुंचने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। प्रारंभिक तौर पर शव घुटनों के बल टिका हुआ दिखाई दे रहा था। पुलिस और ग्रामीणों की मदद से काफी प्रयास के बाद शव को जंगल से बाहर निकाला गया।

घटनास्थल से एक मोबाइल फोन भी बरामद हुआ है। पुलिस की प्रारंभिक जांच में मोबाइल में सिम कार्ड नहीं होने की बात सामने आ रही है। मोबाइल किसका है और इससे मृतका की पहचान या घटना की परिस्थितियों के संबंध में कोई सुराग मिलता है या नहीं, इसकी जांच की जा रही है। ग्रामीणों के अनुसार, मृत महिला को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह स्थानीय गांव की रहने वाली नहीं है। फिलहाल महिला की पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मॉर्चरी भेज दिया है। महिला की मौत किन परिस्थितियों में हुई, इसका खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट और पुलिस जांच के बाद ही हो सकेगा। फिलहाल पुलिस महिला की पहचान के साथ-साथ घटनास्थल से मिले मोबाइल सहित अन्य संभावित सुरागों की जांच कर रही है।

घायल जवानों से मिले वन मंत्री केदार कश्यप, बेहतर उपचार के दिए निर्देश

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

जगदलपुर, 25 अगस्त। वन मंत्री केदार कश्यप ने आज सोमवार को डिमरापाल स्थित कॉन्टिनेंटल अस्पताल पहुंचकर सड़क दुर्घटना में घायल जवानों से भेंट की और उनके स्वास्थ्य एवं उपचार की जानकारी ली। उन्होंने घायल जवानों के परिजनों से भी मुलाकात कर बातचीत कर हरसंभव सहयोग का भरोसा दिलाया। जवानों से मुलाकात के बाद मंत्री केदार कश्यप ने बताया कि सभी जवान कुशल हैं, और उनका उपचार जारी है। उन्होंने स्व. बलिराम कश्यप मेमोरियल मेडिकल कॉलेज सह अस्पताल के अधीक्षक डॉक्टर अनुरूप साहू एवं कॉन्टीनेंटल अस्पताल के एजीएम डॉ. संतोष कुमार सिंह से जवानों के स्वास्थ्य, उपचार एवं रिकवरी की स्थिति को लेकर चर्चा की और बेहतर से बेहतर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। गौरतलब है कि 23 अगस्त को वन मंत्री केदार कश्यप ग्राम फरसागुड़ा, भानपुरी से कोंडागांव में आयोजित कार्यक्रम के लिए रवाना हुए थे। भानपुरी थाना क्षेत्र में कोंडागांव की ओर से आ रही एक स्कॉर्पियो पायलट वाहन को पार करते हुए मंत्री के वाहन से टकराते हुए फॉलो वाहन से जा भिड़ी। दुर्घटना में फॉलो वाहन में सवार चालक एवं पुलिस जवान घायल हो गए थे। घटना के तत्काल बाद मंत्री श्री कश्यप ने घायलों को अस्पताल पहुंचाकर उनके उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित कराई थी। गंभीर रूप से घायल जवानों को बेहतर उपचार के लिए जगदलपुर रेफर किया गया था। जहा उनका उपचार जारी है।

सड़क हादसे में घायल जवानों से मिले वन मंत्री केदार कश्यप

जगदलपुर, 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने डिमरापाल स्थित कॉन्टिनेंटल अस्पताल पहुंचकर सड़क दुर्घटना में घायल जवानों का हालचाल जाना और उनके उपचार की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने घायल जवानों के परिजनों से भी आत्मीय बातचीत कर उन्हें ढांढस बंधाया और सरकार की ओर से हरसंभव सहयोग का पूरा भरोसा दिलाया। अस्पताल में डॉक्टरों से चर्चा के बाद मंत्री ने बताया कि सभी जवान सुरक्षित हैं और उनका समुचित इलाज जारी है।

बारिश से नदी-नाले उफान पर, जगरगुंडा-सिलगेर सहित कई मार्ग बंद

सुकमा, 25 अगस्त। जिले में पिछले 24 घंटे से लगातार हो रही बारिश के कारण जनजीवन प्रभावित हुआ है। कई नदी-नालों का जलस्तर बढ़ गया है और पुलों के ऊपर से पानी बह रहा है। इसके चलते अंदरूनी इलाकों के कई प्रमुख मार्गों पर आवाजाही बाधित हो गई है। प्रशासन नदी-नालों और पुल-पुलियों के जलस्तर पर लगातार नजर रख रहा है। लोगों से अपील की गई है कि उफनते नदी-नालों को पार करने की कोशिश न करें। पानी कम होने तक सुरक्षित स्थानों पर रहने और प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की सलाह दी गई है।

मिली जानकारी के अनुसार जगरगुंडा

से सिलगेर जाने वाले मार्ग पर नदी का पानी पुल के ऊपर से बह रहा है। इसके कारण इस मार्ग पर आवागमन पूरी तरह बंद हो गया है। वहीं बेदरे नदी भी उफान पर है। नदी का जलस्तर बढ़ने से आस-पास के इलाकों में लोगों की आवाजाही प्रभावित हुई है। दोरनापाल-जगरगुंडा मार्ग पर स्थित चिंतावागु नाला भी लगातार बारिश के कारण उफान पर है। नाले का पानी पुल के ऊपर से बहने के कारण इस मार्ग पर भी यातायात प्रभावित हुआ है। बारिश के चलते जिले की शबरी नदी का जलस्तर भी बढ़ गया है। बारिश का सिलसिला जारी रहने से नदी-नालों का पानी और बढ़ने की आशंका है। सबसे ज्यादा असर जिले के अंदरूनी इलाकों में आवागमन पर पड़ा है।

स्वास्थ्य विभाग की भर्ती निरस्त कर स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता देने विधायक विक्रम मंडावी ने लिखा पत्र

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर 25 अगस्त। बीजापुर विधायक विक्रम मंडावी ने स्वास्थ्य विभाग अंतर्गत जिला खनिज न्यास निधि (डीएमएफ) मद से संचालित भर्ती प्रक्रिया को लेकर कलेक्टर बीजापुर को पत्र लिखते हुए गंभीर सवाल उठाए हैं। विधायक ने भर्ती प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं और स्थानीय अभ्यर्थियों को अपेक्षित प्राथमिकता नहीं मिलने का मुद्दा उठाते हुए वर्तमान भर्ती प्रक्रिया को निरस्त कर पारदर्शी तरीके से कौशल परीक्षा आयोजित करने की मांग की है।

पत्र में कहा गया है कि इस प्रक्रिया के कारण स्थानीय अभ्यर्थी न्यूनतम अंक नहीं ला सके और उन्हें अनुत्तीर्ण कर दिया गया। विधायक ने इस बात पर भी सवाल उठाया कि विज्ञापन के जारी दिशा-निर्देशों में कौशल परीक्षा अथवा साक्षात्कार में

न्यूनतम अंक प्राप्त करने पर ही चयन होने का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया था।

विधायक ने पत्र में उल्लेख किया है कि जिले के स्थानीय अभ्यर्थियों ने अपने क्षेत्रीय अनुभव और योग्यता के आधार पर चयन में प्राथमिकता मिलने की अपेक्षा की थी। लेकिन बिना किसी पारदर्शिता के कौशल परीक्षा/साक्षात्कार के अंकों में बदलाव किए जाने की शिकायत सामने आई।

विधायक ने मांग की है कि यदि पारदर्शिता की दृष्टि से कौशल परीक्षा या साक्षात्कार का मूल्यांकन किया जाना था तो परीक्षा तिथि पर ही अभ्यर्थियों को उत्तर पुस्तिका दिखाकर और प्राप्त अंकों की जानकारी देकर आपत्ति दर्ज कराने का अवसर दिया जाना चाहिए था।

विधायक विक्रम मंडावी ने पत्र में भर्ती विज्ञापन के दिशा-निर्देशों का हवाला देते हुए कहा कि बीजापुर जिले के स्थानीय बेरोजगार अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दिए जाने का स्पष्ट उल्लेख किया गया था। साथ ही दिशा-निर्देश क्रमांक 13 के बिंदु 05 एवं 06 का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि सक्षम अधिकारी द्वारा जारी वैध मूल निवास प्रमाण पत्र अनिवार्य है तथा स्थानीय अभ्यर्थी उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में ही छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों के अभ्यर्थियों पर विचार किए जाने का प्रावधान है।

विधायक विक्रम मंडावी ने कलेक्टर से सभी बिंदुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की मांग की है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग अंतर्गत डीएमएफमद से संचालित वर्तमान भर्ती प्रक्रिया को निरस्त करते हुए पारदर्शी एवं निष्पक्ष तरीके से कौशल परीक्षा आयोजित कर स्थानीय बेरोजगार युवाओं को प्राथमिकता देने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है। विधायक का कहना है कि बीजापुर जैसे आदिवासी एवं दूरस्थ जिले के स्थानीय शिक्षित युवाओं को रोजगार के अवसरों में प्राथमिकता मिलनी चाहिए और भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी होनी चाहिए।

लगातार बारिश से इंद्रावती नदी का जलस्तर खतरे के निशान के ऊपर पहुंचा

जगदलपुर, 24 अगस्त। बस्तर और ओडिशा में लगातार हो रही झमाझम बारिश का असर अब इंद्रावती नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। जगदलपुर के पुराने पुलिया के ऊपर से भी पानी बहने लगा है। नदी-नाले उफान पर होने के चलते दर्जनों गांवों का संपर्क भी टूट चुका है। इंद्रावती नदी के साथ उसके सहायक नाले भी पूरी तरह उफान पर है, जिससे आस-पास के इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। लोग जान जोखिम में डालकर सड़क पार करते नजर आ रहे हैं। स्थिति को देखते हुए एसडीआरएफ को अलर्ट मोड पर रखा गया है। वहीं चित्रकोट भी अपने सवाब पर नजर आ रहा है नदी-नालों के उफान के चलते दर्जनों गांवों का संपर्क भी टूट चुका है, जिससे ग्रामीण इलाकों में आवाजाही प्रभावित हुई है। मौसम विभाग के मुताबिक अगले 7 दिनों तक प्रदेश में कहीं-कहीं मध्यम से भारी बारिश का दौर जारी रह सकता है। अगले 24 घंटे कुछ जगह भारी से अति भारी बारिश का अलर्ट है। गरज-चमक के साथ बिजली गिरने की भी आशंका है। यानी बारिश की गतिविधियों में फिलहाल बड़ी राहत मिलने की संभावना नहीं है।

नमो ड्रोन दीदी योजना से चित्ररेखा साहू के सपनों को मिली नई उड़ान

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

रायपुर, 25 अगस्त। नमो ड्रोन दीदी योजना ने बालोद जिले की चित्ररेखा साहू के जीवन में बदलाव की नई कहानी लिखी है। कभी घर-परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित रहने वाली चित्ररेखा आज आधुनिक कृषि तकनीक की जानकार बनकर किसानों के खेतों में ड्रोन से नैनो उर्वरकों के छिड़काव का कार्य कर रही हैं। आर्थिक आत्मनिर्भरता के साथ उन्हें एक नई सामाजिक पहचान भी मिली है। आज लोग उन्हें सम्मानपूर्वक 'ड्रोन दीदी' के नाम से जानते हैं।

चित्ररेखा साहू बताती हैं कि ड्रोन दीदी बनना उनके लिए केवल रोजगार का अवसर नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की नई शुरुआत है। आधुनिक कृषि यंत्र ड्रोन के माध्यम से किसानों के खेतों में नैनो उर्वरकों का छिड़काव कर वे कृषि क्षेत्र में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका निभा रही हैं। उनके लिए यह अनुभव गर्व का विषय है कि अब वे किसानों की मदद करने के साथ-साथ स्वयं भी आर्थिक रूप से सशक्त बन रही हैं।

आर्थिक आत्मनिर्भरता से पूरे हुए सपने

ड्रोन दीदी के रूप में काम शुरू करने के बाद चित्ररेखा की आय में सुधार हुआ। आर्थिक स्थिति बेहतर होने के बाद उन्होंने सबसे पहले अपने लिए स्कूटी खरीदी, जिससे उनकी आवाजाही आसान हुई और काम के प्रति आत्मविश्वास बढ़ा। इसके बाद उन्होंने अपने घर का निर्माण कार्य पूरा कराया। अब वे अपनी बेटी को बेहतर शिक्षा दिलाने और उसके उज्ज्वल भविष्य को संवारने के लिए भी आर्थिक रूप से सक्षम हैं।

चित्ररेखा साहू कहती हैं कि ड्रोन दीदी बनने के बाद उन्हें सबसे बड़ी उपलब्धि अपनी नई पहचान के रूप में मिली है। अब गांव और आसपास के क्षेत्र में लोग उन्हें उनके नाम के साथ-साथ 'ड्रोन दीदी' के रूप में भी पहचानते हैं। यह पहचान उनके लिए सम्मान, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन गई है। उनका कहना है कि महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए शासन द्वारा संचालित योजनाएं उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

महतारी वंदन योजना से छोटी जरूरतों का सहारा

चित्ररेखा साहू ने महतारी वंदन योजना का भी उल्लेख करते हुए कहा कि योजना से मिलने वाली आर्थिक सहायता महिलाओं की रोजमर्रा की छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने में सहारा देती है। उनके अनुसार, एक ओर ड्रोन दीदी योजना ने उन्हें आय और रोजगार का अवसर दिया है, वहीं महतारी वंदन योजना जैसी पहल महिलाओं को नियमित आर्थिक संबल प्रदान कर रही है। उनका मानना है कि महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने वाली ऐसी योजनाएं परिवार की खुशहाली और महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

'विष्णु भैया' को धन्यवाद, महिलाओं के हित में निरंतर प्रयासों की सराहना

ड्रोन दीदी चित्ररेखा साहू ने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे मुख्यमंत्री विष्णु भैया, हम महिलाओं के हित में निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए संचालित योजनाओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि शासन की योजनाओं से महिलाओं को आगे बढ़ने और अपने सपनों को पूरा करने के अवसर मिल रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को रक्षाबंधन पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं भी दीं।

महतारी वंदन से बदली सोच, बेटी के भविष्य के लिए हर महीने कर रहीं निवेश

रायपुर, 25 अगस्त। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय सरकार की महत्वाकांक्षी महतारी वंदन योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके परिवार के भविष्य को भी नई दिशा दे रही है। मुंगेली जिले के लोरमी विकासखंड के सुदूर वनांचल ग्राम चकदा की रहने वाली श्रीमती केशमती बैगा इसकी प्रेरक मिसाल बनकर उभरी हैं। मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करने वाली केशमती महतारी वंदन योजना से प्रतिमाह मिलने वाली एक हजार रुपये की सहायता राशि को खर्च करने के बजाय अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुकन्या समृद्धि योजना में नियमित रूप से जमा कर रही हैंआर्थिक रूप से सीमित संसाधनों के बावजूद केशमती ने यह साबित किया है कि छोटी-छोटी बचत भी भविष्य की बड़ी सुरक्षा बन सकती है। उनका मानना है कि आज की यह नियमित बचत आगे चलकर बेटी की शिक्षा, उच्च अध्ययन और अन्य आवश्यकताओं में मजबूत सहारा बनेगी।

महतारी वंदन योजना ने उन्हें न केवल आर्थिक संबल दिया है, बल्कि भविष्य के लिए योजनाबद्ध बचत करने का आत्मविश्वास भी प्रदान किया है।केशमती कहती हैं कि पहले नियमित बचत करना मुश्किल लगता था।

बैठक में सड़क मरम्मत से लेकर संस्थागत एग्रीस्टेक पंजीयन और आवारा पशुओं की रोकथाम पर जोर

महासमुंद, 25 अगस्त । कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने आज सुबह 10:00 बजे आयोजित समय-सीमा की बैठक में विभिन्न विभागों के लंबित प्रकरणों, शासकीय योजनाओं और विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्री सचिन भूतड़ा, श्री रवि साहू सहित सभी एसडीएम, तहसीलदार, जनपद पंचायत सीईओ, सीएमओ एवं जिला स्तरीय अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे।

कलेक्टर श्री लंगेह ने जिले में बारिश में क्षतिग्रस्त एवं मरम्मत योग्य सड़कों की स्थिति की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक मरम्मत कार्य शीघ्र कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आवागमन की सुविधा और सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए चिन्हांकित सड़कों की मरम्मत में अनावश्यक विलंब नहीं होना चाहिए। बारिश के कारण खराब हुई सड़कों का निरीक्षण कर आवश्यकतानुसार मरम्मत कार्य सुनिश्चित करने को कहा।बैठक में मुख्यमंत्री हेल्पलाइन के संबंध में भी समीक्षा की गई। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की जानकारी आम नागरिकों तक व्यापक रूप से पहुंचाई जाए। इसके लिए मैदानी स्तर पर प्रचार-प्रसार, ग्राम पंचायतों एवं अन्य माध्यमों का उपयोग करने को कहा गया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का वास्तविक स्थिति की जांच कर गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने सभी विभागीय अधिकारियों को नियमित रूप से पोर्टल में लॉगिन कर लंबित शिकायतों का त्वरित निपटारा सुनिश्चित करने तथा प्राप्त शिकायतों का समय-सीमा में निराकरण करने तथा शिकायतों की नियमित समीक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

कलेक्टर श्री लंगेह ने बाल संप्रेषण गृह की व्यवस्थाओं की समीक्षा करते हुए महिला बाल विकास विभाग के अधिकारियों को नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने बच्चों की सुरक्षा, भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की सतत निगरानी सुनिश्चित करने को कहा। साथ ही बाल संप्रेषण गृह में रिक्त पदों पर भर्ती की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए, ताकि संस्थान का संचालन बेहतर ढंग से किया जा सके। बैठक में बच्चों के आधार कार्ड पंजीयन की स्थिति की भी समीक्षा की गई। कलेक्टर ने कहा कि जिन बच्चों का आधार कार्ड अभी तक नहीं बना है, उनका चिन्हांकन कर पंजीयन की कार्रवाई शीघ्र पूरी की जाए। इसके लिए शिक्षा विभाग के साथ समन्वय स्थापित करते हुए 30 सितंबर तक लक्ष्य पूरा करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि स्कूल स्तर पर ऐसे बच्चों की जानकारी संकलित कर आवश्यक दस्तावेजों एवं पंजीयन की प्रक्रिया पूरी कराई जाए।कलेक्टर ने वीबीजी-रामजी ग्रामीण रोजगार से संबंधित कार्यों की भी समीक्षा की। उन्होंने ग्राम पंचायतों में स्वीकृत कार्यों की प्रगति, कार्य प्रारंभ होने की स्थिति तथा लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि की जानकारी ली।

एक नजर

दिव्यांग एवं मेडिकल फिटनेस प्रमाणपत्र 27 अगस्त को एक साथ बनाए जाएंगे

महासमुंद, 25 अगस्त । जिला चिकित्सालय महासमुंद (वर्तमान शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध चिकित्सालय महासमुंद) में संचालित मेडिकल बोर्ड द्वारा दिव्यांगजनों को दिव्यांग प्रमाणपत्र सत्यापन, नवीनीकरण एवं नवीन दिव्यांग प्रमाणपत्र तथा मेडिकल फिटनेस प्रमाणपत्र जारी किए जाते हैं।संयुक्त संचालक सह अस्पताल अधीक्षक, शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय संबद्ध चिकित्सालय ने बताया कि मेडिकल बोर्ड द्वारा सामान्यतः प्रत्येक बुधवार को दिव्यांग प्रमाणपत्र का सत्यापन, नवीनीकरण एवं नवीन प्रमाणपत्र जारी किया जाता है। वहीं प्रत्येक शुक्रवार को हितग्राहियों को मेडिकल फिटनेस प्रमाणपत्र जारी किया जाता है। 26 अगस्त 2026, बुधवार को ईद-ए-मिलाद (मिलाद-उन-नबी) तथा 28 अगस्त 2026, शुक्रवार को रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर सार्वजनिक, सामान्य अवकाश होने के कारण दिव्यांग प्रमाणपत्र एवं मेडिकल फिटनेस प्रमाणपत्र जारी करने की प्रक्रिया 27 अगस्त 2026, गुरुवार को एक साथ की जाएगी। जिले के दिव्यांगजन एवं संबंधित हितग्राही निर्धारित तिथि 27 अगस्त 2026, गुरुवार को मेडिकल बोर्ड के समक्ष उपस्थित होकर आवश्यक प्रमाणपत्र संबंधी कार्यवाही करा सकते हैं। यह व्यवस्था केवल 27 अगस्त 2026 के लिए लागू रहेगी।

विष्णु भैया के स्नेह से खिला चमेली का चेहरा,महतारी वंदन की 30 वीं किश्त की राशि से सजेगी भाई की कलाई

बलौदाबाजार भाटापारा, 25 अगस्त । जिले के ग्राम अर्जुनी की रहने वाली चमेली निषाद के लिए इस बार का रक्षाबंधन कुछ खास है। दमहतारी वंदन योजना की 30वीं किश्त की राशि मिलने से चमेली के चेहरे पर खुशी है। वह कहती हैं कि इस बार रक्षाबंधन पर भाई के लिए राखी खरीदने के लिए किसी से उधार नहीं लेना पड़ेगा। पहले आर्थिक तंगी के कारण त्योहार मनाने के लिए भी उधार लेना पड़ता था, लेकिन अब हर महीने मिलने वाली सहायता से उन्हें अपने परिवार की छोटी-बड़ी जरूरतें पूरी करने में सहारा मिल रहा है। दो बेटों की मां चमेली ने बताया कि अपने परिवार के साथ मेहनत-मजदूरी और समूह से जुड़कर काम करती हैं। उनके दोनों बेटे सरस्वती शिशु मंदिर, अर्जुनी में पढ़ाई कर रहे हैं। चमेली भावुक होकर कहती हैं ÷इस बार रक्षाबंधन अच्छे से मनाएंगे। महतारी वंदन की राशि से अपने भाई के लिए राखी खरीदूंगी। पहले पैसे नहीं होते थे तो उधार लेना पड़ता था, लेकिन अब अपने पैसों से त्योहार की खुशियां मनाएंगे। विष्णु भैया के सुशासन में हम महिलाएं बहुत खुश हैं।महतारी वंदन योजना की यह राशि चमेली के लिए सिर्फ आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि आत्मसम्मान के साथ अपने परिवार और त्योहार की खुशियां मनाने का संबल बन गई है।

खाद-बीज की भीषण किल्लत पर 650 से अधिक किसानों का फूटा गुस्सा

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर/भोपालपटनम 25 अगस्त। भोपालपटनम तहसील अंतर्गत मददेड़ क्षेत्र में डीएपी खाद और गुणवत्तापूर्ण बीज की भीषण किल्लत को लेकर किसानों का आक्रोश सोमवार को खुलकर सामने आया। मददेड़ एवं कोंगुपल्ली लैम्प्स क्षेत्र के किसानों ने एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर शासन-प्रशासन के खिलाफ नाराजगी जताई और खाद-बीज की तत्काल व्यवस्था करने की मांग की।

धरना प्रदर्शन के बाद आक्रोशित किसानों ने मुख्यमंत्री एवं जिला कलेक्टर के नाम तहसीलदार भोपालपटनम को ज्ञापन सौंपा। किसानों ने चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र खाद-बीज की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं की गई, तो वे आने वाले दिनों में उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे।

21 अगस्त की बैठक के बाद भी नहीं सुधरी व्यवस्था

किसानों ने ज्ञापन में बताया कि 21 अगस्त 2026 को मददेड़ में किसानों की बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें क्षेत्र में ष्ठ.क्र खाद की भारी कमी का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया था। बैठक के दौरान जिला विपणन अधिकारी बीजापुर एवं संबंधित अधिकारियों ने मददेड़ स्थित डबल लॉक गोदाम में खाद उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया था।

लेकिन किसानों का आरोप है कि आश्वासन के बावजूद न तो पर्याप्त मात्रा में खाद का भंडारण किया गया और न ही वितरण व्यवस्था सुचारू रूप से शुरू हो सकी। इससे किसानों में भारी नाराजगी है।

ऑनलाइन टोकन बना किसानों के लिए नई परेशानी

किसानों ने ऑनलाइन टोकन व्यवस्था पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि मददेड़ सहित ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क की समस्या लगातार बनी रहती है, जिसके कारण ऑनलाइन टोकन प्राप्त करना किसानों के लिए मुश्किल हो रहा है। कई किसान तकनीकी समस्या के चलते टोकन से ही वंचित रह जाते हैं।किसानों ने मांग की है कि जब तक नेटवर्क व्यवस्था बेहतर नहीं होती, तब तक पूर्व वर्षों की भांति पारदर्शी तरीके से ऑफलाइन टोकन जारी कर खाद का वितरण किया जाए।

मांग पूरी नहीं हुई तो होगा उग्र आंदोलन

ज्ञापन सौंपने पहुंचे मददेड़ एवं कोंगुपल्ली लैम्प्स क्षेत्र के किसानों और ग्रामीणों ने दो टूक शब्दों में चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर शीघ्र अमल नहीं किया गया और खाद-बीज की आपूर्ति तत्काल बहाल नहीं हुई, तो वे बड़ा और उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। किसानों ने कहा कि ऐसी स्थिति में उत्पन्न होने वाली किसी भी परिस्थिति की पूरी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी।

खेत में बोनी और फसल की चिंता है, हमें आश्वासन नहीं समय पर खाद चाहिए। यदि व्यवस्था नहीं सुधरी तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

अधिकारियों की लापरवाही से 650 से अधिक किसान परेशान

प्रदर्शनकारी किसानों का कहना है कि जिम्मेदार कृषि एवं विपणन अधिकारियों की कथित लापरवाही के कारण किसानों को सही समय पर ष्ठ.क्र खाद और गुणवत्तापूर्ण बीज नहीं मिल पा रहा है। क्षेत्र के करीब 650 से अधिक किसान खाद और बीज से वंचित हैं, जिससे उनकी फसल और कृषि कार्य गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं।किसानों ने कहा कि खेती के महत्वपूर्ण समय में खाद की कमी ने उनकी चिंता बढ़ा दी है। यदि समय रहते खाद उपलब्ध नहीं कराई गई तो फसल उत्पादन पर भी प्रतिकूल असर पड़ सकता है।

किसानों की प्रमुख मांगें

मददेड़ क्षेत्र में तत्काल पर्याप्त मात्रा में ष्ठ.क्र खाद एवं बीज का भंडारण कर वितरण शुरू किया जाए।

क्षेत्र की भविष्य की जरूरतों को देखते हुए 500 मीट्रिक टन क्षमता का डबल लॉक गोदाम बनाया जाए।

समय पर खाद-बीज उपलब्ध कराने में कथित लापरवाही बरतने वाले जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई कर उन्हें पद से हटाया जाए।

नेटवर्क की समस्या के कारण बाधित हो रही ऑनलाइन टोकन व्यवस्था में सुधार किया जाए।

किसानों की सुविधा के लिए पूर्व वर्षों की तरह पारदर्शी ऑफलाइन अथवा वैकल्पिक टोकन व्यवस्था से वितरण कराया जाए।

क्षेत्र की विशालता और किसानों की संख्या को देखते हुए आवश्यकतानुसार अतिरिक्त गोदामों का निर्माण कराया जाए।

स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रूरल कैटेगरी में जिले की केजीबीवी सुनसुनिया राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम

महासमुंद, 25 अगस्त । स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग के अंतर्गत महासमुंद जिले के बागबाहरा विकासखंड स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) सुनसुनिया ने राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। ग्रामीण श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए विद्यालय ने 92.5 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।यह उपलब्धि विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों, छात्राओं एवं समुदाय के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। विद्यालय द्वारा स्वच्छता, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण, ऊर्जा दक्षता एवं हरित परिसर निर्माण जैसी गतिविधियों को प्रभावी ढंग से संचालित किया जा रहा है। इन सतत प्रयासों के फलस्वरूप विद्यालय ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विद्यालय को योग्यता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा। साथ ही स्वच्छ एवं हरित गतिविधियों को और सुदृढ़ करने के लिए विद्यालय को 1 लाख रुपए की अतिरिक्त वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

चिंतावागु नदी में बारिश से बढ़ा जलस्तर तो नगर सेना ने बोट से ग्रामीणों को सुरक्षित पार कराया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बीजापुर, 25 अगस्त। जिले में लगातार हो रही बारिश के कारण नदी-नालों का जलस्तर बढ़ने से ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन प्रभावित हो रहा है। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में जिला प्रशासन एवं राहत-बचाव दल लगातार ग्रामीणों की मदद के लिए सक्रिय हैं। इसी क्रम में तहसील बीजापुर अंतर्गत ग्राम चिन्नाकवाली के पास स्थित चिंतावागु नदी में बढ़े जलस्तर और तेज बहाव के बीच नगर सेना की टीम ग्रामीणों के लिए सहारा बनकर सामने आई।नदी पार करना जोखिमभरा होने के बावजूद नगर सेना के जवानों ने मौके पर पहुंचकर बोट के माध्यम से ग्रामीणों को सुरक्षित नदी के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचाया। टीम ने विशेष रूप से अस्वस्थ व्यक्तियों को प्राथमिकता देते हुए उन्हें सुरक्षित तरीके से नदी पार कराया, ताकि वे आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं और उपचार तक पहुंच सकें।तेज बहाव और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच नगर सेना के जवानों ने पूरी सतर्कता एवं सावधानी के साथ बोट का संचालन किया। जवानों की तत्परता और मानवीय संवेदनशीलता से ग्रामीणों को बड़ी राहत मिली।

मुश्किल घड़ी में ग्रामीणों के साथ खड़ा प्रशासन

बारिश के मौसम में जिले के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नदी-नालों के उफान पर आने से आवागमन प्रभावित होना आम समस्या बन जाती है। इसे देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा राहत एवं बचाव दलों को लगातार सक्रिय रखा गया है, ताकि किसी भी आपात स्थिति में ग्रामीणों को तत्काल सहायता उपलब्ध कराई जा सके।चिन्नाकवाली के पास चिंतावागु नदी में नगर सेना की टीम द्वारा किया गया यह सराहनीय प्रयास प्रशासन की संवेदनशीलता और सेवा भावना का उदाहरण है। संकट की इस घड़ी में सहायता मिलने पर ग्रामीणों ने नगर सेना के जवानों के प्रति आभार व्यक्त किया। चिंतावागु नदी में नगर सेना की यह पहल उसी जिम्मेदारी और जनसेवा की भावना को दर्शाती है।

कलेक्टर ने खेत पहुंच कर स्वयं किया डिजिटल क्रॉप सर्वे

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार, 25 अगस्त । वर्तमान खरीफ सीजन में किसानों द्वारा लागए गए फसल व रकबे की शुद्धता हेतु जिले मे डिजिटल क्रॉप सर्वे का कार्य किया जा रहा है। कलेक्टर कुलदीप शर्मा सोमवार को तहसील लवन अंतर्गत ग्राम पनगांव के एक किसान के खेत पहुंचे। इस दौरान उन्होंने रिमझिम बारिश के बीच डिजिटल क्रॉप सर्वे कार्य का निरीक्षण किया और स्वयं मोबाइल से क्रॉप सर्वे का सत्यापन किया।

इस दौरान उन्होंने भूमिस्वामी किसान सनोज सिंह से खसरा नंबर 1369/48 जमीन मे लगे फसल और गिरदावरी के सम्बन्ध मे पूछ ताछ की।उन्होंने डिजिटल क्रॉप सर्वे की उपयोगिता की जानकारी दी।उन्होंने राज्य शासन द्वारा धान के बदले अन्य फसल पर आदान सहायता राशि की भी जानकारी दी।

उन्होंने पटवारी से गांव मे कुल खसरे एवं अब तक की गई सत्यापन की जानकारी ली। धीमे प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए तय समय पर सभी खसरो क सत्यापन पूर्ण कराने एवं शुद्धता पूर्वक गिरदावरी कराने के निर्देश दिये।कलेक्टर श्री शर्मा ने सर्वेयर को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी खसरों का शुद्धतापूर्ण सर्वे किया जाए और बीच मे कोई खसरा न छूटे।बताया गया कि इस बार डिजिटल क्रॉप सर्वे हेतु आंकड़ों को सटीकता और विश्वनीयता बनाए रखने हेतु एआई का प्रयोग किया गया है जिसमें सर्वेयरों के फेस आधारित ई- केवायसी कार्य किया जाना ताकि फर्जी सर्वेयरों को रोका जा सके।एंगल बेस्ड कवरेज सिस्टम विकसित किया गया है ताकि गलत प्लॉट में सर्वे न किया जा सके।सर्वे के दौरान प्लॉट का धुँधला फोटो या अस्पष्ट फोटो ऐप द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकेगा ताकि पटवारी को अनुमोदन के समय फसल की स्पष्ट फोटो अवलोकन के लिए प्रदर्शित हो। यदि संभव हो तो सर्वेयर द्वारा संबंधित कृषक की फोटो भी लेने के निर्देश प्रशिक्षण में दिये गये है ।

ग्राम पैजनी में आयोजित शिविर में

कलेक्टर ने हितग्राहियों को आवास की चाबी एवं जॉब कार्ड वितरित किया

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

बलौदाबाजार,24 अगस्त । कलेक्टर कुलदीप शर्मा ने सुध्घर छत्तीसगढ़ अभियान के तहत तहसील लवन के ग्राम पैजनी में आयोजित शिविर का सोमवार को औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आयुष्मान कार्ड बनाने और प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत पंजीयन में प्रगति लाने संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को सख्त निर्देश दिये।कलेक्टर ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि योजना से छूटे हुए सभी पात्र हितग्राहियों को शतप्रतिश लाभ दिलाना सुनिश्चित किया जाए, ताकि कोई भी जरूरतमंद वंचित न रहे। इस शिविर क उद्देश्य है कि सभी 31 योजनाओं का संतृप्तिकरण हो। उन्होंने कहा कि शिविर के एक दिन पूर्व छूटे हुए हितग्राहियों से संपर्क कर शिविर की जानकारी दें और योजना क लाभ दिलाएं। इस दौरान उन्होंने उपस्थित ग्रामीणों से पटवारी,सचिव ew ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी की नियमित उपस्थिति, पीडीएस दुकान, आंगनबाड़ी केन्द्र एवं स्कूलों की जानकारी ली। उन्होंने प्राथमिक स्कूल पहुंच मार्ग मरम्मत एवं शौचालय की साफ -सफाई दुरस्त करने के निर्देश दियेकलेक्टर ने आंगनबाड़ी मे दर्ज मध्यम एवं गंभीर कुपोषित बच्चों की संख्या तथा सुपोषित बचपन अभियान अंतर्गत पौष्टिक लड्डू वितरण की जानकारी ली।उन्होंने गंभीर कुपोषित बच्चों को एनआरसी मे भर्ती कराने और नियमित लड्डू वितरण के निर्देश दिये। इसीतरह पीएम आवास निर्माण के सम्बन्ध मे भी जानकारी ली।बताया गया कि ग्राम मे 248 आवास स्वीकृत है जिसमें से 148 पूर्ण हो गये हैं।शिविर मे 10 हितग्राहियों को जॉब कार्ड एवं पीएम आवास पूर्ण करने वाले 5 हितग्राहियों को आवास की चाबी प्रदान की गई। वृद्धवस्था पेंशन,दिव्यांग पेंशन एवं मोटराइज्ड ट्राईसिक के लिये तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिये गये। इस दौरान जनपद अध्यक्ष सुलोचना यादव,सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल, एसडीएम प्रकाश कोरी, तहसीलदार पेखन टोंड्रे सहित अन्य अधिकारी एवं बड़ी संख्या मे ग्रामवासी उपस्थित थे।

कावड़ यात्रा से क्षेत्र हुआ शिवमय, झुरानदी से 18 किलोमीटर पैदल चलकर शिवधाम पर्वत पहुंच कावड़ियों ने जटाशंकर महादेव का किया जलाभिषेक

■ तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता

डोंगरगढ़, 25 अगस्त। सावन मास के पावन अवसर पर डोंगरगढ़ बोलबम जटाशंकर कावड़ यात्रा संघ के बैनर तले आयोजित भव्य कावड़ यात्रा के डोंगरगढ़ पहुंचने से पूरा क्षेत्र शिवमय हो उठा। चिचोला समीप स्थित श्रीराम मंदिर झुरानदी से पवित्र जल लेकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु लगभग 15 किलोमीटर की पैदल यात्रा करते हुए डोंगरगढ़ के प्रसिद्ध शिवधाम पर्वत स्थित श्री जटाशंकर मंदिर पहुंचे। इस दौरान पूरा मार्ग भगवान भोलेनाथ के जयकारों और 'बोल बम' के उद्घोष से गूंजता रहा। कावड़ियों ने जटाशंकर महादेव के शिवलिंग पर पवित्र जल अर्पित कर क्षेत्र, समाज और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की।

कावड़ यात्रा में पुरुषों के साथ बड़ी संख्या में महिलाओं और युवाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्रद्धालु भगवा वस्त्र धारण कर, हाथों में कावड़ लिए नंगे पांव यात्रा करते दिखाई दिए। यात्रा के दौरान भक्ति, आस्था और सनातन संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला। ग्रामीण क्षेत्रों से होते हुए कावड़ यात्रा जैसे-जैसे डोंगरगढ़ की ओर आगे बढ़ी, श्रद्धालुओं में उत्साह बढ़ता गया।

झुरानदी से विधि-विधान से भरा जल

कावड़ यात्रा का शुभारंभ चिचोला समीप झुरानदी स्थित श्रीराम मंदिर परिसर में पूजा-अर्चना के साथ हुआ। श्रद्धालुओं ने विधि-विधान से पूजा कर पवित्र जल कावड़ में भरा और भगवान शिव के जयकारों के साथ डोंगरगढ़ के लिए प्रस्थान किया। लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पैदल तय करने के बाद कावड़िए डोंगरगढ़ पहुंचे। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं का जगह-जगह स्वागत किया गया।

डोंगरगढ़ पहुंचने पर शक्ति वाहिनी की बहनों द्वारा कावड़ यात्रियों का पुष्पवर्षा कर आत्मीय स्वागत किया गया। स्वागत से श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह दिखाई दिया। पूरे वातावरण में हर-हर महादेव और बोल बम के जयकारे गूंजते रहे।

वरिष्ठ भाजपा नेता एवं कावड़िया वेदराम ताम्रकार ने कहा कि कावड़ यात्रा हमारी सनातन संस्कृति, धार्मिक आस्था और भगवान शिव के प्रति अटूट श्रद्धा का प्रतीक है। ऐसे धार्मिक आयोजन नई पीढ़ी विशेषकर युवाओं को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने का कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि कावड़ यात्रा जैसे आयोजन समाज में आपसी भाईचारा, एकता और धार्मिक भावना को मजबूत करते हैं।कावड़िया अशोक वर्मा ने कहा कि 15 किलोमीटर की पैदल यात्रा पूरी कर शिवधाम पर्वत तक पहुंचना श्रद्धालुओं के लिए आस्था और तपस्या का विषय है। श्रीमती किरण साहू उपाध्यक्ष जिला पंचायत राजनादगांव ने कह पैदल चलने के बाद पर्वत पर चढ़कर भगवान जटाशंकर महादेव का जलाभिषेक करना आसान नहीं है, लेकिन भगवान शिव के प्रति श्रद्धा के सामने कठिनाइयां छोटी हो जाती हैं। उन्होंने कहा कि मंदिर पहुंचकर भगवान शिव का जलाभिषेक करने के बाद मन को जो शांति और संतोष प्राप्त होता है, वह शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

जटाशंकर मंदिर ट्रस्ट ने किया कावड़ियों का स्वागत

श्री जटाशंकर मंदिर ट्रस्ट समिति के अध्यक्ष सोन कुमार सिन्हा एवं अन्य पदाधिकारियों ने कावड़ यात्रा के डोंगरगढ़ पहुंचने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व वर्षों की तरह इस वर्ष भी कावड़ियों का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि भगवान जटाशंकर महादेव के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था लगातार मजबूत हो रही है और सावन के दौरान दूर-दूर से श्रद्धालु यहां पहुंचकर पूजा-अर्चना करते हैं।

मंदिर ट्रस्ट समिति के कार्यकारी अध्यक्ष जितेंद्र ठाकुर ,विशाल सुराणा, प्रेमा ए ने कहा कि कावड़ यात्रा में महिलाओं और युवाओं की बढ़-चढ़कर भागीदारी विशेष रूप से सराहनीय रही। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक एकता और सनातन परंपराओं को मजबूत करने का संदेश देते हैं।

श्रावण के अंतिम सोमवार को अमरकंटक पहुंचे उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा

रायपुर, 25 अगस्त। श्रावण मास के अंतिम सोमवार के पावन अवसर पर उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक श्री विजय शर्मा ने मध्यप्रदेश के पवित्र तीर्थस्थल अमरकंटक पहुंचकर मां नर्मदा के दर्शन किए। उन्होंने नर्मदा उद्गम स्थल स्थित नर्मदा कुंड में विधिवत पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की। इसके पश्चात उन्होंने जलेश्वर महादेव मंदिर पहुंचकर भगवान भोलेनाथ का पूजन किया और प्रदेश एवं प्रदेशवासियों के कल्याण की प्रार्थना की। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने नर्मदा कुंड एवं नर्मदा उद्गम स्थल के पवित्र परिसर में पूजा-अर्चना कर मां नर्मदा का आशीर्वाद लिया। श्रावण मास के अंतिम सोमवार को अमरकंटक में श्रद्धा और आस्था का विशेष वातावरण रहा। इस दौरान श्री शर्मा ने धार्मिक अनुष्ठानों के साथ जनकल्याण की भावना को सर्वोपरि रखते हुए प्रदेश की सुख-शांति और समृद्धि की कामना की।

अमरकंटक प्रवास के दौरान उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा कांवड़ियों के बीच भी पहुंचे। उन्होंने मृत्युंजय आश्रम में कांवड़ियों को भोजन प्रसादी वितरित की और उनके साथ बैठकर प्रसादी ग्रहण की। इस दौरान उन्होंने श्रद्धालुओं से आत्मीय बातचीत कर उनकी कांवड़ यात्रा, यात्रा मार्ग और उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। कांवड़ियों के साथ सहजता से संवाद करते हुए उन्होंने उनकी यात्रा के अनुभव भी सुने। उल्लेखनीय है कि अमरकंटक से भोरमदेव मंदिर तक लगभग 150 किलोमीटर की कांवड़ यात्रा को सुगम, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाने के लिए उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा के निर्देश पर विशेष व्यवस्थाएं की गई हैं। यात्रा मार्ग पर कांवड़ियों की सुविधा के लिए स्वास्थ्य, सुरक्षा, भोजन और रात्रि विश्राम सहित आवश्यक इंतजाम किए गए हैं। कांवड़ियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए यात्रा मार्ग में चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। वहीं सुरक्षा व्यवस्था के लिए पुलिस अधिकारियों के साथ पुलिस पेट्रोलिंग दल भी तैनात किए गए हैं, ताकि श्रद्धालुओं को यात्रा के दौरान किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। अमरकंटक स्थित मृत्युंजय आश्रम में कांवड़ियों के लिए निःशुल्क भोजन एवं रात्रि विश्राम की व्यवस्था की गई है। यहां श्रद्धालुओं को दाल-भात, सब्जी के साथ खीर, पूरी और हलवा सहित भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है। इससे लंबी कांवड़ यात्रा पर निकले श्रद्धालुओं को विश्राम के साथ पौष्टिक भोजन की सुविधा मिल रही है। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि कांवड़ियों की सुविधा और सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। सावन माह के इस पवित्र अवसर पर भोरमदेव से अमरकंटक तक श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ी कांवड़ यात्रा को सुगम बनाने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं, ताकि सभी भक्तजन श्रद्धा, उत्साह और सुरक्षित वातावरण में अपनी कांवड़ यात्रा पूरी कर सकें।

एक नजर

पंजीकृत महिला श्रमिकों से दीदी ई-रिक्शा सहायता के लिए आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार, 25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। छत्तीसगढ़ शासन श्रम विभाग के अंतर्गत छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मण्डल के तहत दीदी ई-रिक्शा सहायता योजनांतर्गत पंजीकृत महिला श्रमिक जिनका निरंतर 3 वर्ष पूर्व का जीवित पंजीयन हो उनसे आवेदन आमंत्रित किया गया है। ऐसे महिला पंजीकृत श्रमिकों को ई-रिक्शा दिये ये जाने के उद्देश्य से क्रयमूल राशि का 60 प्रतिशत् या अधिकतम राशि रू 1,50,000 जो भी कम हो अनुदान विभाग द्वारा दिए जाने का प्रावधान है। हितग्राही का पंजीयन कार्ड, बैंक से लोन प्राप्त करने संबंधी दस्तावेज, आधार कार्ड,ड्राईविंग लायसेंस एवं बैंक पास बुक की प्रति आवश्यक है।ऐसे पंजीकृत महिला श्रमिक जो विगत 03 वर्षो से मंडल अंतर्गत पंजीकृत हो वे प्रत्येक जनपद पंचायतों में स्थित श्रम संसाधन केन्द्रों, विभाग के वेबसाईट Shramevjayate.cg.gov.in, श्रमेव जयते ऐप या श्रम कार्यालय के कक्ष क्रमांक 117 कलेक्टर परिसर तथा च्वॉइस सेन्टर के माध्यम से आवेदन प्रस्तुत कर सकते है ।

जिले में अब तक 870.3 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

बलौदाबाजार,25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। जिले में चालू मानसून के दौरान 1 जून से 24 अगस्त 2026 तक 870.3 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। भू-अभिलेख कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार अब तक तहसील टुण्डरा में 1107 मिमी, बलौदाबाजार में 965.5 मिमी, पलारी में 915.5 मिमी, लवन में 855 मिमी, सुहेला 832.6 मिमी, सिमगा में 821 मिमी, कसडोल 802.6 मिमी, भाटापारा में 800.9 मिमी एवं सोनाखान 733 मिमी. वर्षा दर्ज की गई है। इस तरह कुल 7833.1 मिमी वर्षा अभी तक दर्ज की गई है जिसकी औसत वर्षा 870.3 मिमी है।

अवैध शराब की बिक्री एवं तस्करी करने वालों पर सख्त कार्रवाई

बलौदाबाजार,25 अगस्त। (तरुण छत्तीसगढ़ संवाददाता)। पुलिस अधीक्षक श्री गौरव राय के कुशल निर्देशन में जिले में अवैध रूप से शराब की बिक्री, तस्करी एवं नशे के कारोबार पर रोकथाम हेतु पुलिस द्वारा लगातार विशेष चेकिंग एवं रेड कार्यवाही अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में दिनांक 23.08.2026 को थाना सिटी कोतवाली बलौदाबाजार पुलिस टीम द्वारा मुखबीर की सटीक सूचना पर तड़के सुबह त्वरित कार्यवाही करते हुए बलौदाबाजार नगर के अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर अवैध रूप से शराब बिक्री करने वाले 03 आरोपियों को रंगे हाथों पकड़ा गया।

1. अपराध क्र. 705/2026: आरोपी योगेश सायर पिता सम्मत सायर, उम्र 32 वर्ष, निवासी अटल आवास (जिला अस्पताल के सामने) बलौदाबाजार को जिला अस्पताल के सामने ठेले में अवैध शराब रखते पकड़ा गया। आरोपी के कब्जे से 35 पौवा (15 पौवा रोमियो व 20 पौवा शोले) देशी मसाला शराब जुमला 6.300 बल्क लीटर, कीमती ?3,500 जप्त किया गया।

2. अपराध क्र. 706/2026: आरोपी गजाधर प्रसाद कुर्रे पिता उदय राम कुर्रे, उम्र 50 वर्ष, निवासी पंचशील नगर बलौदाबाजार को जिला अस्पताल पास लक्की होटल में अवैध शराब बिक्री हेतु रखते पकड़ा गया। आरोपी के कब्जे से 34 पौवा शोले देशी मसाला शराब जुमला 6.120 बल्क लीटर, कीमती ?3,400 जप्त किया गया। थाना सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा तीनों मामलों में आरोपियों के विरुद्ध धारा 34(2) आबकारी एक्ट के तहत पृथक-पृथक अपराध पंजीबद्ध कर आरोपियों को गिरफ्तार किया गया एवं विधिवत माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया की गई है। बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस द्वारा अवैध शराब एवं नशीले पदार्थों का कारोबार करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही आगे भी लगातार जारी रहेगी।

श्रमिक परिवारों के बच्चों को मिल रही उत्कृष्ट शिक्षा,उनके सपनों को पंख देना हमारी प्राथमिकता : मुख्यमंत्री साय

रायपुर, 25 अगस्त। श्रमिक हमारे विकास की मजबूत नींव हैं। अपने परिश्रम से वे सड़कें, भवन, पुल और विकास की अनेक संरचनाएं खड़ी करते हैं। ऐसे श्रमिक परिवारों के बच्चों को अच्छी शिक्षा और जीवन में आगे बढ़ने के समान अवसर देना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। श्रमिक परिवारों के बच्चे पढ़-लिखकर आगे बढ़ेंगे, अपने सपनों को पूरा करेंगे, तभी विकसित छत्तीसगढ़ और विकसित भारत का संकल्प भी साकार होगा।मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित अटल उत्कृष्ट शिक्षा योजना के सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए यह बात कही।

समारोह में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने योजना के अंतर्गत अध्ययनरत बच्चों से आत्मीय संवाद किया और शिक्षा, खेल, कला तथा सह-शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित कर उनका उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न श्रमिक कल्याण योजनाओं के अंतर्गत 1 लाख 45 हजार 841 श्रमिकों को 39 करोड़ 67 लाख रुपये से अधिक की सहायता राशि डीबीटी के माध्यम से सीधे उनके बैंक खातों में अंतरित की गई। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि श्रमिक परिवारों के बच्चों को आज व्यवस्थित यूनिफॉर्म में, आत्मविश्वास के साथ अंग्रेजी में संवाद करते और शिक्षा के साथ खेल तथा अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इन बच्चों का आत्मविश्वास इस बात का प्रमाण है कि उचित अवसर और अच्छी शिक्षा मिले तो कोई भी परिस्थिति प्रतिभा को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। उन्होंने कहा कि अटल उत्कृष्ट शिक्षा योजना की शुरुआत पिछले वर्ष 100 बच्चों के साथ की गई थी। इस वर्ष इसका विस्तार करते हुए 200 बच्चों को योजना के अंतर्गत प्रतिष्ठित निजी आवासीय विद्यालयों में शिक्षा का अवसर दिया गया है। प्रदेश के सभी 33 जिलों से चयनित प्रतिभावान बच्चे राजकुमार कॉलेज, दिल्ली पब्लिक स्कूल और रुंगटा पब्लिक स्कूल जैसे प्रतिष्ठित विद्यालयों में कक्षा 6वीं से 12वीं तक निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन विद्यालयों में अपने बच्चों को पढ़ाना कभी श्रमिक परिवारों के लिए कठिन सपना हुआ करता था, आज राज्य सरकार उस सपने को साकार कर रही है। अटल उत्कृष्ट शिक्षा योजना केवल बच्चों को अच्छे विद्यालयों में प्रवेश दिलाने की योजना नहीं है, बल्कि उन्हें बेहतर वातावरण, आत्मविश्वास और अपने सपनों को पूरा करने के लिए समान अवसर देने की पहल है। मुख्यमंत्री श्री साय ने प्रदेश और देश के निर्माण में श्रमिकों के योगदान को नमन करते हुए कहा कि शहरों की ऊंची इमारतों से लेकर गांवों की सड़कों तक और बड़े पुलों से लेकर विकास की अनेक अधोसंरचनाओं के पीछे श्रमिकों का परिश्रम है। सरकार का दायित्व है कि राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले श्रमिकों और उनके परिवारों के जीवन में सुरक्षा, सम्मान और समृद्धि सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि श्रम विभाग के तीन मंडलों के माध्यम से श्रमिकों के कल्याण के लिए 67 प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मातृत्व सहायता, दिव्यांग सहायता, पेंशन, कौशल उन्नयन, रोजगार और आवास सहित जीवन के विभिन्न चरणों में सहायता देने वाली योजनाएं शामिल हैं। सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि इन योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से पात्र श्रमिकों तक पहुंचे और सहायता राशि सीधे उनके बैंक खातों में जमा हो।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने बाबाघाट धाम में किया रुद्राभिषेक

रायपुर 25 अगस्त। लोरमी के श्री बाबाघाट धाम में आज पावन श्रावण मास के अंतिम सोमवार को आस्था और विकास का सुंदर संगम देखने को मिला। उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने लोरमीवासियों के साथ परम पूज्य श्री श्री 108 शिवानंद जी महाराज के पावन सानिध्य में भगवान भोलेनाथ का विधिवत रुद्राभिषेक किया। इस दौरान उन्होंने महादेव से सभी के सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की। रुद्राभिषेक के बाद श्री साव ने मंदिर परिसर के सौंदर्यीकरण एवं उन्नयन कार्यों का लोकार्पण किया। भंडारे में श्रद्धालुओं को प्रसाद भी वितरित किया। उन्होंने कहा कि 'विरासत भी, विकास भी' की सोच के साथ लोरमी की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का कार्य किया जा रहा है। सौंदर्यीकरण के बाद बाबाघाट का स्वरूप भव्य और आकर्षक हुआ है। श्रद्धालुओं को यहां स्वच्छ, शांत और भक्तिमय वातावरण मिलेगा। श्री साव ने कहा कि श्री बाबाघाट धाम लोरमी का प्राचीन धार्मिक स्थल है। वर्षों से यहां साधु-संत पूजन, हवन एवं विश्राम करते रहे हैं। समय के साथ यह स्थल जीर्ण-शीर्ण हो गया था। अब इसके सौंदर्यीकरण और उन्नयन से नया स्वरूप मिला है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने काशी कॉरिडोर और उज्जैन में महाकाल लोक कॉरिडोर का निर्माण किया। अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम का भव्य मंदिर बनाया गया।

ग्राम बैहरसरी की संगीता डहरिया हुनर को स्वरोजगार में बदल कर बनी लखपति दीदी

रायपुर, 25 अगस्त । कभी घर की चारदीवारी तक सीमित रहने वाली कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखंड के ग्राम बैहरसरी की संगीता डहरिया आज ग्रामीण महिला सशक्तिकरण की सशक्त पहचान बन गई हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में संचालित बिहान (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन) से जुड़ने के बाद उन्होंने अपने हुनर को स्वरोजगार में बदला और आज 'लखपति दीदी' के रूप में न केवल अपने परिवार की आर्थिक रीढ़ बनी हैं, बल्कि गांव की अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत भी बन चुकी हैं।

संगीता आज अपने गांव में सफलतापूर्वक ब्यूटी पार्लर संचालित कर रही हैं और इससे प्रतिमाह लगभग 10 हजार रुपये की नियमित आय अर्जित कर रही हैं। बिहान के माध्यम से उन्हें ऋण सुविधा उपलब्ध हुई, जिसने उनके छोटे व्यवसाय को नई गति दी। बढ़ती आय से वे परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ अपने बच्चों की शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए भी आर्थिक सहयोग कर रही हैं। उनकी बेटी कक्षा 11वीं और बेटा कक्षा 6वीं में अध्ययनरत है।

संगीता कहती हैं कि कभी उन्होंने नहीं सोचा था कि उनका हुनर एक दिन पूरे परिवार की आर्थिक ताकत बन जाएगा। वे भावुक होकर कहती हैं, आज मैं लखपति दीदी बन चुकी हूं। इसके पीछे हमारे विष्णु भइया का सहयोग और सरकार की योजनाओं का बड़ा योगदान है। उन्होंने हम जैसी लाखों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है। उनका कहना है कि पहले उनका अधिकांश समय केवल घरेलू कार्यों में बीतता था, लेकिन बिहान से जुड़ने के बाद उन्हें प्रशिक्षण, वित्तीय सहयोग और आत्मविश्वास मिला। यही अवसर उनके जीवन का निर्णायक मोड़ साबित हुआ। आज वे सम्मानजनक आय अर्जित कर रही हैं और अपने पैरों पर मजबूती से खड़ी हैं। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से संचालित ''बिहान'' जैसी योजनाएं प्रदेश में बदलाव की नई इबारत लिख रही हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आजीविका, वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और स्वरोजगार के अवसर मिल रहे हैं, जिससे हजारों महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार और समाज की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। संगीता डहरिया की सफलता इस बात का सशक्त प्रमाण है कि अवसर, आत्मविश्वास और सरकारी सहयोग मिल जाए तो गांव की महिलाएं न केवल अपने सपनों को साकार कर सकती हैं।

शपथ पत्र

मैं निकिता कावडे उम्र 23 साल पति अरुण कुमार कावडे जाति गोंड़ निवासी सोनामगर छिपलीपारा पो. सिहावा तहसील नगरी विकासखण्ड नगरी जिला धमतरी छ.ग. एतद् द्वारा पूर्णतः पुष्टि करता हूं और निम्नानुसार घोषित करती हूं:-

मेरा सही नाम निकिता कावडे (NIKITA KAVDE) है जो मेरे विवाह के पश्चात् मेरे शासकीय दस्तावेज पर अंकित है।

आधार कार्ड क्रमांक 6766 6200 3405 में मेरा नाम निकिता यादव (NIKITA YADAV) अंकित है जो त्रुटिपूर्ण है।

मेरे आधार कार्ड 6766 6200 3405 में अंकित त्रुटिपूर्ण नाम निकिता यादव (NIKITA YADAV) को सुधार करवाकर उनके स्थान पर सही नाम निकिता कावडे (NIKITA KAVDE) दर्ज व अंकित करवाना चाहती हूं। मैं यह शपथ पत्र अपने पूरे होशा हवास में रहकर हस्ताक्षर कर रही हूं तथा सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूं।

आधार कार्ड क्र. 9605 4419 1991 में अंकित मेरे नाम सुधार करने एवं सही नाम निकिता कावडे (NIKITA KAVDE) दर्ज व अंकित करने हेतु राजपत्र में प्रकाशन बाबत् यह शपथ पत्र निष्पादित कर रही हूं।

शपथकर्ता के हस्ताक्षर
निकिता कावडे

शपथ पत्र
नाबालिग पुत्र/पुत्री के नाम परिवर्तन के मामले में

मैं गोपाल गोड्डे (GOPAL GODDE) पिता का नाम राजैया गोड्डे(RAJAIYA GODDE) निवासी पोलेम तहसील भोपालपटनम जिला-बीजापुर (छ.ग.) एतदवारा पूर्णतः पुष्टि करता हूं। और निम्नानुसार घोषित करता हूँ।

मैं गोपाल गोड्डे (GOPAL GODDE) पिता का नाम राजैया गोड्डे (RAJAIYA GODDE), निवासी पोलेम तहसील भोपालपटनम जिला-बीजापुर (छ.ग.) का स्थायी निवासी हूं।

मैं अपने नाबालिग पुत्री/दशरू गोड्डे (DASHARU GODDE) से बदलकर पायल गोड्डे (PAYAL GODDE) करवाना चाहता हूँ।

अपने पुत्री का नाम बदलकर यदि कोई गैर कानूनी काम करता हूं तो उसके लिए स्वंय जिम्मेदार रहूंगा।

मुझे मेरी पुत्री का नाम बदलने में कोई आपत्ति नहीं है।

मैं यह शपथ पत्र अपने पूरे होशोहवास में रहकर हस्ताक्षर कर रहा हूं तथा सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।

शपथकर्ता के हस्ताक्षर
गोपाल गोड्डे

सत्यापन

मैं गोपाल गोड्डे (GOPAL GODDE) पिता का नाम राजैया गोड्डे (RAJAIYA GODDE), निवासी पोलेम तहसील-भोपालपटनम जिला-बीजापुर (छ.ग.) सत्य निष्ठापूर्वक शपथ करता हूं कि उपरोक्त शपथ पत्र कि कड़िका 01 से 05 तक सत्य व सही है आज दिनांक 21/08/2026 को स्थान बीजापुर में सत्यापित कर अपना हस्ताक्षर किया।

सत्यापन के हस्ताक्षर
गोपाल गोड्डे

प्रारूप-(तीन)
शपथ पत्र
नाबालिग पुत्र/पुत्री के नाम परिवर्तन के मामले में

मैं श्रीमती बुदरी लेकाम (माता/पिता पालक का नाम) सुपुत्र/पति स्व. बुधरू लेकाम निवासी ग्राम-पापनपाल, एतद द्वारा पूर्णतः पुष्टि करती हूं और निम्नानुसार घोषित करती हूं।

मैं ग्राम पापनपाल, तहसील बीजापुर, जिला बीजापुर (छ.ग.) का स्थायी निवासी हूं।

मैं अपने नाबालिग पुत्र/पुत्री सुदीप लेकाम (SUDEEP LEKAM) से बदलकर कुलदीप लेकाम (KULDEEP LEKAM) करवाना चाहती हूं।

मैं अपने पुत्र/पुत्री नाम का नाम बदलकर यदि कोई गैर कानूनी काम करता/करती हूं तो उसके लिए स्वयं जिम्मेदार रहूंगा/रहूंगी।

मैं अपने पुत्र/पुत्री सुदीप लेकाम (SUDEEP LEKAM) को हमारे/हमारी नाबालिग पुत्र/पुत्री के नाम बदलने में कोई आपत्ति नहीं है।

मैं यह शपथ पत्र अपने पूरे होशो हवास में रहकर हस्ताक्षर कर रहा/रही हूं तथा सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूं।

माता/पिता/पालक के हस्ताक्षर
बुदरी लेकाम

शपथ पत्र

मैं कृतिका तोड़ेम (KRITIKA TODEM) पिता तोड़ेम मांतैया (TODEM MANTAIYA) उम्र 20 वर्ष, निवासी ग्राम गोटाईगुड़ा, तहसील भोपालपटनम, जिला-बीजापुर, (छ.ग.) शपथ पूर्वक निम्न कथन करती हूं कि

मैं ग्राम गोटाईगुड़ा, तहसील-भोपालपटनम, जिला बीजापुर, (छ.ग.) की स्थायी निवासी हूँ।

मेरे पुराना नाम कृति तोड़ेम (KRITI TODEM) एवं पिता का नाम मान्तैया पुजारी (MANTAIYA PUJARI) है और मैं अपना नाम बदलकर कृतिका तोडेम (KRITIKA TODEM) एवं पिता का नाम तोड़ेम मांतैया (TODEM MANTAIYA) करवाना चाहती हूं।

मेरे पुराने नाम से किसी भी न्यायालय में कोई भी प्रकरण लंबित नहीं हैं और न ही किसी बैंक में ऋण की राशि शेष है।

मैं नाम बदलकर यदि कोई गैर कानूनी काम करती हूं, तो उसके लिए मैं पूर्णतः स्वयं जिम्मेदार रहूंगी।

मैं यह शपथ पत्र अपने पूरे होशोहवास में रहकर हस्ताक्षर कर रही हूं तथा सक्षम प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूं।

स्थान:- बीजापुर
दिनांक:- 14/08/2026

शपथकर्ता
कृतिका तोड़ेम

कार्यालय नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा जिला-रायपुर (छ.ग.)
क्रमांक/1796/न.पा./रा.वि./2026-27
तिल्दा-नेवरा दिनांक 24/08/26

ईश्तहार-सूचना

एतद् द्वारा आम सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्रीमती नसीमा बेगम पति मो. इरफान खान वार्ड क्र. 03 श्यामा प्रसाद मुखर्जी वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर निवासी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र कृष्णा लाईफस्टाईल कालोनी वार्ड क्र. 03 वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर में भूमि/भवन का मकान मय मलमा बिक्रीनामा एवं निम्न दस्तावेज संलग्न कर निकाय तिल्दा-नेवरा में हकहस्तांतरण हेतु आवेदन पेश किया गया हैं।

उक्त शपथ पत्र के आधार पर भवन/भूमि वार्ड क्र. 03 में स्थित हैं नगर पालिका डिमांड पंजी में नाम दर्ज नहीं है। नगर पालिका के कर अभिलेख में दर्ज किये जाने की मांग किया गया है। उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति हो तो वह ईश्तहार/विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर में दस्तावेज के साथ इस कार्यालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत अवधि बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक .... को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मोहर लगाकर जारी किया जाता हैं।

मुहर
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा

कार्यालय नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा जिला-रायपुर (छ.ग.)
क्रमांक/1798/न.पा./रा.वि./2026-27
तिल्दा-नेवरा दिनांक 24/08/26

ईश्तहार-सूचना

एतद् द्वारा आम सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मोहम्मद शाहिद पिता स्व. मोहम्मद शफीक वार्ड क्र. 11 गोंवर्धन नगर वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर निवासी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र श्रीमती सेहरा बेगम पति स्व. मोहम्मद शफीक वार्ड क्र. 11 वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर में भूमि/भवन का मकान मय मलमा बिक्रीनामा एवं निम्न दस्तावेज संलग्न कर निकाय तिल्दा-नेवरा में हकहस्तांतरण हेतु आवेदन पेश किया गया है।

उक्त शपथ पत्र के आधार पर भवन/भूमि वार्ड क्र. 11 में स्थित हैं नगर पालिका डिमांड पंजी में नाम दर्ज नहीं है। नगर पालिका के कर अभिलेख में दर्ज किये जाने की मांग किया गया है। उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति हो तो वह ईश्तहार/विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर में दस्तावेज के साथ इस कार्यालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकतें है। नियत अवधि बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक .... को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मोहर लगाकर जारी किया जाता हैं।

मुहर
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा

कार्यालय नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा जिला-रायपुर (छ.ग.)
क्रमांक/1800/न.पा./रा.वि./2026-27
तिल्दा-नेवरा दिनांक 24/08/26

ईश्तहार-सूचना

एतद् द्वारा आम सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री राकेश सोलहा पिता स्व. श्री मोहन सोलहा वार्ड क्र. 15 डॉ. खूबचंद बघेल वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर निवासी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र श्रीमती संतोषी सोलहा पति स्व. श्री मोहन सोलहा वार्ड क्र. 15 वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर में भूमि/भवन का मकान मय मलमा बिक्रीनामा एवं निम्न दस्तावेज संलग्न कर निकाय तिल्दा-नेवरा में हकहस्तांतरण हेतु आवेदन पेश किया गया है।

उक्त शपथ पत्र के आधार पर भवन/भूमि वार्ड क्र. 15 में स्थित है नगर पालिका डिमांड पंजी में नाम दर्ज नहीं है। नगर पालिका के कर अभिलेख में दर्ज किये जाने की मांग किया गया है। उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति हो तो वह ईश्तहार/विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर में दस्तावेज के साथ इस कार्यालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकते है। नियत अवधि बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक .... को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मोहर लगाकर जारी किया जाता हैं।

मुहर
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा

कार्यालय नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा जिला-रायपुर (छ.ग.)
क्रमांक/1802/न.पा./रा.वि./2026-27
तिल्दा-नेवरा दिनांक 24/08/26

ईश्तहार-सूचना

एतद् द्वारा आम सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्रीमती रधिया बाई पति स्व. श्री संतराम निषाद वार्ड क्र. 01 शंकर वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर निवासी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र श्री संतराम निषाद पिता श्री जोहन निषाद वार्ड क्र. 01 वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर में भूमि/भवन का मकान मय मलमा बिक्रीनामा एवं निम्न दस्तावेज संलग्न कर निकाय तिल्दा नेवरा में हकहस्तांतरण हेतु आवेदन पेश किया गया है।

उक्त शपथ पत्र के आधार पर भवन/भूमि वार्ड क्र. 01 में स्थित है नगर पालिका डिमांड पंजी में नाम दर्ज नहीं है। नगर पालिका के कर अभिलेख में दर्ज किये जाने की मांग किया गया है। उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति हो तो वह ईश्तहार/विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर में दस्तावेज के साथ इस कार्यालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत अवधि बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक .... को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मोहर लगाकर जारी किया जाता हैं।

मुहर
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा

कार्यालय नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा जिला-रायपुर (छ.ग.)
क्रमांक/1804/न.पा./रा.वि./2026-27
तिल्दा-नेवरा दिनांक 24/08/26

ईश्तहार-सूचना

एतद् द्वारा आम सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मोहम्मद आरीफ पिता स्व. तार मोहम्मद वार्ड क्र. 11 गोंवर्धन नगर वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर निवासी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र श्रीमती सेहरा बेगम पति स्व. मोहम्मद शफीक वार्ड क्र. 11 वार्ड तिल्दा-नेवरा जिला रायपुर में भूमि/भवन का मकान मय मलमा बिक्रीनामा एवं निम्न दस्तावेज संलग्न कर निकाय तिल्दा-नेवरा में हकहस्तांतरण हेतु आवेदन पेश किया गया हैं।

उक्त शपथ पत्र के आधार पर भवन/भूमि वार्ड क्र. 11 में स्थित है नगर पालिका डिमांड पंजी में नाम दर्ज नहीं है। नगर पालिका के कर अभिलेख में दर्ज किये जाने की मांग किया गया है। उपरोक्त संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति को कोई दावा/आपत्ति हो तो वह ईश्तहार/विज्ञापन प्रकाशन से 30 दिवस के अन्दर में दस्तावेज के साथ इस कार्यालय में उपस्थित होकर अपना दावा/आपत्ति पेश कर सकते हैं। नियत अवधि बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक .... को मेरे हस्ताक्षर एवं सील मोहर लगाकर जारी किया जाता हैं।

मुहर
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद
तिल्दा-नेवरा

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लो.नि.वि. वि./यां. संभाग नवा रायपुर छ.ग.
निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक. 2123/NIT-23/2026-27/व.ले.लि. नवा रायपुर दिनांक 21/08/2026

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार से निम्नालिखित मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है :-

एनआईटी क्र. निविदा क्र .	कार्य का नाम/ No of Calls	कार्य की अनुमानित लागत (लाख में)
23 T0075	Electrifucation work to sub Health Center At Tilda Bandha Simga Bhatapara Dist BalodaBazar CG प्रथम आमंत्रण	3.05
23 T0076	Electrification work to Sub Health Center at Tikuliya Bhatapara Dist BalodaBazar CG प्रथम आमंत्रण	3.05
23 T0077	Electrification work to Sub Health Center at Karmada Block Baloda Bazar Dist Balodabazar CG प्रथम आमंत्रण	3.05

नोट:- निविदा प्रपत्र हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि दिनांक 08/09/2026 अपरान्ह 5:30 बजे तक है। निविदा संबंधी शर्ते विभागीय वेबसाईट www.cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत निविदा प्रपत्र में उपलब्ध है। इनका अवलोकन संबंधित संभाग कार्यालय में किया जा सकता है।

शर्तें:- 1) उपरोक्त कार्यों के आबंटन प्राप्त होने पर ही नियामानुसार भुगतान की कार्यवाही की जावेगी।

कार्यपालन अभियंता
लो.नि.वि. वि./यां. संभाग
नवा रायपुर छ.ग.

जी-262702938/4

एक नजर

एटी ज्वेलर्स में सोने-चांदी की राखियों का कलेक्शन

रायपुर, 25 अगस्त। रक्षाबंधन के पावन पर्व को खास और यादगार बनाने के लिए अनोपचंद तिलोकचंद ज्वैलर्स प्रा. लि., ए.टी. पैलेस, कोतवाली चौक, रायपुर में सोने और चांदी की राखियों का आकर्षक एवं विशेष कलेक्शन उपलब्ध है। भाई-बहन के इस पवित्र रिश्ते को प्रेम, स्नेह और समृद्धि के प्रतीक के रूप में मनाने के लिए ज्वैलर्स द्वारा पारंपरिकता और आधुनिक डिजाइन का खूबसूरत संगम प्रस्तुत किया गया है। इस विशेष कलेक्शन में सोने की राखियां ?5, 000 से ?12, 000 तक तथा चांदी की राखियां ?350 से ?1, 350 तक की विभिन्न रेंज में उपलब्ध हैं। राखियों में आकर्षक डिजाइन, बेहतरीन फिनिशिंग और पर्व की भावना को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से तैयार किए गए विकल्प शामिल हैं। इस अवसर पर अनोपचंद तिलोकचंद ज्वैलर्स के चेयरमैन तिलोकचंद बरड़िया ने कहा कि, रक्षाबंधन केवल राखी बांधने का पर्व नहीं, बल्कि भाई-बहन के बीच प्रेम, विश्वास और स्नेह के अटूट रिश्ते का उत्सव है।

जीके इलेक्ट्रिक ने किया एडवाइजरी बोर्ड का गठन

रायपुर, 25 अगस्त। इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर निर्माण क्षेत्र की अग्रणी कंपनी जीके इलेक्ट्रिक ने अपने एडवाइजरी बोर्ड के गठन की आधिकारिक घोषणा की है। कंपनी ने ऑटोमोबाइल सेक्टर के दो बड़े और अनुभवी दिग्गजों, विजय चांदोरिकर और अभिजीत जोशी का संस्थापक सदस्यों के रूप में गर्मजोशी से स्वागत किया है। जीके इलेक्ट्रिक के चेयरमैन अमर पारवानी की अध्यक्षता में गठित यह बोर्ड, कंपनी के आगामी विस्तार, प्रोसेस डिसिप्लिन और लोकल मार्केट में स्थिति मजबूत करने के लिए मार्गदर्शन और विजन प्रदान करेगा। विजय चांदोरिकर के पास ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री का 40 से अधिक वर्षों का अनुभव है। वे 'पिएट सुंदरम ऑटो फाइनेंस' के प्रेसिडेंट एवं सीईओ के रूप में ऑटो फाइनेंस कंपनियों का नेतृत्व कर चुके हैं तथा 'पिएट इंडिया' में सेल्स एवं मार्केटिंग डायरेक्टर की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। पिछले दो दशकों में उन्होंने भारत, मिडिल ईस्ट और दक्षिण-पूर्व एशिया में ऑटो मैन्युफैक्चरिंग जाएंट्स को बिजनेस मैनेजमेंट, कमर्शियल ऑपरेशंस और प्रॉफिटेबिलिटी बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन दिया है।

अमेज़न डॉट इन पर रक्षाबंधन के लिए वन-स्टॉप डेस्टिनेशन

रायपुर, 25 अगस्त। त्योहारी सीज़न की शुरुआत करते हुए, अमेज़न डॉट इन भाई-बहनों के विशेष रिश्ते का जश्न मनाने और इस अवसर को यादगार बनाने के लिए राखियां, मनपसंद उपहार और त्योहारी ज़रूरतें एक साथ लेकर आया है। राखियों और पर्सनलाइज्ड हैंपर्स से लेकर स्वादिष्ट मिठाइयों, चॉकलेट्स और नवीनतम टेक गैजेट्स तक, रक्षाबंधन स्टोर हर भाई-बहन के लिए गिफ्टिंग विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करता है। ग्राहक फैशन, ब्यूटी, होम, किचन और अन्य श्रेणियों में बिबा, लिबास, मान्यवर, मेबेलिन, कैल्विन क्लेन, सेटाफिल, सैमसंग, एलजी, जेबीएल, सोनी, फुजीफिल्म इंस्टैक्स, फूल जैसे टॉप ब्रांड्स के त्योहारी उत्पाद भी खोज सकते हैं। इसके अतिरिक्त, प्राइम मेंबर्स देश भर में कुछ ही घंटों में, सेम-डे या नेक्स्ट-डे डिलीवर होने वाले 2 लाख से अधिक उत्पादों पर अतिरिक्त 5ब्र की बचत का लाभ ले सकते हैं। मनपसंद राखियों और त्योहारी ज़रूरतों से लेकर अंतिम समय के उपहारों तक, अमेज़न नाउ कई शहरों में मिनटों में डिलीवर होने वाले उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला के साथ रक्षाबंधन की खरीदारी को आसान बनाता है।

चौलेश्वर चंद्राकर राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग संघ के प्रदेश अध्यक्ष

रायपुर, 25 अगस्त। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग संघ ने संगठन विस्तार और पिछड़ा वर्ग समाज के हितों को मजबूती प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए डॉ. चौलेश्वर चंद्राकर को छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया है। इस संबंध में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग संघ की ओर से 23 अगस्त 2026 को नियुक्ति-पत्र जारी किया गया है। नियुक्ति-पत्र में डॉ. चौलेश्वर चंद्राकर को संगठन की प्रदेश इकाई की जिम्मेदारी सौंपते हुए उनसे संगठन को मजबूत, प्रभावशाली और व्यापक बनाने की अपेक्षा व्यक्त की गई है।

निधन

सुरेन्द्र बाकलीवाल

रायपुर, 25 अगस्त। एल.आई.जी.-99, दुर्गा मैदान के पीछे शंकर नगर निवासी आईबीसी24 के संवाददाता स्टार जैन एवं अनंत के पिता सुरेन्द्र बाकलीवाल (सुपुत्र स्व. मूलचंद बाकलीवाल) उम्र 67 वर्ष का निधन हो गया है। उनका अंतिम संस्कार देवेन्द्र नगर श्मशानघाट में किया गया।

उगमदेवी पगारिया

रायपुर, 25 अगस्त। विवेकानंद नगर निवासी उगमदेवी पगारिया (धर्मपत्नी स्वर्गीय माँगीलाल पगारिया) का निधन हो गया है. वे गजराज पगारिया एवं स्व. सुशील पगारिया की माता एवं प्रीयेश, श्रेयाश पगारिया की दादी थी। उनका अंतिम संस्कार मारवाड़ी श्मशान घाट में किया गया।

गणित शिक्षक की मांग को लेकर विद्यार्थियों ने स्कूल में जड़ा ताला

स्कूल के बाहर धरने पर बैठे बच्चे

आरंग, 25 अगस्त। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तामासिवनी में गणित शिक्षक की व्यवस्था नहीं होने से नाराज छात्र-छात्राओं ने स्कूल में तालाबंदी कर हड़ताल शुरू कर दी। बड़ी संख्या में विद्यार्थी स्कूल के बाहर बैठकर अपनी मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। विद्यार्थियों का कहना है कि गणित विषय के शिक्षक की कमी के कारण उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है और बार-बार शिकायत के बावजूद समस्या का समाधान नहीं किया गया।

शिकायत में बताया गया है कि विद्यालय में पदस्थ गणित व्याख्याता को अन्य स्थान पर संलग्न किए जाने के बाद से स्कूल में गणित विषय की नियमित पढ़ाई प्रभावित है। विद्यार्थियों और पालकों द्वारा संबंधित अधिकारियों को कई बार अवगत कराने के बावजूद अब तक शिक्षक की व्यवस्था नहीं होने पर छात्रों में नाराजगी बढ़ गई। शिकायत में विद्यालय में तालाबंदी की स्थिति, शिक्षकों की कमी सहित अन्य व्यवस्थाओं को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं। विद्यार्थियों ने मांग की है कि स्कूल में तत्काल गणित शिक्षक की व्यवस्था की जाए, ताकि उनकी पढ़ाई नियमित रूप से शुरू हो सके।

बताया गया कि छात्रों के आंदोलन के बाद मामले की जानकारी प्रशासन और शिक्षा विभाग तक पहुंची है। अब विद्यार्थियों की मांगों पर विभाग की कार्रवाई और स्कूल में शिक्षक की व्यवस्था का इंतजार है।

बढ़ते अपराध के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन

डीडी नगर थाने का किया घेराव, पुलिस की कार्यप्रणाली पर उठाए सवाल

रायपुर, 25 अगस्त। राजधानी रायपुर में बढ़ती आपराधिक घटनाओं को लेकर कांग्रेस ने पुलिस प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्रीकुमार शंकर मेनन के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने डीडी नगर थाने का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस नेताओं ने शहर में लगातार हो रही हत्या, नशे के कारोबार और अन्य आपराधिक घटनाओं को लेकर सरकार और पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए।

कांग्रेस का दावा है कि 1 अगस्त से 25 अगस्त के बीच राजधानी रायपुर में हत्या की 12 घटनाएं सामने आई है। पार्टी नेताओं का कहना है कि लगातार बढ़ रही आपराधिक घटनाओं से आम लोगों में भय का माहौल है। अपराधियों में पुलिस का खौफ नजर नहीं आ रहा है। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं ने हाल ही में डीडी नगर थाना क्षेत्र में सामने आए डबल मर्डर और बड़ी मात्रा में गांजा तस्करी के मामले का भी मुद्दा उठाया। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि राजधानी में अपराध और नशे का कारोबार लगातार बढ़ रहा है, लेकिन पुलिस इन पर प्रभावी तरीके से अंकुश लगाने में नाकाम साबित हो रही है।

अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग: डीडी नगर थाने के घेराव में जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्रीकुमार शंकर मेनन, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री कन्हैया अग्रवाल और पूर्व महापौर प्रमोद दुबे सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए। इस दौरान कांग्रेसियों ने पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और राजधानी में कानून-व्यवस्था मजबूत करने की मांग की। कांग्रेस जिलाध्यक्ष श्रीकुमार शंकर मेनन ने कहा कि राजधानी में लगातार सामने आ रही हत्या और नशे से जुड़ी घटनाएं चिंता का विषय हैं। उन्होंने पुलिस से अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और आम नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की।

छग में बढ़ते अपराध कमजोर सरकार की निशानी : कांग्रेस

रायपुर, 25 अगस्त। छत्तीसगढ़ में बढ़ते अपराध लचर और कमजोर सरकार की निशानी है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि तीन साल पहले शांत और सुरक्षित राजधानी में 20 दिन में 12 मर्डर हो गये तथा पिछले 24 घंटे में दो व्यक्तियों की अलग-अलग घटनाओं में चाकू से गोद कर हत्या कर दी गयी। सरकार और पुलिस मूक दर्शक बनी हुई। मुख्यमंत्री को किसी चीज से कोई मतलब नहीं। गृहमंत्री सिर्फ मीडिया की बयानबाजी में व्यस्त है। पुलिस कमिश्नरी केवल प्रचार के हथकंडे में लगी है। अपराधी बेखौफ हो कर अपराध को अंजाम दे रहे, आम शहरी डरा सहमा हुआ है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि कुछ दिन पहले राजधानी में महिला को रास्ते में रोक कर हत्या कर दी गई उसके बाद उसके शव के साथ दुष्कर्म हो गया। पिछले हफ्ते एक महिला के साथ एक दिन में दो बार गैंग रैप हो गया।

राजनांदगांव के चिखली में एक व्यक्ति की घर में घुस कर हत्या हो गई। रायपुर में कमिश्नरी सिस्टम पूरी तरह फेल हो गया है। प्रदेश में हर दिन 6 हत्या, 8 बलात्कार की घटना हो रही है। सक्ती में एक युवती को उसके घर में घुसकर गोली मार दी गयी। इसके पहले कोरिया के सोनहत में चार व्यक्तियों को जिंदा जला दिया गया। जैजेपुर में दो भाइयों को घर में घुसकर गोली मार दिया गया। पेण्ड्रा के कोटमी बाजार में सराफ कारोबारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। प्रदेश में कोई जिला नहीं जहां पर रोज हत्या, लूट, बलात्कार, चाकूबाजी की घटना नहीं हो रही है। यह घटनाएं डरावनी है, सरकार कब मानेगी की कानून व्यवस्था की स्थिति खराब हो गयी है।

पन्नालाल की जमानत याचिका खारिज

रायपुर, 25 अगस्त। फेसबुक पर हिंदू धर्म और भगवान शिव को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में आरोपी अरुण पन्नालाल को कोर्ट से राहत नहीं मिली। आरोपी की ओर से लगाई गई जमानत याचिका का भाजपा विधि प्रकोष्ठ की ओर से विरोध किया गया। दोनों पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने आरोपी की जमानत याचिका खारिज कर दी। जमानत आवेदन के विरोध में भाजपा विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक बृजेश नाथ पांडेय, जिला संयोजक नंदकुमार साहू, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष दिनेश देवांगन, मीडिया प्रभारी गुलशन साहू और ऋषभ मिस्त्री ने प्रभावी तरीके से आपत्ति दर्ज कराई।

अधिवक्ताओं ने कोर्ट के सामने सोशल मीडिया पर की गई टिप्पणी और मामले की गंभीरता को लेकर अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि धार्मिक आस्था और आराध्य देवी-देवताओं को लेकर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी का असर सामाजिक सौहार्द पर पड़ सकता है। भाजपा विधि प्रकोष्ठ और अधिवक्ताओं ने कहा कि धर्म, धार्मिक आस्था और आराध्य देवी-देवताओं के संबंध में आपत्तिजनक टिप्पणी को किसी भी स्थिति में सही नहीं ठहराया जा सकता। ऐसे मामलों में कानून के मुताबिक कार्रवाई के लिए जरूरी कानूनी कदम उठाए जाएंगे। इस दौरान जमानत आवेदन के विरोध में कोर्ट में मौजूद रहकर सहयोग और समर्थन देने वाले अधिवक्ता साथियों का भाजपा विधि प्रकोष्ठ ने आभार जताया।

सोशल मीडिया पर सीएम-डिप्टी सीएम पर अभद्र टिप्पणी, एफआईआर दर्ज

रायपुर, 25 अगस्त। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय तथा उपमुख्यमंत्री अरुण साव एवं विजय शर्मा के खिलाफ कथित तौर पर अमर्यादित एवं अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए वीडियो और आपत्तिजनक टिप्पणियां प्रसारित किए जाने का मामला सामने आया है। मामले को गंभीरता से लेते हुए रायपुर के राष्ट्रवादी विचारक वीरेंद्र दुबे ने सिविल लाइन थाने पहुंचकर लिखित शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने पुलिस से मामले की जांच कर दोषियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

शिकायत में वीरेंद्र दुबे ने बताया कि इंस्टाग्राम पर सागर निर्मलकर नामक आईडी से एक कथित आपत्तिजनक वीडियो पोस्ट किया गया है। उक्त वीडियो पर @quail.3131469 नामक आईडी से कथित रूप से अश्लील एवं आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करते हुए टिप्पणी भी की गई है। शिकायतकर्ता का कहना है कि सोशल मीडिया पर संवैधानिक पदों पर बैठे जनप्रतिनिधियों के खिलाफ इस प्रकार की भाषा का प्रयोग सामाजिक एवं राजनीतिक माहौल को प्रभावित कर सकता है।

वीरेंद्र दुबे ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है और सरकार तथा जनप्रतिनिधियों की आलोचना करने का अधिकार सभी को है, लेकिन आलोचना और अमर्यादित भाषा के बीच अंतर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक मंच पर गाली-गलौज अथवा आपत्तिजनक भाषा का प्रयोग किए जाने पर कानून के दायरे में जांच और आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए।

गौठानों में भाजपा सरकार ने खोल दी शराब दुकानें : विकास

रायपुर, 25 अगस्त। पूर्व संसदीय सचिव एवं छाया सांसद विकास उपाध्याय ने शराब नीति पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए कहा कि गौ माता पर हो रहे अत्याचार और हत्याएँ को लेकर बयान दिया है कि छत्तीसगढ़ की राजधानी सहित अन्य शहरों में गौ माता का जिस प्रकार गौठानों में मौत हो रही है उससे बीजेपी का पाखण्डी चेहरा उजागर हो गया है। गौ माता को जो लोग चारा नहीं दे पा रहे हैं, सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं वे शासन कैसे चला रहे हैं, समझ से परे है। जिस प्रकार फुण्डहर गौठान में 8 गौवंश की मौत हुई, यह भारतीय जनता पार्टी के शासन में गौठान संचालकों एवं खुद सत्ताधारियों की गैर जिम्मेदारी व पाखण्डी चेहरा स्पष्ट दिखाई दे रहा है। उपाध्याय ने कहा कि फुण्डहर गौठान में गौवंशों के लिये न तो चारा है न ही कोई उचित व्यवस्था लेकिन फिर भी एग्रीमेंट के तहत् यहाँ 600 से अधिक गौवंशों को भेजा गया। ऐसी स्थिति एक ही गौठान की नहीं है पूरे प्रदेश के गौठानों की हालत इससे भी ज्यादा बत्तर हो चुकी है। भारतीय जनता पार्टी बीफ कंपनी से चंदा लेकर अपना दोहरा चरित्र दिखा दी है, बीजेपी हिन्दु और गौ माता पर केवल गंदी राजनीति करती है। पूर्व की कांग्रेस सरकार के गौठानों में भाजपा सरकार ने शराब की दुकानें खोल दिए हैं, वास्तव में बीजेपी को न हिन्दु की चिंता है और न ये गौमाता के प्राणों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठा सकती हैं।

नाली में फंसी स्कॉर्पियो से 5 क्विंटल गांजा बरामद

रायपुर, 25 अगस्त। राजधानी रायपुर में नशे के खिलाफ कार्रवाई के बीच बड़ी मात्रा में गांजा बरामद होने का मामला सामने आया है। डीडी नगर थाना क्षेत्र में एक सफेद स्कॉर्पियो से करीब 5 क्विंटल गांजा बरामद किए जाने की जानकारी सामने आई है। बताया जा रहा है कि स्कॉर्पियो अचानक नाली में फंस गई, जिसके बाद वाहन चालक हड़बड़ा गया। चालक की संदिग्ध गतिविधियों को देखकर मोहल्लेवासियों को शक हुआ और उन्होंने गाड़ी को पकड़ लिया। इसके बाद मामले की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्कॉर्पियो की तलाशी ली। तलाशी के दौरान वाहन से बड़ी मात्रा में गांजा बरामद होने की बात सामने आई है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और यह पता लगाने में जुटी है कि गांजा कहां से लाया गया था और इसे कहां ले जाया जा रहा था। मामला डीडी नगर थाना क्षेत्र का है। पुलिस द्वारा बरामद गांजे की मात्रा और आरोपियों से जुड़ी अन्य जानकारी की आधिकारिक पुष्टि की जा रही है।

पाटनी टोयोटा कार शोरूम में अनोखी 'भजन जैमिंग'

रायपुर, 25 दिसम्बर। एक अनोखे और अभूतपूर्व आयोजन में, रायपुर के लाभांडी स्थित पाटनी टोयोटा कार शोरूम के अंदर शनिवार शाम 'भजन जैमिंग' का एक भव्य सत्र आयोजित किया गया। मंदिर, ऑडिटोरियम या खुले मैदान जैसी पारंपरिक जगहों से इतर, इस व्यावसायिक शोरूम को भक्ति संगीत और कीर्तन के माहौल में बदल दिया गया। इस इवेंट में 500 से ज़्यादा लोग शामिल हुए। आम तौर पर कार खरीदने वालों और शौकीनों से गुलज़ार रहने वाला शोरूम ज़बरदस्त म्यूज़िकल बीट्स, लाइव बैंड परफॉर्मेंस और जोश भरी आवाज़ों से गूंज उठा। जैसे-जैसे म्यूज़िक बैंड द्वारा भजनों की धुन तेज हुई, उपस्थित युवा, महिलाएं और परिवार अपनी जगह से उठकर झूमने लगे।

सैकड़ों लोगों को हाथ उठाकर कीर्तन करते और भक्ति गीतों की धुन पर नृत्य करते देखा गया, जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर आधुनिक जीवनशैली के स्थानों में सामुदायिक भक्ति संगीत (कीर्तन) को लाना था। कारों की कतारों के बीच 500 से अधिक लोगों को भक्ति में लीन देखना एक अद्भुत अनुभव था।

दिव्यांग बच्चों के बीच मनाया गया रक्षाबंधन

रायपुर। कैट महिला विंग के प्रदेष अध्यक्ष मधु अरोरा, महिला प्रदेष महामंत्री पिंकी अग्रवाल एवं महिला प्रदेष कोषाध्यक्ष प्रेरणा भट्ट ने बताया कि कैट महिला विंग, रायपुर द्वारा रक्षाबंधन के पावन अवसर पर समाज के जरूरतमंद एवं विशेष बच्चों के साथ प्रेम, अपनत्व और खुशियाँ साझा करने के उद्देश्य से विशेष एनजीओ में राखी बांधी गयी।

इस अवसर पर सर्वप्रथम सप्रे स्कूल स्थित स्पीच थेरेपी सेंटर के बच्चों के साथ रक्षाबंधन मनाया। इसके बाद अर्पण दिव्यांग स्कूल में विशेष रूप से श्रवण एवं वाक् बाधित बच्चों को राखी बांधकर खुशियाँ साझा किया।कैट महिला विंग की अध्यक्ष मधु अरोरा ने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के रिश्ते का पर्व नहीं, बल्कि प्रेम, सुरक्षा, सेवा और सामाजिक एकजुटता का संदेश देने वाला त्योहार है। संस्था का प्रयास है कि जरूरतमंद एवं विशेष बच्चों के साथ यह पर्व मनाकर उन्हें भी अपनत्व और खुशी का अनुभव कराया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में कैट महिला विंग के पदाधिकारी मुख्य रूप से उपस्थित रहेः- मधु अरोरा, पिंकी अग्रवाल, प्रेर्णा भट्ट, एवं ऋचा ठाकुर और सभी सदस्यों से इन सेवा गतिविधियों में बढ़-चढ़कर शामिल होने और बच्चों के साथ रक्षाबंधन की खुशियाँ साझा करने का आग्रह किया।

ब्राह्मण समाज ने 7 लाख रुपये की छात्रवृत्ति वितरित की

रायपुर, 25 अगस्त। छत्तीसगढ़ी युवा विकास संगठन के तत्वावधान में छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज विप्र सांस्कृतिक भवन प्रबंध समिति द्वारा आयोजित मेधावी छात्र सम्मान एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह मुख्य अतिथि अनुज शर्मा (विधायक धरसीवा) एवं स्वामी इंदुभवानंद महाराज (प्रमुख शंकराचार्य आश्रम बोरियाकला रायपुर) के गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अनुज शर्मा ने कहा कि प्रत्येक ब्राह्मण मेधावी होता है। प्रतिभा को पहचान कर उसे तराशने की आवश्यकता होती है। विगत लगभग 40 वर्षों से ज्ञानेश शर्मा के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ी ब्राह्मण समाज के सामाजिक कार्य एवं समाज के लिए भवन आदि का निर्माण बचपन से देखते आ रहे हैं। इस अवसर पर अनुज शर्मा ने छात्रवृत्ति के लिए एक लाख पचास हजार दान राशि की घोषणा करने के साथ ब्राह्मण समाज के जो बच्चे 12वीं व 10वीं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करेंगे, उन्हें 5000, 3000 और ?2000 प्रत्येक वर्ष देने की घोषणा किया। इसके पूर्व स्वामी इंदुभवानंद महाराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि दान देना बहुत बड़ा यज्ञ है। कहा गया है, कि 100 हाथ से इकट्ठा करें और हजार हाथ से दान देना चाहिए। दूसरों की कल्याण की भावना मनुष्य होने की निशानी है।

इस अवसर पर 10वीं और 12वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 17 मेधावी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संध्या शुक्ला ने 12वीं में 97% लाने वाली कु.शौया शर्मा को 5000 की राशि उसके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रदान किया। इसके उपरांत ब्राह्मण समाज के 70 विद्यार्थियों को लगभग 7 लाख रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान किया गया। समारोह का सफल संचालन विप्र कॉलेज के प्राचार्य डॉ.मेघेश तिवारी ने किया।

रायपुर, 25 अगस्त। विधायक सुनील सोनी ने आज जे.आर.दानी शा.उ.मा.वि. कालीबाड़ी में कक्षा 10वीं और 12वीं में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 75 विद्यार्थियों को उत्कृष्टता प्रमाण पत्र तथा 5000-5000 रुपए का चेक प्रदान किया।

अविनाश वन में शुरू हुआ 'क्लब वन'

रायपुर, 25 अगस्त। छत्तीसगढ़ के प्रतिष्ठित एवं अग्रणी रियल एस्टेट समूह अविनाश ग्रुप ने अपने फ्लैगशिप लक्ज़री हाई-राइज डेवलपमेंट 'अविनाश वन' में एक्सक्लूसिव एवं अत्याधुनिक 'क्लब वन' का भव्य शुभारंभ किया। ' लिव, वर्क, प्ले और शॉप' की आधुनिक जीवनशैली की सोच पर विकसित इस प्रोजेक्ट में 'क्लब वन' की शुरुआत के साथ यहां रहने वालों के लिए वेलनेस, मनोरंजन और सामाजिक मेल-जोल का एक नया अध्याय जुड़ गया है। इस भव्य उद्घाटन समारोह में अविनाश ग्रुप का शीर्ष नेतृत्व, पूरी टीम, प्रोजेक्ट के बायर्स और शहर के कई जाने माने नागरिक सपरिवार सम्मिलित हुए।

कौशल किशोर मिश्र प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी की ओर से तरुण छत्तीसगढ़, तरुण छत्तीसगढ़ प्रेस टॉवर, प्रेस काम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं प्रकाशित प्रधान संपादक- कौशल किशोर मिश्र, पंजी. क्रं. 45088/85 डाक पं.छ.ग./रायपुर संभाग/33/2024-26